[Sa]nskrit Grammar for Behar, Bengal and C. P.

संस्कृत व्याकरण

की

उपक्रमणिका

OR

ELEMENTARY SANSKRIT GRAMMAR

BY

Pt. ISHWARA CHANDRA VIDYASAGAR.

EDITED BY

UDIT NARAYAN DAS, B. A., B. L.,

KAVYATIRTHA.

NAND KISHORE & BROS.,

BENARES.

संस्कृत व्याकरण

उपक्रमणिका

OR

ELEMENTARY SANSKRIT GRAMMAR

BY

Pt. ISHWARA CHANDRA VIDYASAGAR.

EDITED BY

UDIT NARAYAN DAS, B. A., B. L.,
KAVYATIRTHA.

Hindi Edition.

NAND KISHORE & BROS.,
BENARES.

 1931. [*Price -/10/-*

मुद्रक—द० ल० निघोजकर,
श्रीलक्ष्मीनारायण प्रेस,
बनारस सिटी ।

PREFACE.

Pandit Ishwara Chandra Vidyasagara's Elementary Sanskrit Grammar 'Upakramanika' has proved itself most useful for the young learners of Sanskrit Grammar in High Schools. There have been published various editions of it, but an edition through the medium of Hindi Grammar, teaching the subject by comparision and contrast with exercises through the same, was felt very necessary. The present edition is, therefore, published to remove that very want, for, to put exercises for translation from English in to Sanskrit and from Sanskrit into English before the students of classes VII & VIII of English Schools means a triple labour. Certain notes and appendices have been added to the original for a clear and thorough grasp of the subject, so that the edition might be a self-sufficient hand-book for a candidate preparing for the Matriculation or the High School Examination. English equivalents have also been given along with those in Hindi for the convenience of those students whose vernacular is not Hindi. It is hoped that this edition will be found more useful to those for whom it is intended than the existing books on grammar.

The Editor—

विषयसूची ।

॥ श्री ॥

संस्कृत व्याकरण की उपक्रमणिका

वर्णनिर्णय (Alphabet)

१—अ, इ, उ, क, ख, ग इत्यादि प्रत्येक को **वर्ण** (letter) कहते हैं। वर्ण दो प्रकार के होते हैं; **स्वर** और **व्यञ्जन**।

स्वर वर्ण (Vowels)

२—अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ, लृ, ए, ऐ, ओ, औ, ये तेरह वर्ण**स्वर** (Vowel) कहलाते हैं। स्वर दो प्रकार के होते हैं; **ह्रस्व** (short) और **दीर्घ** (long)।* अ, इ, उ, ऋ, लृ ये पाँच ह्रस्व स्वर हैं। आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ऐ, ओ, औ, ये आठ स्वर दीर्घ हैं। लृकार दीर्घ नहीं होता।

---

* प्लुत नामक स्वर का एक और भी भेद है। इसके उच्चारण में दीर्घ स्वर से भी एक मात्रा अधिक बोली जाती है। दूर से सम्बोधन करने में इसका प्रयोग होता है, जैसे—भो ३ (ओ ! ओ !! ओ !!!) देवदत्त !

व्यञ्जन वर्ण (Consonants)

३—क, ख, ग, घ, ङ, च, छ, ज, झ, ञ, ट, ठ, ड, ढ, ण, त, थ, द, ध, न, प, फ, ब, भ, म, य, र, ल, व, श, ष, स, ह, अनुस्वार और विसर्ग अर्थात् अं और अः ये पैंतीस व्यञ्जन वर्ण कहलाते हैं। *इनमें से 'क' से लेकर 'म' तक पचीस वर्ण स्पर्शवर्ण कहलाते हैं †।

स्पर्श वर्ण पाँच वर्गों में विभक्त हैं। क, ख, ग, घ, ङ, ये पाँच कवर्ग हैं। च, छ, ज, झ, ञ, ये पाँच चवर्ग हैं। ट ठ, ड, ढ, ण, ये पाँच टवर्ग हैं। त, थ, द, ध, न, ये पाँच तवर्ग हैं। प, फ, ब,‡ भ, म, ये पाँच पवर्ग हैं। य, र, ल, व, ये चार वर्ण अन्तःस्थ वर्ण कहलाते हैं ×। श, ष, स, ह, ये चार ऊष्म वर्ण

---

* वास्तव में व्यञ्जनों का रूप क्, ख्, ग्, घ् इत्यादि है पर उच्चारण में सुगमता के लिये ये 'अ'कार सहित लिखे जाते हैं यथा—क, ख, ग, घ इत्यादि क्योंकि व्यञ्जनों का उच्चारण बिना स्वर की सहायता से नहीं होता। इसलिये, क = क् + अ, ख = ख् + अ, ग = ग् + अ, घ = घ् + अ इत्यादि।

† ये वर्ण स्पर्श इसलिये कहलाते हैं क्योंकि इनका उच्चारण जीभ के कण्ठ, तालु आदि स्थानों को स्पर्श करने से होता है।

‡ वर्गीय 'ब' और अन्तस्थ 'व' में बहुधा भ्रम हुआ करता है। सन्धि से उत्पन्न 'व्' यथा 'उ' का 'व्' और 'ओ' का 'अव्' और 'औ' का 'आव्' अन्तःस्थ 'व्' है। धातु जैसे 'बध्' 'बन्ध्' 'बाध्' आदि का 'ब्' वर्गीय 'ब्' है। व्याकरण तथा कोष के अध्ययन से यह भ्रम दूर हो जाता है।

× स्पर्श वर्ण और ऊष्म वर्ण के बीच में रहने के कारण ये अन्तःस्थ कहलाते हैं।

कहे जाते हैं।* अनुस्वार (ं) और विसर्ग (ः) को अयोग-वाह कहते हैं†।

वर्णों का उच्चारणस्थान।

४—अ, आ, क, ख, ग, घ, ङ, ह इनका उच्चारण स्थान कण्ठ है; इसलिये ये कण्ठ्यवर्ण (Gutturals) कहलाते हैं।

५—इ, ई, च, छ, ज, झ, ञ, य, श इनका उच्चारण स्थान तालु है; इसलिये ये तालव्य वर्ण (Palatals) कहलाते हैं।

६—ऋ, ॠ, ट, ठ, ड, ढ, ण, र, ष इनका उच्चारण स्थान मूर्द्धा है; इसलिये ये मूर्द्धन्य वर्ण (Cerebrals) कहलाते हैं।

७—ऌ, त, थ, द, ध, न, ल, स इनका उच्चारण स्थान दन्त है; इसलिये ये दन्त्य वर्ण (Dentals) कहलाते हैं।

८—उ, ऊ, प, फ, ब, भ, म इनका उच्चारण स्थान ओष्ठ है; इसलिये ये ओष्ठ्य वर्ण (Labials) कहलाते हैं।

---

* इनके उच्चारण में ऊष्मा (वायु) अधिक बाहर निकलता है इसलिये ये ऊष्म कहलाते हैं।

† अनुस्वार और विसर्ग ये स्वतन्त्र वर्ण नहीं हैं। न् और म् के स्थान में अनुस्वार तथा स् और र् के स्थान में विसर्ग होता है, इसलिये संस्कृत की वर्णमाला में इनकी गिनती पृथक् नहीं की गई है। व्याकरण में यद्यपि इनका उल्लेख (योग) नहीं है तथापि प्रयोग में इनका कार्य (वाह) होता है इसलिये ये अयोगवाह कहलाते हैं।

९—ए, ऐ के उच्चारण स्थान कण्ठ और तालु हैं; इसलिये ये कण्ठतालव्य (Palato-gutturals) कहलाते हैं।

१०—ओ, औ के उच्चारण स्थान कण्ठ और ओष्ठ हैं; इसलिये ये कण्ठौष्ठ्य (Labio-gutturals) कहलाते हैं।

११—व (अन्तःस्थ) के उच्चारण स्थान दन्त और ओष्ठ हैं; इसलिये यह दन्तोष्ठ्य (Dento-Labial) कहलाता है।

१२—(ं) अनुस्वार का उच्चारण स्थान नासिका है; इसलिये इसे अनुनासिक (Nasal) कहते हैं।

१३—ञ, म, ङ, ण, न का उच्चारण स्थान अपने वर्ग के उच्चारण स्थान के अतिरिक्त नासिका भी है; इसलिये इन्हें अनुनासिक (Nasals) भी कहते हैं।

१४—(:) विसर्ग जब जिस स्वर वर्ण के अन्त में रहता है, तब उसका उच्चारण स्थान उसी स्वर वर्ण का उच्चारण स्थान होता है।

अभ्यास (Exercise 1)

(१) वर्ण कै प्रकार के होते हैं ? प्रत्येक का नाम बताओ।

(२) स्पर्श वर्ण, अन्तःस्थ वर्ण और ऊष्म वर्ण किन किन अक्षरों को कहते हैं ?

(३) ञ, म, ङ, ण और न के उच्चारण स्थान कै हैं ?

(४) ऋ, व, ए, ओ, श, ष और ब के उच्चारण स्थान बताओ।

(५) स्पर्श वर्ण 'स्पर्श' क्यों कहलाते हैं ? ये कै भागों में विभक्त हैं ?

सन्धिप्रकरण (Rules of Euphony)

१५—दो वर्ण परस्पर निकट होने से आपस में मिल जाते हैं और इस मेल को सन्धि कहते हैं। सन्धि तीन प्रकार की होती है। (१) स्वरसन्धि (२) व्यञ्जनसन्धि (३) विसर्ग-सन्धि। स्वरवर्ण की स्वरवर्ण के साथ जो सन्धि होती है उसे **स्वरसन्धि** कहते हैं। व्यञ्जनवर्ण के साथ स्वरवर्ण या व्यञ्जन-वर्ण की जो सन्धि होती है उसे **व्यञ्जनसन्धि** कहते हैं। विसर्ग के साथ स्वरवर्ण या व्यञ्जनवर्ण की जो सन्धि होती है उसे **विसर्गसन्धि** कहते हैं।*

स्वरसन्धि (Combination of Vowels.)

१६—यदि अकार के बाद अकार वा आकार हो तो वे दोनों मिल कर आकार हो जाते हैं और आकार पूर्व वर्ण के साथ मिल जाता है। यथा—शश + अङ्कः=शशाङ्कः; उत्तम + अङ्गम् = उत्तमाङ्गम्; अद्य + अवधि=अद्यावधि; रत्न + आकरः=

---

* एक पद में यथा, भूभृत् + भ्याम् = भूभृद्भ्याम्; गै + अ + ति = गायति; धातु और उपसर्ग में, यथा, नि + अवधीत् = न्यवधीत्; समास में, यथा, कृष्ण + अर्जुनौ=कृष्णार्जुनौ, सन्धि अनिवार्य है। वाक्य में सन्धि करना या नहीं करना वक्ता की इच्छा पर निर्भर करता है; जैसे—रामः गच्छति या रामो गच्छति।

संहितैकपदे नित्या नित्या धातूपसर्गयोः।
नित्या समासे वाक्ये तु सा विवक्षामपेक्षते ॥

रत्नाकरः; देव + आलयः = देवालयः; कुश + आसनम् = कुशासनम् ।

अ + अ = आ, जैसे—शश + अङ्कः = शश् + अ + अङ्कः = शशाङ्कः ।

अ + आ=आ, जैसे—रत्न + आकरः = रत्न + अ + आकरः= रत्नाकरः ।

अपवाद (Exception)

पर निम्नलिखित शब्दों में अ और अ मिलकर आ नहीं होता; जैसे,—शक + अन्धुः=शकन्धुः; कर्क + अन्धुः=कर्कन्धुः; मार्त्त + अण्डः=मार्त्तण्डः; कुल + अटा=कुलटा; सीम + अन्तम्= सीमन्तम्; अन्य + अन्यम् = अन्योन्यम्; सार + अङ्गः=सारङ्गः ।

१७—यदि आकार के बाद अकार वा आकार रहे तो दोनों मिलकर आकार हो जाते हैं और आकार पूर्ववर्ण के साथ मिल जाता है। यथा—दया + अर्णवः = दयार्णवः; महा + अर्घः = महार्घः; लता + अन्तः = लतान्तः; महा + आशयः = महाशयः; गदा + आघातः = गदाघातः; विद्या + आलयः = विद्यालयः ।

आ + अ = आ, जैसे—दया + अर्णवः = दय् + आ + अर्णवः = दयार्णवः ।

आ + आ = आ, जैसे-हता + आशा = हत् + आ + आशा = हताशा ।

१८—यदि ह्रस्व इकार के बाद इ वा ई रहे तो वे दोनों मिलकर ई कार हो जाते हैं और ईकार पूर्ववर्ण के साथ मिल जाता है। यथा—गिरि + इन्द्रः = गिरीन्द्रः; अति + इव = अतीव; प्रति + इतिः = प्रतीतिः; कवि + ईश्वरः + कवीश्वरः; क्षिति + ईशः = क्षितीशः; प्रति + ईक्षा = प्रतीक्षा।

इ + इ = ई; जैसे—फणि + इन्द्रः = फण् + इ + इन्द्रः = फणीन्द्रः।

इ + ई = ई; जैसे—कवि + ईश्वरः = कव् + इ + ईश्वरः = कवीश्वरः।

१६—यदि दीर्घ ईकार के बाद इ वा ई रहे तो दोनों मिलकर दीर्घ ईकार हो जाते हैं और ईकार पूर्ववर्ण के साथ मिल जाता है। यथा – मही + इन्द्रः = महीन्द्रः; महती + इच्छा = महतीच्छा; लक्ष्मी + ईशः = लक्ष्मीशः; पृथ्वी + ईश्वरः = पृथ्वीश्वरः।

ई + इ = ई; जैसे—मही + इन्द्रः = मह् + ई + इन्द्रः = महीन्द्रः।

ई + ई = ई; जैसे—मही + ईश्वरः = मह + ई + ईश्वरः = महीश्वरः।

२०—यदि ह्रस्व उकार के बाद उ अथवा ऊ रहे तो दोनों मिलकर दीर्घ ऊकार हो जाते हैं और ऊकार पूर्व वर्ण के साथ मिल जाता है। यथा—विधु + उदयः = विधूदयः; मधु + उत्सवः = मधूत्सवः; स्वादु + उदकम् = स्वादूदकम्; साधु + उक्तम् = साधूक्तम्; लघु + ऊर्म्मिः = लघूर्म्मिः; गुरु + ऊहः = गुरूहः।

उ + उ = ऊ; जैसे—विधु + उदयः = विध् + उ + उदयः = विधूदयः।

उ + ऊ = ऊ; जैसे—लघु + ऊर्म्मिः = लघ् + उ + ऊर्म्मिः = लघूर्म्मिः।

२१—यदि दीर्घ ऊकार के बाद उ अथवा ऊ रहे तो दोनों मिलकर ऊकार हो जाते हैं और ऊकार पूर्व वर्ण के साथ मिल जाता है। यथा—वधू + उत्सवः = वधूत्सवः; स्वयम्भू + उदयः = स्वयम्भूदयः; भू + ऊर्ध्वम् = भूर्ध्वम्; वधू + ऊहनम् = वधूहनम्।

ऊ + उ = ऊ; जैसे- वधू + उत्सवः = वध् + ऊ + उत्सवः = वधूत्सवः।

ऊ + ऊ = ऊ; जैसे—भू + ऊर्ध्वम् = भ् + ऊ + ऊर्ध्वम् = भूर्ध्वम्।

२२—यदि ऋकार के बाद ऋकार रहे तो दोनों मिलकर दीर्घ ॠकार हो जाते हैं और ॠकार पूर्व वर्ण के साथ मिल जाता है। यथा—पितृ + ऋणम् = पितॄणम्; भ्रातृ + ऋद्धिः = भ्रातॄद्धिः।*

ऋ + ऋ = ॠ; जैसे-पितृ + ऋणम् = पित् = ऋ + ऋणम् = पितॄणम्।

२३—यदि अकार के बाद इकार अथवा ईकार रहे तो दोनों

---

* नियम १६ से २२ तक की सन्धि को दीर्घ सन्धि कहते हैं—कौमुदी में एक सूत्र "अकः सवर्णे दीर्घः" में ये सब नियम अन्तर्गत हैं।

मिलकर एकार हो जाते हैं और एकार पूर्व वर्ण के साथ मिल जाता है। यथा—देव + इन्द्रः = देवेन्द्रः; पूर्ण + इन्दुः = पूर्णेन्दुः; गण + ईशः = गणेशः; अव + ईक्षणम् = अवेक्षणम्।*

अ + इ = ए; जैसे—देव + इन्द्रः = देव् + अ + इन्द्रः = देवेन्द्रः।

अ + ई = ए; जैसे–गण + ईशः = गण् + अ + ईशः = गणेशः।

अपवाद (Exception)

किन्तु, स्वर + ईरम् = स्वैरम्; स्व + ईरिणी = स्वैरिणी; हल + ईषा = हलीषा; लाङ्गल + ईषा = लाङ्गलीषा; मनस् + ईषा = मनीषा (Intellect)।

२४—यदि आकार के परे इ अथवा ई रहे तो दोनों मिलकर एकार हो जाते हैं और एकार पूर्व वर्ण के साथ मिल जाता है। यथा—महा + इन्द्रः = महेन्द्रः; लता + इव = लतेव; रमा + ईशः = रमेशः; महा + ईश्वर = महेश्वरः।

आ + इ = ए; जैसे—महा + इन्द्रः = मह् + आ + इन्द्रः = महेन्द्रः।

आ + ई = ए; जैसे—रमा + ईशः = रम् + आ + ईशः = रमेशः।

२५—यदि अकार के परे उ अथवा ऊ रहे तो दोनों मिलकर ओकार हो जाते हैं और ओकार पूर्व वर्ण के साथ मिल जाता

---

* इसको गुण सन्धि कहते हैं—'आद्गुणः'। (नियम २३-२८)

है। यथा—नील + उत्पलम् = नीलोत्पलम्; सूर्य + उदयः = सूर्योदयः; एक + ऊनविंशतिः = एकोनविंशतिः; गृह + ऊर्ध्वम् = गृहोर्ध्वम् ।

अ + उ = ओ; जैसे—नर + उत्तमः = नर् + अ + उत्तमः = नरोत्तमः ।

अ + ऊ = ओ; जैसे - रस + ऊनः = रस् + अ + ऊनः = रसोनः ।

अपवाद (Exception)

परन्तु--अक्ष + ऊहिनी = अक्षौहिणी; प्र + ऊढः = प्रौढः; प्र + ऊढिः = प्रौढिः ।

२६—यदि आकार के परे उ अथवा ऊ रहे तो दोनों मिलकर ओकार हो जाते हैं और ओकार पूर्व वर्ण के साथ मिल जाता है। यथा—महा + उदयः = महोदयः; गङ्गा + उदकम् = गङ्गोदकम्; गङ्गा + ऊर्मिः = गङ्गोर्मिः; महा + ऊर्मिः = महोर्मिः ।

आ + उ = ओ; जैसे-महा + उदयः = मह् + आ + उदयः = महोदयः ।

आ + ऊ = ओ; जैसे-गङ्गा + ऊर्मिः = गङ्ग् + आ + ऊर्मिः = गङ्गोर्मिः ।

२७—यदि अकार के परे ऋकार रहे तो दोनों मिलकर 'अर्' हो जाते हैं और 'अर्' का 'अ'कार पूर्ववर्ण के साथ मिल जाता है और 'र्'कार परवर्ण के ऊपर चला जाता है। यथा, देव + ऋषिः = देवर्षिः; हिम + ऋतुः = हिमर्तुः ।

अ + ऋ = अर्; जैसे--हिम + ऋतुः = हिम् + अ + ऋतुः = हिमर्त्तुः ।

अपवाद (Exception)

(क) परन्तु -तृतीया तत्पुरुष समास में अ वा आ के परे ऋत शब्द हो तो अ + ऋ, या आ + ऋ मिलकर 'अर्' न होकर 'आर्' हो जाते हैं । यथा--सुख + ऋतः=सुखार्त्तः; भय + ऋतः = भयार्त्तः; तृष्णा + ऋतः = तृष्णार्त्तः । परन्तु तत्पुरुष समास न रहने से 'अर्' ही होता है; जैसे--परम + ऋतः = परमर्त्तः ।

(ख) प्र, वत्सर, कम्बल, वसन, ऋण और दश के परे ऋण शब्द हो तो अ और ऋ मिलकर 'आर्' होता है । यथा--प्र + ऋणम् = प्रार्णम्, कम्बल + ऋणम् = कम्बलार्णम्, ऋण + ऋणम् = ऋणार्णम् इत्यादि ।

(ग) उपसर्ग के अ वा आ के परे धातु का ऋकार रहे तो दोनों मिलकर 'आर्' होता है । यथा--प्र + ऋच्छति=प्रार्च्छति ।

२८--यदि आकार के परे ऋ रहे तो दोनों मिलकर 'अर्' हो जाता है और 'अर्' का अकार पूर्व वर्ण में मिल जाता है और 'र्'कार पर वर्ण के ऊपर चला जाता है। यथा--महा + ऋषिः = महर्षिः; देवता + ऋषभः = देवतर्षभः ।

आ + ऋ = अर्; जैसे--महा + ऋषिः=मह + आ + ऋषिः = महर्षिः ।

२९--यदि अकार के परे ए अथवा ऐ रहे तो दोनों मिलकर 'ऐ' हो जाते हैं और 'ऐ'कार पूर्ववर्ण के साथ मिल जाता है ।

यथा--अद्य + एव = अद्यैव; एक + एकम् = एकैकम्; मत + ऐक्यम् = मतैक्यम्; तव + ऐश्वर्यम् = तवैश्वर्यम् ।

अ + ए = ऐ; जैसे--तव + एव = तव् + अ + एव = तव् + ऐ + व = तवैव ।

अ + ऐ = ऐ; जैसे--मत + ऐक्यम् = मत् + अ + ऐक्यम् = मत् + ऐक्यम् = मतैक्यम् ।

३०--यदि आकार के बाद ए अथवा ऐ रहे तो दोनों मिलकर 'ऐ' हो जाते हैं और 'ऐ'कार पूर्ववर्ण के साथ मिल जाता है। यथा--सदा + एव = सदैव; तथा + एतत् = तथैतत्; महा + ऐरावतः = महैरावतः; महा + ऐश्वर्यम् = महैश्वर्यम् ।

आ + ए = ऐ; जैसे--लता + एषा = लत् + आ + एषा = लत् + ऐषा = लतैषा ।

आ + ऐ = ऐ; जैसे--महा + ऐश्वर्यम् = मह् + आ + ऐश्वर्यम् = मह् + ऐश्वर्यम् = महैश्वर्यम् ।

३१--यदि अकार के परे ओ अथवा औ रहे तो दोनों मिल कर 'औ' हो जाते हैं और 'औ' कार पूर्ववर्ण के साथ मिल जाता है ।

यथा--जल + ओघः = जलौघः; ग्राम + ओकः = ग्रामौकः; चित्त + औदार्यम् = चित्तौदार्यम्; गत + औत्सुक्यम् = गतौत्सुक्यम् ।

अ + ओ = औ; जैसे,--वन + ओषधिः = वन् + अ + ओषधिः = वनौषधिः ।

अ + औ = औ;   जैसे,--गत + औत्सुक्यम् = गत् + अ + औत्सुक्यम् = गतौत्सुक्यम् ।

अपवाद (Exception)

(क) समास में अ वा आ के बाद ओष्ठ और ओतू शब्दों का ओ हो तो दोनों मिल कर ओ अथवा औ दोनों हो जाते हैं। जैसे—अधर + ओष्ठः = अधरोष्ठः अथवा अधरौष्ठः, बिम्ब + ओष्ठः = बिम्बोष्ठः अथवा बिम्बौष्ठः; स्थूल + ओतूः + स्थूलोतूः अथवा स्थूलौतूः। परन्तु समास न रहने से 'औ' कार ही होता है जैसे,--तव + औष्ठः = तवौष्ठः ।

(ख) यदि धातु का ए वा ओ परे रहे तो उपसर्ग के अ और आ का लोप हो जाता है। यथा,—प्र + एजते = प्रेजते; परा + एषते = परेषते; उप + ओषति = उपोषति; अव + ओहति = अवोहति। परन्तु एध् और इण् धातुओं के ए परे रहने से उपसर्ग के अ और आ का लोप नहीं होता। यथा;--उप + एधते = उपैधते; आ + एति = ऐति; परा + एधते = परैधते ।

३२—यदि आकार के बाद ओ अथवा औ रहे तो दोनों मिल कर 'औ' हो जाते हैं और 'औ' कार पूर्व वर्ण के साथ मिल जाता है। यथा—महा + ओषधिः = महौषधिः; सदा + ओदनम् = सदौदनम्; महा + औदार्यम् = महौदार्यम्; सदा + औत्सुक्यम् = सदौत्सुक्यम् ।

आ + ओ = औ; जैसे,—महा + ओषधिः = मह् + आ + ओषधिः = महौषधिः ।

आ + औ = औ; जैसे,--महा + औषधम् = मह् + आ + औषधम् = महौषधम् ।*

३३--यदि ह्रस्व इकार के परे इ और ई को छोड़ कर कोई दूसरा स्वर वर्ण हो तो 'इ' के स्थान में 'य्' हो जाता है और 'य्' पूर्ववर्ण के साथ मिल जाता है और 'य्' कार के साथ आगे का स्वर मिल जाता है। यथा—यदि + अपि = यद्यपि; अति + आचारः=अत्याचारः, अभि + उदयः=अभ्युदयः; प्रति + ऊहः = प्रत्यूहः; मुनि + ऋषभः = मुन्यृषभः; प्रति + एकम् = प्रत्येकम्; अति + ऐश्वर्यम् = अत्यैश्वर्यम्; पचति + ओदनम् = पचत्योदनम्; अति + औदार्यम् = अत्यौदार्यम् ।

इ + अ = य् + अ = य; जैसे,--सति + अपि = सत् + इ + अपि = सत् + य + पि = सत्यपि। इ + आ = य् + आ=या; जैसे,-निधि + आकरः = निध् + इ + आकरः = निध् + या + करः = निध्याकरः। उसी तरह, इ + उ = यु, इ + ऊ = यू, इ + ऋ + यृ, इ + ए = ये, इ + ऐ = यै, इ + ओ = यो, इ + औ = यौ ।

३४—यदि दीर्घ ईकार के परे इ और ई को छोड़ कर कोई दूसरा स्वर वर्ण रहे तो 'ई' के स्थान में 'य्' हो जाता है और

---

* नियम २९ से ३२ तक की सन्धि वृद्धिसन्धि कहलाती है—'वृद्धिरेचि'।

'य्' पूर्व वर्ण के साथ मिल जाता है और 'य्' कार के साथ आगे का स्वर मिल जाता है। यथा—नदी + अम्बु = नद्यम्बु; देवी + आगता = देव्यागता; सखी + उक्तम् = सख्युक्तम्; शशो + ऊर्ध्वगः = शश्यूर्ध्वगः, बली + ऋषभः = बल्यृषभः; गोपी + एषा = गोप्येषा; बली + ऐरावतः = बल्यैरावतः; सरस्वती + ओघः = सरस्वत्योघः; वाणी + औचित्यम् = वाण्यौचित्यम्।

ई + अ = य् + अ = य; जैसे,—गोपी + अत्र = गोप् + ई + अत्र = गोप् + यत्र = गोप्यत्र। ई + आ = य् + आ = या; जैसे,—नदी + आकुला = नद् + ई + आकुला = नद् + याकुला = नद्याकुला। उसी तरह, ई + उ = यु, ई + ऊ = यू, ई + ऋ = यृ, ई + ए = ये, ई + ऐ = यै, ई + ओ = यो, ई + औ = यौ।

३५—यदि ह्रस्व उकार के परे उ और ऊ से भिन्न कोई स्वर वर्ण रहे तो 'उ' के स्थान में 'व्' हो जाता है और 'व्' पूर्व वर्ण के साथ मिल जाता है और आगे का स्वर 'व्' कार के साथ मिल जाता है। यथा—अनु + अयः = अन्वयः; सु + आगतम् स्वागतम्; मधु + इदम् = मध्विदम्। साधु + ईहितम् = साध्वीहितम्; मधु + ऋते = मध्वृते; अनु + एषणम् = अन्वेषणम्; अनु + ऐक्षिष्ट = अन्वैक्षिष्ट; पचतु + ओदनम् = पचत्वोदनम्; ददातु + औषधम् = ददात्वौषधम्।

उ + अ = व् + अ = व; जैसे—मधु + अस्ति = मध् + उ + अस्ति = मध् + व + स्ति = मध्वस्ति। उ + आ = व् + आ = वा, जैसे—अनु + आदेशः = अन् + उ + आदेशः = अन् + वा

+ देशः = अन्वादेशः। उसी तरह उ + इ = वि, उ + ई = वी, उ + ऋ = वृ, उ + ए = वे, उ + ऐ = वै, उ + ओ = वो, उ + औ = वौ।

३६--यदि दीर्घ के ऊकार से परे उ, ऊ से भिन्न कोई स्वर वर्ण हो तो दीर्घ ऊकार के स्थान में 'व्' हो जाता है और 'व्' पूर्ववर्ण के साथ मिल जाता है और आगे का स्वर 'व्' कार के साथ लग जाता है। यथा -सरयू + अम्बु = सरय्वम्बु; वधू + आदि = वध्वादिः; तनू + इन्द्रियम् = तन्विन्द्रियम्; तनू + ईश्वरः = तन्वीश्वर; सरयू + एधितम् = सरय्वेधितम्; वधू + ऐश्वर्यम् = वध्वैश्वर्यम्; सरयू + ओघः = सरय्वोघः; वधू + औदार्यम् = वध्वौदार्यम्।

ऊ + अ = व् + अ = व, जैसे-सरयू + अम्बु = सरय् + ऊ + अम्बु = सरय् + व + म्बु = सरय्वम्बु। ऊ + आ = व् + आ = वा, जैसे--वधू + आदिः = वध् + ऊ + आदिः = वध् + वा + दिः = वध्वादिः। उसी तरह, ऊ + इ = वि, ऊ + ई = वी, ऊ + ऋ = वृ, ऊ + ए = वे, ऊ + ऐ = वै, ऊ + ओ = वो, ऊ + औ = वौ।

३७--यदि 'ऋ'कार के परे 'ऋ'कार से भिन्न कोई स्वर वर्ण रहे तो ऋकार के स्थान में 'र्' कार हो जाता है और 'र्' पूर्ववर्ण के संग मिल जाता है और आगे का स्वर र्कार के साथ मिल जाता है। यथा--पितृ + अनुमतिः = पित्रनुमतिः; पितृ + आदेशः = पित्रादेशः; पितृ + इच्छा = पित्रिच्छा; पितृ + ईहितम् = पित्रीहितम्; पितृ + उपदेशः = पित्रुपदेशः; पितृ +

ऊहः = पित्रूहः; पितृ + एषणा = पित्रेषणा; पितृ + ऐश्वर्यम् = पित्रैश्वर्यम्; पितृ + ओकः = पित्रोकः; पितृ + औदार्यम् = पित्रौदार्यम्।

ऋ + अ = र् + अ = र, जैसे--भ्रातृ + अनुमतिः = भ्रात् + ऋ + अनुमतिः = भ्रात् + र + नुमतिः = भ्रात्रनुमतिः। ऋ + आ = र् + आ = रा, जैसे--पितृ + आदेशः = पित् + ऋ + आदेशः = पित् + रा + देशः = पित्रादेशः। उसी तरह, ऋ + इ = रि, ऋ + ई = री, ऋ + उ = रु, ऋ + ऊ = रू, ऋ + ए = रे, ऋ + ऐ = रै, ऋ + ओ = रो, ऋ + औ = रौ।

३८--यदि एकार से परे स्वर वर्ण हो तो 'ए' के स्थान में अय् हो जाता है और 'अय्' का अकार पूर्ववर्ण के साथ मिल जाता है और पर का स्वर 'य्' कार के साथ मिल जाता है। जैसे--शे + अनम् = शयनम्; ने + अनम् = नयनम्; जे + अति = जयति; सञ्चे + अः = सञ्चयः; शे + आते = शयाते; अशे + आताम् = अशयाताम्; शे + इतम् = शयितम्; अशे + इष्ट = अशयिष्ट; शे + ईत = शयीत; शे + ईरन् = शयीरन्; शे + ए = शये; शे + ऐ = शयै।

ए + अ = अय् + अ = अय, जैसे--जे + अः = ज् + ए + अः = ज् + अयः = जयः, ए + आ = अय् + आ=अया, जैसे–शे + आते = श् + ए + आते = श् + अयाते = शयाते, उसी तरह, ए + इ = अयि, ए + ई = अयी, ए + उ = अयु, ए + ऊ = अयू,

ए + ऋ = अयृ, ए + ए = अये, ए + ऐ = अयै, ए + ओ = अयो, ए + औ = अयौ ।

३९--यदि 'ऐ' कार के बाद स्वर वर्ण रहे तो 'ऐ' के स्थान में आय् हो जाता है और 'आय्' का आकार पूर्ववर्ण के संग मिल जाता है और 'य्' कार के साथ पर का स्वर मिल जाता है। यथा--विनै + अकः = विनायकः; सञ्जै + अकः = सञ्जायकः; रै + आया = राया; रै + इ = रायि; रै + ए = राये; रै + ओः = रायोः ।

ऐ + अ = आय् + अ = आय, जैसे—नै + अकः = न् + ऐ + अकः = न् + आय + कः = नायकः । ऐ + आ = आय् + आ = आया, जैसे—रै + आ = र् + ऐ + आ=र् + आया = राया, उसी तरह ऐ + इ=आयि, ऐ + ई = आयी, ऐ + ऋ + आयृ; ऐ + उ = आयु, ऐ + ऊ = आयू, ऐ + ए=आये, ऐ + ऐ = आयै, ऐ + ओ = आयो, ऐ + औ=आयौ ।

४०—यदि 'ओ'कार के परे स्वर वर्ण रहे तो ओकार के स्थान में अव् हो जाता है और 'अव्' का अकार पूर्व वर्ण के संग मिल जाता है और पर का स्वर 'व्' के साथ मिल जाता है। यथा —भो + अनम् = भवनम्, पो + अनः = पवनः, श्रो + अनम् = श्रवणम्, गो + आ = गवा, भो + इता = भविता, पो + इत्रम् = पवित्रम्, गो + ए = गवे, गो + ओः = गवोः ।

ओ + अ = अव् + अ = अव, जैसे--पो + अनः=प् + ओ + अनः = प् + अव + नः = पवनः । ओ + आ=अव् + आ=अवा,

जैसे-गो + आ = ग् + ओ + आ = ग् + अव् + आ = गवा; उसी तरह, ओ + इ = अवि, ओ + ई = अवी; ओ + उ = अवु, ओ + ऊ = अवू, ओ + ऋ = अवृ, ओ + ए = अवे, ओ + ऐ = अवै, ओ + ओ = अवो, ओ + औ = अवौ* ।

४१—यदि 'औ'कार के परे स्वरवर्ण रहे तो औकार के स्थान में 'आव्' हो जाता है और 'आव्' का आकार पूर्व वर्ण के साथ मिल जाता है और पर का स्वर 'व्'कार के साथ मिल जाता है । यथा—पौ + अकः = पावकः, नौ + आ = नावा; भौ + इनी = भाविनी; भौ + उकः = भावुकः; नौ + ए = नावे; नौ + ओः = नावोः, नौ + औ = नावौ ।

औ + अ = आव् + अ = आव, जैसे--पौ + अकः = प् + औ + अ + कः = प् + आव + कः = पावकः, औ + आ = आव् + आ = आवा, जैसे--नौ + आ = न् + औ + आ = न् + आव् + आ = न् + आवा = नावा, उसी तरह, औ + इ = आवि, औ + ई = आवी, औ + उ = आवु, औ + ऊ = आवू, औ + ऋ = आवृ, औ + ए = आवे, औ + ऐ = आवै, औ + ओ = आवो, औ + औ = आवौ ।

---

* किन्तु—गो + इन्द्रः = गवेन्द्रः, गो + अक्षः = गवाक्षः; गो + ईशः गवीशः अथवा गवेशः; गो + अग्रम् = गवाग्रम्, गो अग्रम् और गोऽग्रम् । स्वरवर्ण परे न रहने से भी यकारादि प्रत्यय परे होने से 'अव्' हो जाता है, जैसे—गो + यम् = गव्यम्, गो + यूतिः = गव्यूतिः (दो कोश) अन्यथा गोयूतिः (बैलों का एक जोड़ा) ।

४२—पद के अन्त में यदि एकार अथवा ओकार हो और इसके बाद यदि अकार हो तो अकार का लोप हो जाता है और लुप्त आकार के स्थान में अर्ध अकार (ऽ) का चिन्ह रख दिया जाता है । यथा—कवे + अवेहि = कवेऽवेहि, सखे + अर्पय = सखेऽर्पय, प्रभो + अनुग्रहाण = प्रभोऽनुग्रहाण; गुरो + अनुमन्यस्व = गुरोऽनुमन्यस्व ।

N. B.—(क) सुबन्त और तिङन्त विभक्तियुक्त शब्द को पद कहते हैं, इसलिये ऐसे पद के अन्त में एकार और ओकार के नहीं रहने पर अकार का लोप नहीं होता। जैसे—ने + अनम् = नयनम्, भो + अनम् = भवनम् ।

(ख) पद के अन्त में स्थित ए और ओ के परे 'अ'कार से भिन्न कोई स्वरवर्ण रहे तो ए के स्थान में विकल्प से अ और अय् होता है और ओ के स्थान में विकल्प से अ और अव् होता है । यथा—सखे + आगच्छ = सख आगच्छ अथवा सखयागच्छ, प्रभो + आगच्छ = प्रभ आगच्छ अथवा प्रभवागच्छ। परन्तु ऐसी अवस्था में अकार होने से सन्धि नहीं होती ।

(ग) पदान्त में स्थित ऐ और औ के परे स्वरवर्ण रहने से ऐ के स्थान में विकल्प से आ और आय् तथा औ के स्थान में विकल्प से आ और आव् होता है। आ होने से सन्धि नहीं होती। जैसे—श्रियै + अर्थः = श्रिया अर्थः अथवा श्रियायर्थः, रवौ + अस्तमिते = रवा अस्तमिते अथवा रवावस्तमिते ।

सन्धिनिषेध (Non-sandhi)

(१) द्विवचनान्त ई, ऊ और ए के परे कोई स्वर रहे तो सन्धि नहीं होती। यथा—कवी + इमौ = कवी इमौ; मुनी +

इमौ = मुनी इमौ; साधू + एतौ = साधू एतौ; बन्धू + आगतौ = बन्धू आगतौ; लते + इमे = लते इमे; शयाते + अर्भकौ = शयाते अर्भकौ।

(२) अदस् शब्द के ईकारान्त और ऊकारान्त पदों के परे स्वर रहने से सन्धि नहीं होती। यथा—अमी + अश्वाः = अमी अश्वाः, अमू + अर्भकौ = अमू अर्भकौ।

(३) ओकारान्त तथा एक स्वर वाले अव्यय के परे स्वर रहने से सन्धि नहीं होती। यथा—अहो + अयम् = अहो अयम्; अहो + आयाति = अहो आयाति; आ + एवम् = आ एवम्; उ + उत्तिष्ठ = उ उत्तिष्ठ।

(४) प्लुतस्वर की सन्धि नहीं होती। यथा—राम३ + आगच्छ = राम३ आगच्छ।

अभ्यास (Exercise 2)

(१) निम्नलिखित शब्दों की सन्धि करो (Join the following):—सुर + असुरौ; हित + उपदेशः; देव + ऋषिः; तव + एतत्; कूप + उदकम्; रवौ + अस्तमिते; अद्य + एव; पौ + अकः; युध्येते + इमौ; मुनी + इमौ; इति + उवाच; सखे + अनुगृहाण; विष्णो + अव; दुःख + ऋतः; कम्बल + ऋणम्; सर्वे + एव; अमी + अश्वाः।

(२) सन्धिविच्छेद करो (Disjoin):—ममैव; सरय्वम्बु; उपैति; अभ्युदयः; तथेति; देवतर्षभः; अधरोष्ठः; राजर्षिः; दुःखार्त्तः, गिरीन्द्रः, दशार्णः, तेऽपि; इत्यादि; प्रभ आगच्छ; गवाक्षः; बन्धोऽर्पय; श्लोकार्द्धम्; सर्व एव; त्वयोक्तम्; मुनावायाते; कथिमया गच्छन्ति।

(३) शुद्ध करो (Correct):—साध्विमौ मुनिबालकौ। तवापि सन्ततिर्नास्ति। सदेव श्रमः कार्यः। अम्यश्वाः अतिशीघ्रगाः। कम्बलर्णम् एतत्। अरुणौष्ठः। सकलेनपि सैन्येन। तत्रेकः मृगः वसति। गङ्गौदकम् पावनम्।

व्यञ्जनसन्धि (Combination of consonants.)

४३—यदि त् अथवा द् के परे च् अथवा छ् रहे तो त् और द् के स्थान में च् हो जाता है। यथा—महत् + चक्रम् = महच्चक्रम्; भवत् + चरणम् + भवच्चरणम्; उत् + चारणम् = उच्चारणम्; एतद् + चन्द्रमण्डलम् = एतच्चन्द्रमण्डलम्; विपद् + चयः = विपच्चयः; तद् + चलनम् = तच्चलनम्; महत् + छत्रम् = महच्छत्रम्; भवत् + छलनम् = भवच्छलनम्; उत् + छिनत्ति = उच्छिनत्ति; तद् + छविः = तच्छविः; एतद् + छाया = एतच्छाया।

त् + च = च् + च = च्च; जैसे—भवत् + चरणम् = भवच् + चरणम् = भवच्चरणम्।

द् + च = च् + च = च्च; जैसे—तद् + चन्द्रः = तच् + चन्द्रः = तच्चन्द्रः।

त् + छ = च् + छ = च्छ; जैसे—महत् + छत्रम् = महच् + छत्रम् = महच्छत्रम्।

द् + छ = च् + छ = च्छ; जैसे—तद् + छाया = तच् + छाया = तच्छाया।

४४—यदि त् अथवा द् के परे ज् अथवा झ् रहे तो त् और द् के स्थान में ज् हो जाता है। यथा—भवत् + जीवनम् =

भवज्जीवनम्; उत् + ज्वलः = उज्ज्वलः; सरित् + जलम् = सरिज्जलम्; तद् + जन्म = तज्जन्म; एतद् + जननम् = एतज्जननम्; विपद् + जालम् = विपज्जालम्; महत् + झञ्झनम् = महज्झञ्झनम्; तत् + झनत्कारः = तज्झनत्कारः।

त् + ज = ज् + ज = ज्ज; जैसे; उत् + जयिनी = उज्जयिनी।

द् + ज = ज् + ज = ज्ज; जैसे; तद् + जयः = तज् + जयः = तज्जयः।

त् + झ = ज् + झ = ज्झ; जैसे; महत् + झञ्झनम् = महज्झञ्झनम्।

द् + झ = ज् + झ = ज्झ; जैसे; तद् + झनत्कारः = तज्झनत्कारः।

४५—यदि न् के परे ज् अथवा झ् रहे तो 'न्' के स्थान में 'ञ्' हो जाता है। यथा – महान् + जयः = महाञ्जय; राजन् + जागृहि = राजञ्जागृहि; भवान् + जीवतु = भवाञ्जीवतु; उद्यन् + झङ्कारः = उद्यञ्झङ्कारः; विरमन् + झंनत्कारः = विरमञ्झनत्कारः; गच्छन् + झटिति = गच्छञ्झटिति।

न् + ज = ञ् + ज = ञ्ज; यथा – महान् + जयः = महाञ्जयः।

न् + झ = ञ् + झ = ञ्झ; यथा – गच्छन् + झटिति = गच्छञ्झटिति।

४६—पदान्त में स्थित त् अथवा द् के परे (तालव्य) 'श्' रहे तो त् तथा द् के स्थान में 'च्' हो जाता है और 'श्' के स्थान में छ हो जाता है। यथा – जगत् + शरण्यः = जगच्छ-

रण्यः; महत् + शकटम् = महच्छकटम्; तद् + शरीरम् = तच्छरीरम्; एतद् + शकाब्दीयम् = एतच्छकाब्दीयम् ।

त् + श = च् + छ = च्छ; यथा - जगत् + शरण्यः = जगच् + छरण्यः = जगच्छरण्यः ।

द् + श = च् + छ = च्छ; यथा - तद् + शरीरम् = तच् + छरीरम् = तच्छरीरम् ।

४७—पदान्त में स्थित न् कार के परे (तालव्य) 'श्' रहे तो न् के स्थान में ञ् तथा 'श्' के स्थान में 'छ्' हो जाता है। यथा—महान् + शब्दः = महाञ्छब्दः; धावन् + शशः = धावञ्छशः; निन्दन् + शठः = निन्दञ्छठः ।

न् + श = ञ्छ; यथा—महान् + शब्दः = महाञ् + छब्दः = महाञ्छब्दः ।

४८—पदान्त में स्थित त् अथवा द् के परे 'ह्' रहे तो त् के स्थान में द् हो जाता है और ह् के स्थान में ध् हो जाता है। यथा—उत् + हतः = उद्धतः; उत् + हरणम् = उद्धरणम् तद् + हेयम् = तद्धेयम्; विपद् + हेतुः = विपद्धेतुः ।

त् + ह = द् + ध = द्ध; यथा—उत् + हतः = उद् + धतः = उद्धतः ।

द् + ह = द् + ध = द्ध; यथा—विपद् + हेतुः = विपद् + धेतुः = विपद्धेतुः ।

४९—यदि च् कार या ज् कार के बाद (दन्त्य) न् रहे तो*

---

* वर्ग के प्रथम, द्वितीय,, तृतीय और चतुर्थ वर्ण के परे ह् रहे तो

'न्' कार के स्थान में ञ् हो जाता है। यथा—याच् + ना = याच्ञा; यज् + नः = यज्ञः; यज् + नाते = यज्ञाते; यज् + निषे = यज्ञिषे; यज् + निध्वे = यज्ञिध्वे; यज् + ने = यज्ञे; राज् + ना = राज्ञा; राज् + नी = राज्ञी।

च् + न = च्ञ; जैसे; याच् + ना = याच्ञा।

ज् + नः = ज् + ञः = ज्ञः; जैसे; यज् + नः = यज् + ञः = यज्ञः।

५०—यदि त् वा द् के परे ट् अथवा ठ् रहे तो त् तथा द् के स्थान में ट् हो जाता है। यथा—उत् + टलति = उट्टलति; महत् + टङ्कनम् = महट्टङ्कनम्, तद् + टीका = तट्टीका; एतद् + टङ्कारः = एतट्टङ्कारः; सत् + ठकारः = सट्ठकारः; एतद् + ठक्कुरः = एतट्ठक्कुरः।

त् + ट = ट् + ट = ट्ट; जैसे,–उत् + टलति = उट् + टलति = उट्टलति।

द् + ट = ट् + ट = ट्ट; जैसे—तद् + टीका = तट + टीका = तट्टीका।

उसी तरह त् + ठ = ट्ठ, जैसे—सत् + ठकारः = सट्ठकारः; द् + ठ = ट्ठ, जैसे, एतद् + ठक्कुरः = एतट्ठक्कुरः।

५१—यदि त् वा द् के परे ड् अथवा ढ् रहे तो त् तथा द् के स्थान में ड् हो जाता है। जैसे, उत् + डीनः = उड्डीनः; भवत् + डमरुः = भवड्डमरुः; तद् + डिण्डिमः = तड्डिण्डिमः;

'ह्' कार के स्थान में उस वर्ग का चतुर्थ वर्ण विकल्प से हो जाता है। जैसे, वाक् + हरिः = वाग्हरिः (नियम ६२) अथवा वाग्घरिः।

एतद् + डामरः = एतड्डामरः; उत् + ढौकते = उड्ढौकते; महत् + ढालम् = महड्ढालम् ; एतद् + ढक्का = एतड्ढक्का; तद् + ढुण्ढनम् = तड्ढुण्ढनम् ।

त् + ड = ड् + ड = ड्ड; जैसे; उत् + डीनः = उड् + डीनः = उड्डीनः ।

द् + ड = ड् + ड = ड्ड; जैसे; तद् + डिण्डिमः = तड् + डिण्डिमः = तड्डिण्डिमः ।

त् + ढ = ड् + ढ = ड्ढ; जैसे; महत् + ढालम् = महड्ढालम् ।

द् + ढ = ड् + ढ = ड्ढ; जैसे; तद् + ढुण्ढनम् = तड्ढुण्ढनम् ।

५२—यदि (दन्त्य) न् के परे ड् अथवा ढ् रहे तो 'न्' के स्थान में (मूर्द्धन्य) 'ण्' हो जाता है। यथा—महान् + डामरः = महाण्डामरः; रुवन् + डिण्डिमः = रुवण्डिण्डिमः; भवान् + ढुण्ढति = भवाण्ढुण्ढति; राजन् + ढौकसे = राजण्ढौकसे ।

न् + ड = ण्ड; न् + ढ = ण्ढ; यथा—महान् + डामरः = महाण्डामरः; चक्रिन् + ढौकसे = चक्रिण्ढौकसे ।

५३—(मूर्द्धन्य) 'ष्' कार के परे 'त्' के स्थान में 'ट्' और 'थ्' के स्थान में 'ठ्' हो जाता है । यथा—आकृष् + तः = आकृष्टः; स्रष् + ता = स्रष्टा; षष् + थः = षष्ठः ।

ष् + त = ष्ट, ष् + थ = ष्ठ; यथा—निविष् + तः = निविष्टः; षष् + थः = षष्ठः ।

५४—'ल्' कार परे रहने से त् , द् और न् के स्थान में 'ल्' हो जाता है और 'न्' कार के पहले जो वर्ण रहता है उसके

ऊपर चन्द्रबिन्दु ँ रख दिया जाता है । यथा—वृहद् + ललाटम् = वृहल्ललाटम् ; उत् + लिखति = उल्लिखति; तद् + लीलायितम् = तल्लीलायितम् ; एतद् + लीलोद्यानम् = एतल्लीलोद्यानम् ; महान् + लाभः = महाँल्लाभः; भवान् + लभते = भवाँल्लभते ।

त् + ल = ल्ल; द् + ल = ल्ल; यथा; वृहत् + लाभः = वृहल्लाभः, तद् + लेखः = तल्लेखः, न् + ल = ल्ल (न् कार के पूर्व वर्ण में चन्द्रबिन्दु युक्त हो जाता है); यथा; विद्वान् + लिखति= विद्वाँल्लिखति ।

५५—पदान्त में स्थित 'न्' कार के पूर्व कोई ह्रस्व स्वर रहे और परे कोई स्वर हो तो 'न्' कार का द्वित्व हो जाता है (अर्थात् न्कार की जगह दो न् हो जाते हैं)। यथा—धावन् + अश्वः = धावन्नश्वः; हसन् + आगतः = हसन्नागतः; चिन्तयन् + इह = चिन्तयन्निह; सृजन् + ईश्वरः = सृजन्नीश्वरः; स्मरन् + उवाच = स्मरन्नुवाच ।

ह्रस्व स्वर से पर वाला 'न्' + स्वर वर्ण = न्न । यथा—चरन् + अश्वः = चरन्नश्वः ।

N. B.—यदि दीर्घ स्वर के परे 'न्' कार हो तो 'न्' कार आगे के स्वर के साथ केवल मिल जाता है, 'न्' कार का द्वित्व नहीं होता । यथा—महान् + आग्रहः = महानाग्रहः; कवीन् + आह्वय = कवीनाह्वय; साधून् + आद्रियस्व = साधूनाद्रियस्व; भ्रातॄन् + अनुगृह्णीष्व = भ्रातॄननुगृह्णीष्व ।

५६—पदान्त में स्थित (दन्त्य) 'न्' कार के परे यदि च् अथवा छ् रहे तो 'न्' कार के स्थान में अनुस्वार और च्

तथा छ् के स्थान में क्रम से श्च् और श्छ् होता है। यथा—पश्यन् + चकितः = पश्यंश्चकितः; हसन् + चलितः = हसंश्चलितः; नृत्यन् + चकोरः = नृत्यंश्चकोरः; धावन् = छागः = धावंश्छागः; महान् + छेदः = महांश्छेदः; विराजन् + छायापथः = विराजंश्छायापथः।

न् + च = (अनुस्वार) श्च; यथा—हसन् + चलितः = हसं + श्चलितः = हसंश्चलितः । न् + छ = (अनुस्वार) श्छ; यथा—धावन् + छागः = धावं + श्छागः = धावंश्छागः।

५७—पदान्त में स्थित 'न्' कार के परे यदि ट् अथवा ठ् रहे तो 'न्' के स्थान में अनुस्वार और ट् तथा ठ् के स्थान में क्रमशः ष्ट् और ष्ठ् हो जाता है। यथा—चलन् + टिट्टिभः = चलंष्टिट्टिभः; उद्यन् + ठकारः = उद्यंष्ठकारः; महान् + ठक्कुरः = महांष्ठक्कुरः।

न् + ट = (अनुस्वार) ष्ट; यथा; चलन् + टिट्टिभः = चलंष्टिट्टिभः।

न् + ठ = (अनुस्वार) ष्ठ; यथा; महान् + ठक्कुरः = महांष्ठक्कुरः।

५८—पदान्त में स्थित 'न्' कार के परे यदि त् अथवा थ् हो तो 'न्' के स्थान में अनुस्वार और त् तथा थ् के स्थान में क्रमशः स्त् और स्थ् हो जाता है।

यथा—पतन् + तरुः = पतंस्तरुः; महान् + तडागः = महांस्तडागः; उत्तिष्ठन् + तरङ्गः = उत्तिष्ठंस्तरङ्गः; शाम्यन् + तापः =

शाम्यंस्तापः; क्षिपन् + थुत्कारम् = क्षिपंस्थुत्कारम् ; स्पृशन् + थुध्यति = स्पृशंस्थुध्यति ।

न् + त = (अनुस्वार) स्त; यथा—पतन् + तरुः = पतंस्तरुः।

न् + थ = (अनुस्वार) स्थ; यथा—क्षिपन् + थुत्कारम् = क्षिपंस्थुत्कारम् ।

५९—पदान्त में स्थित 'म्' कार के परे अन्तःस्थ (अर्थात् य, र, ल, व) अथवा ऊष्मवर्ण (अर्थात् श, ष, स, ह) रहे तो 'म्' के स्थान में अनुस्वार हो जाता है। यथा—सत्वरम् + याति = सत्वरं याति; करुणम् + रोदिति = करुणं रोदिति; विद्याम् + लभते = विद्यां लभते; भारम् + वहति = भारं वहति; शय्यायाम् + शेते = शय्यायां शेते; कष्टम् + सहते = कष्टं सहते; मधुरम् + हसति = मधुरं हसति* ।

म् + (य् , र् , ल् , व्) = म् के स्थान में अनुस्वार, जैसे—सत्वरम् + याति = सत्वरं याति; विद्याम् + लभते = विद्यां लभते इत्यादि ।

म् + (श् , ष् , स् , ह्) = म् के स्थान में अनुस्वार; जैसे—सुखम् + शेते=सुखं शेते ; मधुरम् + हसति= मधुरं हसति इत्यादि।

६०—यदि पदान्त में स्थित 'म्' कार के परे स्पर्श वर्ण (अर्थात् क से म तक कोई वर्ण) रहे तो 'म्' के स्थान में अनुस्वार अथवा जो वर्ण परे रहे उसी वर्ण के वर्ग का पञ्चम वर्ण हो जाता है । यथा—किम् + करोषि = किंकरोषि, किङ्-

* किन्तु सम् + राट् = सम्राट् ।

रोषि; गृहम् + गच्छ = गृहंगच्छ, गृहङ्गच्छ; क्षिप्रम् + चलति = क्षिप्रंचलति, क्षिप्रञ्चलति; शत्रुम् + जहि = शत्रुंजहि; शत्रुञ्जहि; नदीम् + तरति = नदींतरति, नदीन्तरति; धनम् + ददाति = धनंददाति, धनन्ददाति; स्तनम् + धयति = स्तनंधयति, स्तनन्धयति; गुरुम् + नमति = गुरुंनमति, गुरुन्नमति; चन्द्रम् + पश्यति = चन्द्रंपश्यति; चन्द्रम्पश्यति; किम् + फलम् = किंफलम्, किम्फलम्; सत्यम् + ब्रूयात् = सत्यंब्रूयात्; सत्यम्ब्रूयात्; मधुरम् + भाषते = मधुरंभाषते, मधुरम्भाषते; शास्त्रम् + मीमांसते = शास्त्रंमीमांसते, शास्त्रम्मीमांसते* ।

म् + (क् से लेकर म् तक कोई वर्ण) = म् के स्थान में अनुस्वार अथवा पर वर्ण के वर्ग का पञ्चम वर्ण ।

यथा--किम् + करोषि = किंकरोषि, किङ् + करोषि = किङ्करोषि इत्यादि ।

६१—ह्रस्व स्वर से परे छ् रहे तो छ् के स्थान में च्छ् हो जाता है । यथा—सित + छत्रम् = सितच्छत्रम्; परि + छदः = परिच्छदः; अव + छेदः = अवच्छेदः; वृक्ष + छाया = वृक्षच्छाया, गृह + छिद्रम् = गृहच्छिद्रम् ।

---

* अपदान्त में स्थित म् और न् के परे यदि स्पर्श वर्ण रहे तो म् और न् के स्थान में क्रम से उसी वर्ग का पञ्चम वर्ण हो जाता है । यथा—गम् + ता = गन्ता; आशन् + कितः = आशङ्कितः ।

यदि ऊष्म वर्ण परे रहे तो अपदान्त में स्थित 'न्' के स्थान में अनुस्वार हो जाता है । जैसे—यशान् + सि = यशांसि ।

ह्रस्व स्वर + छ् = छ् के स्थान में च्छ्; यथा; वृक्ष + छाया = वृक्षच्छाया।

यदि दीर्घ स्वर के परे छ् हो तो छ् के स्थान में च्छ् विकल्प से होता है, पर 'मा' अव्यय और 'आ' उपसर्ग के परे छ् के स्थान में च्छ् नित्य ही होता है। यथा--लक्ष्मी + छाया = लक्ष्मीछाया या लक्ष्मीच्छाया; मा + छिनत् = माच्छिनत्; आ + छादयति = आच्छादयति।

६२--स्वर वर्ण अथवा वर्ग का तृतीय चतुर्थ वर्ण या य्, र्, ल्, व्, ह्, परे रहने से क् के स्थान में ग् हो जाता है। यथा—दिक् + अन्तः = दिगन्तः; वाक् + आडम्बरः = वागाडम्बरः; त्वक् + इन्द्रियम् = त्वगिन्द्रियम्; वाक् + ईशः = वागीशः; सम्यक् + उक्तम् = सम्यगुक्तम्; धिक् + ऋणकारिणम् = धिगृणकारिणम्; प्राक् + एव = प्रागेव; धिक् + ऐश्वर्यमत्तम् = धिगैश्वर्यमत्तम्; सम्यक् + ओजः = सम्यगोजः; वाक् + औचित्यम् = वागौचित्यम्; दिक् + गजः = दिग्गजः; प्राक् + घनोदयः = प्राग्घनोदयः; वाक् + जालम् = वाग्जालम्; सम्यक् + झङ्कारः = सम्यग्झङ्कारः; सम्यक् + डयते=सम्यग्डयते; सम्यक् + ढौकते = सम्यग्ढौकते; वाक् + दानम् = वाग्दानम्; धिक् + धनगर्वितम् = धिग्धनगर्वितम्; वाक् + बाहुल्यम् = वाग्बाहुल्यम्; दिक् + भागः = दिग्भागः; धिक् + याचकम् = धिग्याचकम्; वाक् + रोधः = वाग्रोधः, धिक् + लोभिनम् = धिग्लोभिनम्; सम्यक् + वदति = सम्यग्वदति; दिक् + हस्ती = दिग्हस्ती।

क् + स्वर = क् के स्थान में ग् । क् + वर्ग का तृतीय अथवा चतुर्ण वर्ण = क् के स्थान में ग् । क् + य्, र्, ल, व्, ह् = क्, के स्थान में ग् । जैसे—दिक् + अन्तः = दिगन्तः; वाक् + दानम् = वाग्दानम् ; धिक् + याचकम् = धिग्याचकम्; वाक् + हरिः = वाग्हरिः ।

N. B. स्वर वर्ण, वर्ग का तृतीय या चतुर्थ वर्ण अथवा य् र् ल् व् ह् परे रहने से च् के स्थान में ज् और ट् के स्थान में ड् और प् के स्थान में ब् हो जाता है । जैसे, अच् + अन्तः = अजन्तः; सम्राट् + आगतः = सम्राडागतः; सम्राट् + गच्छति = सम्राड्गच्छति; सम्राट् + हसति = सम्राड्हसति; अप् + इन्धनम् = अबिन्धनम्; अप् + जम् = अब्जम्; अप् + हरणम् = अब्हरणम् ।

६३—यदि स्वर वर्ण अथवा ग्, घ्, द्, ध् ब्, भ्, य्, र्, ल्, व्, परे रहे तो त् के स्थान में द् हो जाता है । जैसे-जगत् + अन्तः = जगदन्तः; जगत् + आदिः = जगदादिः; जगत् + इन्द्रः = जगदिन्द्रः; जगत् + ईशः = जगदीशः; भवत् + उक्तम् = भवदुक्तम्; भवत् + ऊहनम् = भवदूहनम् ; तत् + ऋणम् = तदृणम्; जगत् + एतत् = जगदेतत्; महत् + ऐश्वर्यम् = महदैश्वर्यम्; महत् + ओजः = महदोजः; महत् + औषधम् = महदौषधम्; बृहत् + गहनम् = बृहद्गहनम्; बृहत् + घटः = बृहद्घटः; भवत् + दर्शनम् = भवद्दर्शनम्; महत् + धनुः = महद्धनुः; जगत् + बन्धुः = जगद्बन्धुः; महत् + भयम् = महद्भयम्; बृहत् + यानम् = बृहद्यानम्, बृहत् + रथः = बृहद्रथः; महत् + वनम् = महद्वनम्

त् + स्वर = त् के स्थान में द्; जैसे; जगत् + ईशः = जगदीशः

त् + ग्, घ्, द्, ध्, ब्, भ्, = त् के स्थान में द्; जैसे, जगत् + बन्धुः = जगद्बन्धुः। त् + य् र्, ल्, व् = त् के स्थान में द्; जैसे महत् + वनम् = महद्वनम्।

६४—'न्' या 'म्' परे रहने से 'क्' के स्थान में 'ङ्' हो जाता है। यथा—दिक् + नागः = दिङ्नागः; प्राक् + मुखः=प्राङ्मुखः; वाक् + मयम् = वाङ्मयम्; वाक् + मात्रेण = वाङ्मात्रेण। यदि 'त्' वा 'द्' के परे 'न्' वा 'म्' हो तो त् और द् के स्थान में न् हो जाता है। यथा—जगत् + नाथः = जगन्नाथः; तद् + नीरम्= तन्नीरम्; भवत् + मतम् = भवन्मतम्; चित् = मयम् = चिन्मयम्; तद् + मात्रम् = तन्मात्रम्।

क् + न् या म् = क् के स्थान में ङ्; जैसे; दिक् + नागः = दिङ्नागः; प्राक् + मुखः = प्राङ्मुखः। त् + न् = न्न्, द् + न् = न्न्; यथा–जगत् + नाथः = जगन्नाथः, तद् + नीरम्=तन्नीरम्।*

परिशिष्ट (Addenda)

(क) उत् उपसर्ग के परे स्था और स्तम्भ् धातुओं के स् कार का लोप हो जाता है। यथा—उत् + स्थानम् = उत्थानम्; उत् + स्थितः = उत्थितः; उत् + स्तम्भनम् = उत्तम्भनम्।

---

* 'क' के परे 'न्' अथवा 'म्' रहे तो 'क्' के स्थान में विकल्प से 'ग्' होता है। जैसे—दिक् + नागः = दिग्नागः अथवा दिङ्नागः; प्राक् + मुखः = प्राग्मुखः अथवा प्राङ्मुखः। त् के परे 'न्' वा 'म्' रहे तो त् के स्थान में विकल्प से 'द्' हो जाता है। जैसे—तत् + नीरम् = तद्नीरम् वा तन्नीरम्; भवत् + मतम् = भवद्मतम् वा भवन्मतम्।

(ख) रेफ (र्) जिस वर्ण के ऊपर लगता है उसका विकल्प से द्वित्व होता है। यथा—कर्म्म वा कर्म; सर्व्वम् वा सर्वम्। ऊष्म वर्ण (अर्थात् श, ष, स, ह) का द्वित्व नहीं होता; जैसे--दर्शनम्, अर्हणम्। द्वित्व होने पर आदि के तृतीय तथा चतुर्थ वर्ण के स्थान में क्रमशः प्रथम तथा द्वितीय वर्ण होता है। यथा--मूर्द्धा, मूर्धा; गर्ब्भः, गर्भः।

(ग) सम् तथा परि उपसर्ग के परे कृ धातु से बना हुआ पद रहे तो सम् और परि के आगे 'स्' कार का आगम हो जाता है। यथा--सम् + कारः=संस्कारः; सम् + कृतः = संस्कृतः; परि + कारः = परिष्कारः; परि + कृतः = परिष्कृतः।

(घ) मनस् तथा काम शब्द परे रहने से 'तुम्' प्रत्यय के 'म्' कार का लोप हो जाता है। यथा—गन्तुम् + मनाः = गन्तुमनाः; कर्त्तुम् + कामः = कर्त्तुकामः।

अभ्यास (Exercise 3.)

१--सन्धि करो (Join):—धावन् + छागः; प्राक् + एव; त्वत् + चरणम्; चिन्तयन् + इह; कवीन् + आह्वयः; उत् + लिखति; भवान् + लभते; चित् + मयम्; विपद् + हेतुः; तद् + जयः; प्राक् + मुखः; उत् + स्थानम्; मधुरम् + भाषते।

२--सन्धिविच्छेद करो (Disjoin):--किम्फलम्; इत्तिष्ठं-स्तरङ्गः; स्मरन्नुवाच; स्वच्छाया; उत्थितः, वृहल्ललाटम्; वागीशः; महच्छकटम्; महाञ्छबरः; तद्धितम्; सरिज्जलम्; सम्राट्; क्षिप्रज्वलति; तट्टीका; महानाग्रहः; महाँल्लाभः।

३—शुद्ध करो (Correct)—साधून्नाद्रियस्व; वाकाडम्बरः; एकस्मिञ्चित्; हसं चलति; चलंटिट्टिभः; गृहछिद्रम्; महतोजः; वाकूदानम्; गंता; पठनिति, बृहद्‌ललाटम् ।

विसर्गसन्धि ।

६५—यदि विसर्ग के परे च् अथवा छ् हो तो विसर्ग के स्थान में श् हो जाता है। यथा—पूर्णः + चन्द्रः = पूर्णश्चन्द्रः; ज्योतिः + चक्रम् = ज्योतिश्चक्रम्; निः + चितः = निश्चितः; वायुः + चलति = वायुश्चलति; धावितः + छागः=धावितश्छागः; रवेः + छविः = रवेश्छविः; तरोः + छाया = तरोश्छाया; रज्जुः + छिद्यते = रज्जुश्छिद्यते ।

विसर्ग (ः) + च् = श्च् ; जैसे—निः + चयः = निश्चयः ।

विसर्ग (ः) + छ् = श्छ् ; जैसे—तरोः + छाया = तरोश्छाया।

६६—विसर्ग के परे यदि ट् वा ठ् रहे तो विसर्ग के स्थान में (मूर्द्धन्य) 'ष्' हो जाता है। यथा—भीतः + टलति = भीतष्टलति; उड्डीनः + टिट्टिभः उड्डीनष्टिट्टिभः; धनुः + टङ्कारः = धनुष्टङ्कारः; स्थितः + ठक्कुरः = स्थितष्ठक्कुरः; भग्नः + ठक्कुरः = भग्नष्ठक्कुरः ।

विसर्ग (ः) + ट् = ष्ट्; जैसे; धनुः + टङ्कारः = धनुष्टङ्कारः ।

विसर्ग (ः + ठ्=ष्ठ्; जैसे; चलितः + ठक्कुरः=चलितष्ठक्कुरः।

६७—यदि विसर्ग के परे त् वा थ् रहे तो विसर्ग के स्थान में दन्त्य 'स्' हो जाता है। यथा—उन्नतः + तरुः = उन्नतस्तरुः; नद्याः + तीरम् = नद्यास्तीरम्; भूमेः + तलम् =

भूमेस्तलम् ; क्षिप्तः + थुत्कारः = क्षिप्तस्थुत्कारः ; स्नातः + थुध्यति = स्नातस्थुध्यति ।

विसर्ग (ः) + त् = स्त् ; जैसे–उन्नतः + तरुः=उन्नतस्तरुः ।

विसर्ग (ः) + थ् = स्थ् ; जैसे—क्षिप्तः + थुत्कारः = क्षिप्तस्थुत्कारः ।

६८–यदि विसर्ग के पहले 'अ' और परे 'अ' रहे तो विसर्ग के पूर्व 'अ' कार तथा विसर्ग दोनों के स्थान में 'ओ' हो जाता है। ओकार पूर्व वर्ण के साथ मिल जाता है और पर के अकार का लोप होकर उसके स्थान में लुप्त अकार का चिन्ह (ऽ) लगा दिया जाता है। यथा—नरः + अयम् = नरोऽयम् ; नवः + अङ्कुरः = नवोऽङ्कुरः ; तीक्ष्णः + अङ्कुशः = तीक्ष्णोऽङ्कुशः ; ज्वलितः + अङ्गारः = ज्वलितोऽङ्गारः ; वेदः + अधीतः = वेदोऽधीतः ।

अः + अ = ओऽ । सः + अयम् = सोऽयम् ।

६९—यदि विसर्ग के पहले 'अ' और परे वर्ग का तृतीय, चतुर्थ अथवा पञ्चमवर्ण या य्, र्, ल्, व्, ह् रहे तो विसर्ग के पूर्व का अकार और विसर्ग इन दोनों के स्थान में 'ओ' हो जाता है। ओकार पूर्व वर्ण के साथ मिल जाता है। यथा—शोभनः + गन्धः = शोभनोगन्धः ; नूतनः + घटः = नूतनोघटः ; सद्यः + जातः = सद्योजातः ; मधुरः + झङ्कारः = मधुरोझङ्कारः ; नवः + डमरुः = नवोडमरुः ; गजः + ढौकते = गजोढौकते ; मूर्द्धन्यः + णकारः = मूर्द्धन्योणकारः ; निर्वाणः + दीपः = निर्वाणो-

दीपः; अश्वः + धावति = अश्वोधावति; उन्नत + नगः = उन्नतो-नगः; दृढः + बन्धः = दृढोबन्धः; अकुतः + भयः = अकुतोभयः; अतीतः + मासः = अतीतोमासः; कृतः + यत्नः = कृतोयत्नः; शान्तः + रोषः = शान्तोरोषः; कृतः + लोभः = कृतोल्लोभः; शीतः + वायुः = शीतोवायुः; वामः + हस्तः = वामोहस्तः।

अः + वर्ग का तृतीय, चतुर्थ, पञ्चमवर्ण, य्, र्, ल्, व्, ह् = अः के स्थान में ओ। जैसे—नूतनः + घटः = नूतनोघटः; वामः + हस्तः = वामोहस्तः इत्यादि।

७०—यदि विसर्ग के पहले 'अ' और परे 'अ' को छोड़ कर कोई दूसरा स्वरवर्ण हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है और लोप के बाद फिर सन्धि नहीं होती। यथा—कुतः + आगतः = कुतआगतः; नरः + इव = नरइव; कः + ईहते = कईहते; चन्द्रः + उदेति = चन्द्रउदेति; अतः + ऊर्ध्वम् = अतऊर्ध्वम्; देवः + ऋषिः = देव ऋषि; कः + एषः = कएषः; रक्तः + ओष्ठः = रक्तओष्ठः; राज्ञः + औदार्यम् = राज्ञऔदार्यम्।

अः + अकार से भिन्नस्वर = विसर्ग का लोप। जैसे, सूर्यः + उदेति, सूर्य उदेति; पण्डितः + उवाचः = पण्डित उवाच इत्यादि।

७१ यदि विसर्ग के पहले 'आ' और परे स्वरवर्ण अथवा वर्ग का तृतीय, चतुर्थ, पञ्चमवर्ण या य्, र्, ल्, व्, ह्, रहे तो विसर्ग का लोप हो जाता है। लोप होने के बाद फिर सन्धि नहीं होती। यथा - अश्वाः + अमी = अश्वा अमी; गजाः + इमे = गजा इमे; ताराः + उदिताः = तारा उदिताः;

गताः + ऋषयः = गता ऋषयः; नराः + एते = नरा एते; हताः + गजाः=हता गजाः; कृताः + घटाः = कृता घटाः; पुत्राः + जाताः = पुत्रा जाताः; मधुराः + झङ्काराः = मधुरा झङ्काराः; नवाः + डमरवः = नवा डमरवः; गजाः + ढौकन्ते = गजा ढौकन्ते; निर्वाणाः + दीपाः = निर्वाणा दीपाः; अश्वाः; + धावन्ति = अश्वा धावन्ति; उन्नताः + नागाः = उन्नता नागाः; दृढाः + बन्धाः = दृढा बन्धाः; नराः + भीताः = नरा भीताः; अतीताः + मासाः = अतीता मासाः; छात्राः + यतन्ते = छात्रा यतन्ते; एताः + रथ्याः = एता रथ्याः; नराः + लभन्ते = नरा लभन्ते; वाताः + वान्ति = वाता वान्ति; बालकाः + हसन्ति = बालका हसन्ति ।

आः + स्वरवर्ण, वर्ग का तृतीय, चतुर्थ, पञ्चम वर्ण अथवा य्, र्, ल्, व्, ह् = विसर्ग का लोप । अश्वाः + धावन्ति = अश्वा धावन्ति; नराः + यतन्ते = नरा यतन्ते इत्यादि ।

७२—यदि विसर्ग के पूर्व्व अ, आ को छोड़ कर कोई दूसरा स्वर रहे और परे स्वर वर्ण, अथवा वर्ग का तृतीय, चतुर्थ, पञ्चम वर्ण या य्, र्, ल्, व्, ह् रहे तो विसर्ग के स्थान में र् हो जाता है। यथा—कविः + अयम् = कविरयम्, गतिः + इयम् = गतिरियम्; रविः + उदेति = रविरुदेति; श्रीः + असौ = श्रीरसौ; सुधीः + एषः = सुधीरेषः; बन्धुः + आगतः = बन्धुरागता; गुरुः + उवाच = गुरुरुवाच; वधूः + एषा = वधूरेषा; भूः + इयम् = भूरियम्; मातृः + अर्च्चय = मातृरर्च्चय; दुहितृः + आह्वय = दुहितृराह्वय; रवेः + उदयः = रवेरुदयः; तैः + उक्तम् =

तैरुक्तम् ; प्रभोः + आदेशः = प्रभोरादेशः; विधोः + अस्तगमनम् = विधोरस्तगमनम् ; गौः + अयम् = गौरयम् ; ऋषिः + गच्छति = ऋषिर्गच्छति; हविः + घ्राणम् = हविर्घ्राणम् ; गुरुः + जयति = गुरुर्जयति; कृतैः + झङ्कारैः = कृतैर्झङ्कारैः; नवैः = डमरुभिः = नवैर्डमरुभिः; गौः + ढौकते = गौर्ढौकते; रवेः + दर्शनम् = रवेर्दर्शनम् ; निः + धनः = निर्धनः; दुः + नीतिः = दुर्नीतिः; निः + बन्धः = निर्बन्धः; निः + भयः = निर्भयः; बहिः + योगः = बहिर्योगः; विधुः + लीयते = विधुर्लीयते; वायुः + वाति = वायुर्वाति; शिशुः + हसति = शिशुर्हसति ।

अ, आ से भिन्नस्वर के परे विसर्ग + स्वरवर्ण, वर्ग का तृतीय, चतुर्थ, पञ्चमवर्ण वा य्, र्, ल्, व्, ह् = विसर्ग के स्थान में र्। यथा—हरिः + अयम् = हरिरयम् , वायुः + वाति = वायुर्वाति इत्यादि ।

७३—यदि अकार के परस्थित विसर्ग र् से *उत्पन्न हो तो विसर्ग के परे स्वरवर्ण अथवा वर्ग का तृतीय, चतुर्थ; पञ्चमवर्ण वा य्, र्, ल्, व्, ह् परे रहने से विसर्ग के स्थान में र् होता है । विसर्ग का लोप या पूर्व स्थित अकार के साथ

---

* जो विसर्ग र् के स्थान में होता है उसे र् से उत्पन्न कहते हैं । जैसे, अन्तर् , प्रातर् , पुनर् , स्वर् और भ्रातृ, पितृ, मातृ, जामातृ, सवितृ आदि ऋकारान्त शब्द के अन्तस्थित विसर्ग तथा अहन् शब्द के अन्तस्थित विसर्ग र् से उत्पन्न विसर्ग हैं । पयस् , मनस् , चेतस् आदि शब्दों के स् के स्थान में उत्पन्न विसर्ग स् से उत्पन्न विसर्ग हैं ।

मिल कर ओ नहीं होता । * यथा—पुनः + अपि = पुनरपि; पुनः + आगतः = पुनरागतः; प्रातः = इहागतः = प्रातरिहागतः; प्रातः + एव = प्रातरेव; अन्तः + धानम् = अन्तर्धानम्; स्वः + गतः = स्वर्गतः भ्रातः + आगच्छ = भ्रातरागच्छ; पितः + अनु-मन्यस्व = पितरनुमन्यस्व; मातः + देहि = मातर्देहि; जामातः + वद = जामातर्वद; दुहितः + याहि = दुहितर्याहि ।

अकार के परस्थित र् जात विसर्ग + स्वरवर्ण, वर्ग का तृतीय, चतुर्थ, पञ्चमवर्ण अथवा य्, र्, ल्, व्, ह् = विसर्ग के स्थान में र्। यथा—पुनः + इह = पुनरिह; मातः + देहि = मातर्देहि ।

७४—र् परे रहने से विसर्ग के स्थान में जो र् होता है उसका लोप हो जाता है और पूर्व्व स्वर दीर्घ हो जाता है। यथा—पितः + रक्ष = पितारक्ष; निः + रसः = नीरसः; निः + रोगः = नीरोगः; विधुः + राजते = विधूराजते; मातुः + रोद-नम् = मातूरोदनम् ।

र् + र् = पूर्व र् का लोप और पूर्व्व स्वर दीर्घ (हो जाता है)। जैसे—निः (र्) + रोगः = नीरोगः; मातुः (र्) + रोदनम् = मातूरोदनम् ।

७५—यदि 'अ' कार को छोड़कर अन्य कोई वर्ण परे रहे तो सः और एषः के विसर्ग का लोप हो जाता है। लोप होने के बाद फिर सन्धि नहीं होती। यथा—सः + आगतः = स

---

* यह नियम नियम (६८ और ७०) का अपवाद (Exception) है।

आगतः; सः + इच्छति = स इच्छति; सः + ईहते + स ईहते; सः + उवाच = स उवाच; सः + करोति = स करोति; सः + गच्छति = स गच्छति; सः + चलति = स चलति; सः + हसति = स हसति; एषः + आयाति = एष आयाति; एषः + एति = एष एति; एषः + धावति = एष धावति; एषः + रोदिति = एष रोदिति; एषः + वदति = एष वदति; एषः + शेते = एष शेते; एषः + सहते = एष सहते।

सः + (अकार से भिन्न) कोई वर्ण = विसर्ग का लोप। जैसे; सः + गच्छति = स गच्छति; सः + उवाच = स उवाच।

एषः + (अ से भिन्न) कोई वर्ण = विसर्ग का लोप। जैसे, एषः + एति = एष एति; एषः + धावति = एष धावति। लोप होने पर फिर सन्धि का निषेध।

७६—स्वर वर्ण, वर्ग का तृतीय, चतुर्थ, पञ्चमवर्ण या य्, र्, ल्, व्, ह् परे रहने से 'भोः' के विसर्ग का लोप हो जाता है। लोप होने पर फिर सन्धि नहीं होती। यथा—भोः + अम्बरीष = भो अम्बरीष; भोः + ईशान = भो ईशान; भोः + उमापते = भो उमापते; भोः + गदाधर = भो गदाधर; भोः + जनमेजय = भो जनमेजय; भोः + दामोदर = भो दामोदर; भोः + माधव = भो माधव; भोः + यदुपते = भो यदुपते।

भोः + स्वरवर्ण, वर्ग का तृतीय, चतुर्थ, पञ्चम वर्ण, य्, र्, ल्, व्, ह् = विसर्ग का लोप। लोप के पीछे सन्धि का निषेध। यथा—भोः + उमेश = भो उमेश।

परिशिष्ट (Addenda)

(क) क्, ख्, प्, फ् परे रहने से निः, दुः, बहिः, प्रादुः, आविः और चतुः के विसर्ग का 'ष्' होता है। यथा—निः + कामः = निष्कामः; निः + फलम् = निष्फलम्; दुः + करम् = दुष्करम्; बहिः + कृतः = बहिष्कृतः; आविः + कृतः = आविष्कृतः; चतुः + पादः=चतुष्पादः।

(ख) वाचः + पतिः = वाचस्पतिः; विद्वस् + जनः = विद्वज्जनः; चतुः + तयम् = चतुष्टयम्, पुम् + कोकिलः = पुंस्कोकिलः, नमः + कारः = नमस्कारः; तिरः + कारः = तिरस्कारः; श्रेयः + करः = श्रेयस्करः; अयः + कान्तः = अयस्कान्तः; भुवः + लोकः = भुवर्लोकः; भाः + करः = भास्करः; अहः + करः = अहस्करः; गोः + पदम् = गोष्पदम्; अहः + अहः = अहरहः। ये बिना किसी नियम के सिद्ध होते हैं।

अभ्यास (Exercise 4)

(१) सन्धि करो (Goin) :—नवः + तरुः; बालकाः + हसन्ति; भोः + नारायण, निः + रोगः; पुनः + अपि; सः + अयम्; सः + गतः; एषः + आयाति; आविः + कृतम्; वायुः + वाति; धनुः + टङ्कारः; दुः + करम्।

(२) सन्धिविच्छेद करो (Disjoin) :—नरोऽयम्; नीरसः, पुनरागतः; स्वर्गतः, कृतो यत्नः; सपठति; मनोहरः; पूर्णश्चन्द्रः; रवेस्तापः; दुर्जनः, भो इन्द्र; वाचस्पतिः; हरिरयम्; प्रातरागमिष्यति।

(३) शुद्ध करो (Correct) :—ग्रन्थो पठितः; भूमेर्छाया, पुनोऽपि; बालको इच्छति; पितो गच्छ; रामोवाच; पुरोतिष्ठति; कुतागच्छसि; मुनितिर्ष्ठति; सैषदाशरथिर्रामः।

णत्वविधान।

(Change of न् into ण्)

७७–एक ही पद में ऋ, ॠ, र् या ष् के परे यदि 'न्' हो तो 'न्' का 'ण्' हो जाता है। यथा—नृणान्, तिसृणाम्, चतसृणाम्, नॄणाम्, भ्रातॄणाम्, दातॄणाम्, चतुर्णाम्, दोष्णा, पुष्णे।

७८—ऋ, ॠ, र् या ष् और 'न्' के बीच में यदि स्वर वर्ण, कवर्ग, पवर्ग, य्, र्, व्, ह् और अनुस्वार (इनमें से एक या अनेक) हों तो भी न् का ण् हो जाता है। यथा—करणम्, कराणाम्, करिणा, गुरुणा, परेण; (अनेक बीच में रहने से) अर्केण, मूर्खेण, मृगेण, दीर्घेण, दर्पेण, रेफेण, दर्भेण, द्रुमेण, रयेण, गर्व्वेण, ग्रहेण, बृंहणम्।*

७६–पदान्त में स्थित 'न्' का 'ण्' नहीं होता। यथा—नरान्, हरीन्, गुरून्, भ्रातॄन्।†

---

* इनके अतिरिक्त दूसरे वर्ण यदि बीच में रहें तो 'न्' का 'ण्' नहीं होता। जैसे—तीर्थानाम्, तर्ज्जनम्, अर्च्चनम्, षष्ठेन, मूढेन, आर्त्तेन, अर्थेन, स्पर्शेन, रसानाम्, सरलेन, अर्द्धेन इत्यादि।

† परे + न, करे + न, रामे + न इत्यादि पदों में 'न्' के आगे 'अ' है, 'न्' पद के अन्त में नहीं है इसलिये परे + न = परेण, करे + न = करेण, रामे + न = रामेण। 'नरान्' में 'न्' के बाद कोई अक्षर नहीं है इसलिये 'ण्' नहीं हुआ।

परिशिष्ट (Addenda)

निम्नलिखित शब्दों में ण् स्वाभाविक हैः—वाणी, तूणीर, वेणी, फणि, मणि, लवण, कण, कोण, कल्याण, क्कण, गण, गुण, गौण, गणिका, चाणक्य, पण, पुण्य, पाणिनि, पाणि, बाण, वीणा, वेणु, मत्कुण, शाण, शोण, स्थाणु इत्यादि ।

षत्वविधान ।

(Change of स् into ष्)

८०—अ, आ से भिन्न स्वर तथा क् या र् के परे प्रत्ययों के 'स्' का 'ष्' हो जाता है। यथा—मुनिषु, गुणिषु, नदीषु, सुधीषु, साधुषु, गुरुषु, प्रतिभूषु, वधूषु, भ्रातृषु, स्वसृषु, अन्येषाम्, सर्व्वेषाम्, गोषु, ग्लौषु, नौषु, वाक्षु, दिक्षु, चतुर्षु, गीर्षु । *

८१—अनुस्वार तथा विसर्ग यदि बीच में भी रहे तोभी 'स्' का 'ष्' होता है। यथा—हवींषि, धनूंषि, आशीःषु, धनुःषु।

परन्तु नपुंसकलिङ्गवाले शब्दों की प्रथमा और द्वितीया के बहुवचन से भिन्न अनुस्वार बीच में यदि रहे तो स् का ष् नहीं होता । यथा पुंसु ।

---

* 'सात्' प्रत्यय के 'स्' का 'ष्' नहीं होता । यथा—भूमिसात्, अग्निसात्, वायुसात् इत्यादि ।

इकारान्त और उकारान्त उपसर्ग के परस्थित स्था, सिध्, सिच्, सद्, सु, सू, स्तु इत्यादि धातुओं के 'स्' का 'ष्' हो जाता है । यथा—निष्ठा, प्रतिष्ठा, अनुष्ठानम्, अभिषेकः इत्यादि ।

परिशिष्ट (Addenda)

(क) निम्नलिखित शब्दों में भी 'स्' का 'ष्', होता है। यथा—विषयः, सुषमा, अम्बष्ठः, गोष्ठः, धर्मिष्ठः, अङ्गुष्ठः, दिविष्ठः, मञ्जिष्ठः, युधिष्ठिरः, मातृष्वसा, पितृष्वसा इत्यादि।

(ख) निम्नलिखित शब्दों में 'ष्' स्वाभाविक है। यथा—आषाढ़, इषु, ईषत्, उत्कर्ष, औषध, अभिलाष, दोष, द्वेष, पाषाण, पुरुष, पुष्प, भाषा, भीष्म, कषाय, कष्ट, कोष, कल्माष, कलुष, महिष, मूषिक, मेष, वाष्प, वर्ष, वृष, षट्, षोडश, हर्ष इत्यादि।

सुबन्त प्रकरण (Declension)

विभक्तियों के रूप।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	स् (सु)	औ	अस् (:)
द्वितीया	अम्	औ	अस् (:)
तृतीया	आ	भ्याम्	भिस् (:)
चतुर्थी	ए	भ्याम्	भ्यस् (:)
पञ्चमी	अस् (:)	भ्याम्	भ्यस् (:)
षष्ठी	अस् (:)	ओस् (:)	आम्
सप्तमी	इ	ओस् (:)	सु (प्)

इन ('सु' से लेकर 'सुप्' पर्यन्त) सातो विभक्तियों को सुप् कहते हैं। शब्दों (संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण) के अन्त में इन (सुप्) विभक्तियों को लगाने से सुबन्त पद बनते हैं। संस्कृत

के सभी (संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण के) शब्दों में इनमें से कोई न कोई विभक्ति अवश्य लगी रहनी चाहिये।

प्रत्येक विभक्ति में तीन वचन (Number) होते हैं (१) एकवचन (Singular), (२) द्विवचन (Dual), (३) बहुवचन (Plural)। शब्द में एकवचन की विभक्ति लगाने से एक वस्तु का, द्विवचन की विभक्ति लगाने से दो वस्तुओं का और बहुवचन की विभक्ति लगाने से अनेक वस्तुओं का ज्ञान होता है।*

किस शब्द में किस विभक्ति को लगाने से कैसा पद बनता है यह क्रमानुसार इस प्रकरण में दिया जाता है। सम्बोधन में भी प्रथमा विभक्ति के समान ही रूप होता है पर एकवचन में कहीं कहीं रूप में भेद होता है इसलिये सम्बोधन की द्विवचन और बहुवचन की विभक्तियों का रूप 'शब्दरूप' में नहीं दिया गया है। केवल एकवचन में ही जहाँ प्रथमा से भेद पड़ता है दिया जायगा।

स्वरान्त पुंल्लिंग शब्द।

अकारान्त 'गज' शब्द (Elephant)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	गजः	गजौः	गजाः
द्वितीया	गजम्	गजौ	गजान्

* हिन्दी और अंगरेजी में द्विवचन नहीं होता।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तृतीया	गजेन	गजाभ्याम्	गजैः
चतुर्थी	गजाय	गजाभ्याम्	गजेभ्यः
पञ्चमी	गजात्	गजाभ्याम्	गजेभ्यः
षष्ठी	गजस्य	गजयोः	गजानाम्
सप्तमी	गजे	गजयोः	गजेषु
सम्बोधन	(हे) गज	*	

* संस्कृत सुबन्त पदों के साधारण हिन्दी रूप ।

	एकवचन	द्विवचन
प्रथमा	गजः (गज वा गज ने)	गजौ (दो गज वा गजों ने)
द्वितीया	गजम् (गज वा गज को)	गजौ (दो गज वा गजों को)
तृतीया	गजेन (गज से)	गजाभ्याम् (दो गजों से)
चतुर्थी	गजाय (गज के लिये वा गज को)	गजाभ्याम् (दो गजों के लिये वा गजों को)
पञ्चमी	गजात् (गज से)	गजाभ्याम् (दो गजों से)
षष्ठी	गजस्य (गज का, के, की)	गजयोः (दो गजों का, के, की)
सप्तमी	गजे (गज में, पै, पर)	गजयोः (दो गजों में, पै, पर)
सम्बोधन	हे गज (हे गज)	

	बहुवचन
प्रथमा	गजाः (दो से अधिक गज वा गजों ने)
द्वितीया	गजान् (दो से अधिक गज वा गजों को)
तृतीया	गजैः (दो से अधिक गजों से)
चतुर्थी	गजेभ्यः (दो से अधिक गजों के लिये वा गजों को)
पञ्चमी	गजेभ्यः (दो से अधिक गजों से)
षष्ठी	गजानाम् (दो से अधिक गजों का, के, की)
सप्तमी	गजेषु (दो से अधिक गजों में, पै, पर)

इन संस्कृत विभक्तियों के हिन्दी रूपों को कण्ठ कर लेना चाहिये ।

सभी अकारान्त पुंल्लिङ्ग शब्दों के रूप 'गज' शब्द के समान होते हैं। परन्तु नर, राम आदि शब्दों में णत्वविधान के नियमानुसार तृतीया एकवचन और षष्ठी बहुवचन में 'न्' का 'ण्' हो जाता है, यथा; नरेण, नराणाम्; रामेण, रामाणाम् इत्यादि।

प्रथम (पहला), चरम (अन्तिम), कतिपय (कुछ), अल्प (छोटा), अर्द्ध (आधा), द्वय (दोनों), त्रितय (तीनों), चतुष्टय (चारो) इत्यादि शब्दों के रूप भी 'गज' शब्द के समान ही होते हैं, पर प्रथमा बहुवचन में "अल्पे", "अल्पाः", "प्रथमे" "प्रथमाः" इत्यादि दो दो रूप होते हैं।

द्वितीय और तृतीय के चतुर्थी, पञ्चमी और सप्तमी के एक-वचन में द्वितीयाय-द्वितीयस्मै; द्वितीयात्-द्वितीयस्मात्, द्वितीये-द्वितीयस्मिन् इत्यादि दो दो रूप होते हैं।

टिप्पणी—(N. B.) सूर्य (the sun, सूर्य); चन्द्र (the moon, चन्द्रमा); अनिल (air, वायु); अनल (fire, अग्नि); सागर (the ocean, समुद्र); पर्व्वत (mountain, पहाड़); कर (the hand, a ray of light, tax. an elephant's trunk,—हाथ, किरण, कर, हाथी की सूँड़); पाद (leg, पाँव); कर्ण (ear, कान); केश (hair, केश); अश्व (horse, घोड़ा); बिहग (bird, पक्षी); सिंह (lion, सिंह); व्याघ्र (tiger, बाघ;) मत्स्य (fish, मछली); नख (nail, नह); दन्त (tooth, दाँत); ओष्ठ (lip, ओठ); घट (jar, घड़ा); पट (cloth, कपड़ा); कट (mat, चटाई); रस (juice, रस); शब्द (sound, आवाज़); स्पर्श (touch,); गंध

(smell, महक); अर्थ (wealth, meaning, धन, मानी); ओदन (cooked rice, भात); सूप (दाल); शाक (vegetable, तरकारी साग); बाण (arrow,); चाप (bow); खड्ग (sword, तलवार); पाषाण (stone, पत्थर); कलङ्क (spot, दाग); कलह (quarrel, झगड़ा); वसन्त (spring); ग्रीष्म (summer, गर्मी); क्रोध (anger); मेघ (cloud); दोष (fault); तिल (sesamum); तण्डुल (rice, चावल); कण (piece); दीप (lamp); न्याय (justice, इन्साफ); दण्ड (punishment); आम्र (mango-tree आम); गुण (quality); कूप (well, कुँवा); तड़ाग (tank तालाब); काल (time, समय); ज्वर (fever, बोखार); कोश-कोष (treasure, खजाना); ग्राम (village, गाँव); दर्पण (looking-glass, आइना); जीव (animal); लोभ (greediness); रथ (chariot); वंश (family, bamboo); शकट (cart, गाड़ी); भार (burden); क्रोश (two miles); वर (boon); पक्ष (side); श्रम (labour); श्लोक (verse); समाज (assembly); स्नेह (affection); स्वभाव (nature); जय (victory); वृक्ष (tree, पेड़); स्वर्ग (heaven) इत्यादि अकारान्त पुंल्लिङ्ग शब्दों के रूप 'गज' शब्द के समान होते हैं ।

अभ्यास (Exercise 5.)

(१) हिन्दी या अंग्रेजी में अनुवाद करो (Translate into Hindi or English) ज्वरस्य तापः । जीवानां समूहः । जनकस्य वंशः । स्वभावे भेदः । मनुष्याणां समाजाः । ओदनाय तण्डुलः । श्रमात् खिन्नः । मत्तौ गजौ । शोभनाः तड़ागाः । ग्रामेषु वासः । न्यायेन नृपः । अर्थेन हीनः । क्रोशे विद्यालयः । दीपयोः प्रकाशः ।

(२) संस्कृत में अनुवाद करो (Translate into Sanskrit)—
स्वर्ग में (in heaven) । भार से (by burden) । दो घोड़ों से (by two horses) । मूर्ख को (to a fool) । दो गाँवों में (in two villages) । दरिद्र के लिये (for the poor) । दरिद्रों को (to the poor) । दीपों का (of lamps) । वृक्षों से (पञ्चमी) (from trees) । धन के लिये (for wealth) । (दो से अधिक) हाथी (elephants) । हिमालय पर्वत (the Himalayas) । (दो) कान (two ears) । दाँत (teeth) । चिड़िये (birds) । घड़ों में (in jars) । घड़ों का (of jars) । करों का (of hand) । नर से (तृतीया) (by a man) । राम से (तृतीया) (by Rama) । शरों का (of arrows) । पुत्रों का (of sons) । दो कोशों में (in two kroshas) । ग्रन्थों का (of books) । मूर्ख से (तृतीया) (by a fool) । स्वर्ग से (तृतीया) (by heaven) ।

(३) शुद्ध करो (Correct):—हस्तेण । मूर्खेन । नराण् । वृक्षान् । आम्रेसु । तण्डुलानाम । दण्डेन् । कराभ्याम । दोषेन । ग्रन्थाणम् । दर्पणेण । ज्वरात् ।

ह्रस्व इकारान्त "मुनि" शब्द (Sage)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मुनिः	मुनी	मुनयः
द्वितीया	मुनिम्	मुनी	मुनीन्
तृतीया	मुनिना	मुनिभ्याम्	मुनिभिः
चतुर्थी	मुनये	मुनिभ्याम्	मुनिभ्यः
पञ्चमी	मुनेः	मुनिभ्याम्	मुनिभ्यः

षष्ठी	मुनेः	मुन्योः	मुनीनाम्
सप्तमी	मुनौ	मुन्योः	मुनिषु
सम्बोधन	(हे) मुने		

पति और सखि शब्दों को छोड़कर सब इकारान्त पुंल्लिङ्ग शब्दों के रूप "मुनि" शब्द के समान होते हैं।

N. B.—उदधि (sea, समुद्र); निधि (gem, मणि); व्याधि (disease, रोग); विधि (rule, destiny, भाग्य); गिरि (mountain, पहाड़); पाणि (hand, हाथ); अलि (bee, भौंरा); अतिथि (guest, पाहुन); असि (sword, तलवार); मणि (jewel); अग्नि (fire, आग); बलि (offering, उपहार); रवि (the Sun; सूर्य); ध्वनि (sound, आवाज) इत्यादि इकारान्त पुंल्लिङ्ग शब्दों के रूप "मुनि" के समान होते हैं।

"पति" शब्द (Husband, lord)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पतिः	पती	पतयः
द्वितीया	पतिम्	पती	पतीन्
तृतीया	पत्या	पतिभ्याम्	पतिभिः
चतुर्थी	पत्ये	पतिभ्याम्	पतिभ्यः
पञ्चमी	पत्युः	पतिभ्याम्	पतिभ्यः
षष्ठी	पत्युः	पत्योः	पतीनाम्
सप्तमी	पत्यौ	पत्योः	पतिषु
सम्बोधन	(हे) पते		

किसी अन्य शब्द के साथ समास होने पर पदान्त में स्थित "पति" शब्द का रूप "मुनि" शब्द के समान ही होता है। यथा—श्रीपति (विष्णु); भूपति, नरपति, सेनापति इत्यादि।

"सखि" शब्द (Friend)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सखा	सखायौ	सखायः
द्वितीया	सखायम्	सखायौ	सखीन्
तृतीया	सख्या	सखिभ्याम्	सखिभिः
चतुर्थी	सख्ये	सखिभ्याम्	सखिभ्यः
पञ्चमी	सख्युः	सखिभ्याम्	सखिभ्यः
षष्ठी	सख्युः	सख्योः	सखीनाम्
सप्तमी	सख्यौ	सख्योः	सखिषु
सम्बोधन	(हे) सखे		

अभ्यास (Exercise 6.)

(१) हिन्दी या अंगरेजी में अनुवाद करोः—अतिथीनां सत्कारः। रवेः प्रकाशः। श्रीपतये नमः। पत्युः आदेशः। गिरौ वासः। असिना शिरश्छेदः। कवी। सख्ये स्नेहः। सख्युः उपदेशः। मुनेः आश्रमः।

(२) संस्कृत में अनुवाद करोः—मुनि के दोनों शिष्य (the two students of the sage). अग्नि का ताप (the heat of the fire). व्याधि में संयम (care in disease). नरपति का कर (the tax of the king). दो पतियों में अनुराग (love in two husbands). रवि की किरणें (रश्मि शब्द) (the rays of the sun). लक्ष्मीपति के लिये (को—चतुर्थी) नमस्कारः (salutation to

Lakshmi-pati). कवियों के श्लोक (the verses of the poet). अरि के ऊपर विजय (victory over enemy)

(३) शुद्ध करो (Correct):—मुनिस्य उपदेशः । गिरे वासः । सेनापत्युः संग्रामः । पार्वतीपत्ये नमः । पतौ स्नेहः । सखिना समागमः । हरिस्य सखयः । अतिथाय सत्कारः ।

दीर्घ ईकारान्त पुल्लिंग "सुधी" शब्द (Wise man)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सुधीः	सुधियौ	सुधियः
द्वितीया	सुधियम्	सुधियौ	सुधियः
तृतीया	सुधिया	सुधीभ्याम्	सुधीभिः
चतुर्थी	सुधिये	सुधीभ्याम्	सुधीभ्यः
पञ्चमी	सुधियः	सुधीभ्याम्	सुधीभ्यः
षष्ठी	सुधियः	सुधियोः	सुधियाम्
सप्तमी	सुधियि	सुधियोः	सुधीषु
सम्बोधन	(हे) सुधीः		

सुश्री (beautiful), मन्दधी, हतधी (of dull intellect) इत्यादि दीर्घ "ईकारान्त" पुल्लिङ्ग शब्दों के रूप सुधी शब्द के ऐसे ही होते हैं ।*

---

* दीर्घ ईकारान्त पुल्लिङ्ग "सेनानी" शब्द का रूप भिन्न होता है:-

सेनानी (General)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सेनानीः	सेनान्यौ	सेनान्यः

ह्रस्व उकारान्त पुंल्लिङ्ग "साधु" शब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	साधुः	साधू	साधवः
द्वितीया	साधुम्	साधू	साधून्
तृतीया	साधुना	साधुभ्याम्	साधुभिः
चतुर्थी	साधवे	साधुभ्याम्	साधुभ्यः
पञ्चमी	साधोः	साधुभ्याम्	साधुभ्यः
षष्ठी	साधोः	साध्वोः	साधूनाम्
सप्तमी	साधौ	साध्वोः	साधुषु
सम्बोधन	(हे) साधो		

सभी उकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों के रूप "साधु" शब्द के समान होते हैं।

N. B.—सिन्धु (sea, समुद्र); धातु (metal); भानु (the Sun, सूर्य); प्रभु, विभु (master, मालिक); तरु (tree, वृक्ष); ऋतु (season, मौसिम); इषु (arrow, बाण); बाहु (arm, बाँह); विधु (the moon, चन्द्रमा); वायु (wind, हवा); शिशु (infant, बच्चा)

द्वितीया	सेनान्यम्	सेनान्यौ	सेनान्यः
तृतीया	सेनान्या	सेनानीभ्याम्	सेनानीभिः
चतुर्थी	सेनान्ये	"	सेनानीभ्यः
पञ्चमी	सेनान्यः	"	"
षष्ठी	"	सेनान्योः	सेनान्याम्
सप्तमी	सेनान्याम्	"	सेनानीषु
सम्बोधन	(हे) सेनानीः		

पशु (beast, जानवर); रेणु (dust, धूली); वेणु (bamboo, बाँस) रिपु (enemy, शत्रु); हेतु (cause, कारण); गुरु (teacher) इत्यादि ह्रस्व उकारान्त पुंल्लिङ्ग शब्दों के रूप "साधु" शब्द के समान होते हैं।

ऋकारान्त पुंल्लिङ्ग "दातृ" शब्द (Giver)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	दाता	दातारौ	दातारः
द्वितीया	दातारम्	दातारौ	दातॄन्
तृतीया	दात्रा	दातृभ्याम्	दातृभिः
चतुर्थी	दात्रे	दातृभ्याम्	दातृभ्यः
पञ्चमी	दातुः	दातृभ्याम्	दातृभ्यः
षष्ठी	दातुः	दात्रोः	दातॄणाम्
सप्तमी	दातरि	दात्रोः	दातृषु
सम्बोधन	(हे) दातः		

भ्रातृ, पितृ, जामातृ, (son-in-law), नृ, देवृ (husband's brother) और सव्येष्टृ (Charioteer) इन ऋकारान्त पुंल्लिङ्ग शब्दों को छोड़कर सभी ऋकारान्त पुंल्लिङ्ग शब्दों के रूप 'दातृ' शब्द के समान होते हैं।

N. B.—कर्तृ (agent); क्रेतृ (buyer); धातृ (creator) विधातृ (creator); जेतृ (conqueror); श्रोतृ (hearer, audience) द्रष्टृ (looker); सवितृ (the sun); हन्तृ (killer) इत्यादि तृच् प्रत्ययान्त कृदन्त ऋकारान्त पुंल्लिङ्ग शब्दों के रूप 'दातृ' के समान जानना चाहिये।

ऋकारान्त पुंल्लिङ्ग "भ्रातृ" शब्द (Brother)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	भ्राता	भ्रातरौ	भ्रातरः
द्वितीया	भ्रातरम्	भ्रातरौ	भ्रातॄन्

शेष रूप 'दातृ' के समान होते हैं।

N. B.—पितृ (father, पिता); जामातृ (son-in-law, दामाद); देवृ (husband's brother, देवर); सव्येष्टृ (charioteer, सारथि), नृ (man, मनुष्य), इन ऋकारान्त पुंल्लिङ्ग शब्दों के रूप "भ्रातृ" शब्द के समान प्रथमा और द्वितीया में "दातृ" शब्द से भिन्न होते हैं। केवल "नृ" शब्द के षष्ठी बहुवचन में 'नृणाम् और नॄणाम्' ये दोनों रूप होते हैं।

ओकारान्त "गो" शब्द (Cow)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	गौः	गावौ	गावः
द्वितीया	गाम्	गावौ	गाः
तृतीया	गवा	गोभ्याम्	गोभिः
चतुर्थी	गवे	गोभ्याम्	गोभ्यः
पञ्चमी	गोः	गोभ्याम्	गोभ्यः
षष्ठी	गोः	गवोः	गवाम्
सप्तमी	गवि	गवोः	गोषु
सम्बोधन	(हे) गौः		

सभी ओकारान्त पुंल्लिङ्ग शब्दों के रूप गो शब्द के समान होते हैं।

अभ्यास (Exercise 7.)

(१) हिन्दी या अंग्रेजी में अनुवाद करोः—पशूनां पतिः। शत्रुणा। गवोः। ना। शम्भोः। क्रेतारौ। कर्त्तुः। त्रिभुवनविधातुः। गवि। गवां पतिः। प्रभोः अनुग्रहः। क्रुद्धः पिता। श्रोतारः। देवः।

(२) संस्कृत में अनुवाद करोः—पिता को (to the father)। साधु में (in a saint)। बुद्धिमान लोग (सुधी)। the learned)। दामाद का भाई (the brother of son-in law)। मनुष्यों का (use नृ)। (of man) दो साधुओं से (तृतीया) (by saints)। देवर का पिता (the father of husband's brother)। पशुओं का स्वामी (the lord of beasts) सुननेवालों का कोलाहल (the noise of the hearers) देखनेवाले (the seers)

(३) शुद्ध करोः—जगदीशस्य पितारम्। साधवाय नमः। सुधिना समागमः। दयालुस्य नृस्य। भ्रातृसु स्नेहः। गोस्य दोहः।

स्त्रीलिंग।

आकारान्त "लता" शब्द (Creeper)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	लता	लते	लताः
द्वितीया	लताम्	लते	लताः
तृतीया	लतया	लताभ्याम्	लताभिः
चतुर्थी	लतायै	लताभ्याम्	लताभ्यः
पञ्चमी	लतायाः	लताभ्याम्	लताभ्यः
षष्ठी	लतायाः	लतयोः	लतानाम्
सप्तमी	लतायाम्	लतयोः	लतासु
सम्बोधन	(हे) लते		

आकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप "लता" शब्द के समान होते हैं—यथाः—

N. B.—दशा (state, हालत); आशा (hope, उम्मीद); तृष्णा (desire, इच्छा); विद्या (learning); आज्ञा (order); शिखा (flame, लहर); जटा (matted locks); रेखा (line, लकीर); माला (garland); प्रभा (light); शोभा (beauty); सभा (court, meeting); सेवा (service); जाया (wife, स्त्री); कन्या (daughter) इत्यादि आकारात स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप 'लता' के समान होते हैं।

अम्बा (mother) शब्द के सभी रूप 'लता' के समान होते हैं पर सम्बोधन के एकवचन में "अम्ब" रूप होता है।

द्वितीया (second, दूसरी); तृतीया (third, तीसरी) शब्दों के रूप चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी और सप्तमी एकवचन में क्रमशः द्वितीयायै, द्वितीयस्यै; द्वितीयायाः, द्वितीयस्याः; द्वितीयायाः, द्वितीयस्याः; और द्वितीयायाम्, द्वितीयस्याम् इत्यादि दो दो रूप होते हैं।

अभ्यास (Exercise 8.)

(१) हिन्दी या अंग्रेजी में अनुवाद (Translate into Hindi or English) करोः—विद्यायाः शोभा। गङ्गायाः पूजा। रमया। वृक्षाणां शाखासु। नृपतीनां सभायाम्। माले। गङ्गे। कन्याभिः। प्रजाः। दुस्त्यजा तृष्णा। विशाला इच्छा। कान्तायै चिन्ता।

(२) संस्कृत में अनुवाद (Translate into Sanskrit) करोः—भूपति की सभा में (in the council of the king)। पति की दया से (by the kindness of husband)। देवताओं ने (the gods)। गुरुओं की आज्ञा में (in the order of teachers) कन्याएँ (girls)। व्यथा से (तृतीया) (by pain)। विद्या से

विनय (politeness by learning)। विद्याओं की चर्चा (the talk of learning)। भार्य्या के लिये दया (pity for wife)। वृक्षों की छाया में (in shadow of trees)। पिता की सेवा से (तृतीया) (by the service of the father).

(३) शुद्ध करो (Correct):—मालास्य गन्धः। शखात् पतितः। सेनेन सहितः नृपतिः। प्रजाषु दया। हे अम्बे। गुरोः आज्ञान् पालय। भार्यान् रक्षति। निर्धनस्य सेवैः किम्। विष्णोः पूजात्।

ह्रस्व इकारान्त स्त्रीलिङ्ग "मति" शब्द (Intellect)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मतिः	मती	मतयः
द्वितीया	मतिम्	मती	मतीः
तृतीया	मत्या	मतिभ्याम्	मतिभिः
चतुर्थी	मत्यै, मतये	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
पञ्चमी	मत्याः, मतेः	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
षष्ठी	मत्याः, मतेः	मत्योः	मतीनाम्
सप्तमी	मत्याम्, मतौ	मत्योः	मतिषु
सम्बोधन	(हे) मते*		

---

*ह्रस्व इकारान्त पुंलिङ्ग 'मुनि' शब्द और स्त्रीलिङ्ग 'मति' शब्द के रूप में जहाँ जहाँ भेद होता है उसे ध्यान में रखकर, रूप कण्ठस्थ करना चाहिये। जैसे—

द्वितीया बहुवचन—'मुनि' का 'मुनीन्'
'मति' का 'मतीः'

N. B.—गति (movement), बुद्धि (intellect), रति (love, प्रेम), उन्नति (advancement), कृति (action, काम), स्तुति (praise), श्रुति (the Vedas, वेद), स्मृति (memory), धृति (courage, धैर्य), प्रणति, (bowing down, प्रणाम), सृष्टि (creation), अनुरक्ति (affection, अनुराग), वृष्टि (rain), आसक्ति (attachment), विपत्ति (adversity) आदि 'क्ति' प्रत्ययान्त कृदन्तीय शब्द सभी स्त्रीलिंग हैं और इनके रूप 'मति' शब्द के समान होते हैं।

इनके अतिरिक्त—भूमि (the land, the earth), ओषधि (medicine), अंगुलि (finger), धूलि (dust), कृषि (agriculture), पंक्ति (line), तिथि (date) आदि सभी ह्रस्व इकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के रूप "मति" शब्द के समान होते हैं।

अभ्यास (Exercise 9.)

(१) हिन्दी या अंग्रेजी में अनुवाद करो (Translate into Hindi or English):—विपत्तौ धृतिः। रात्रेः समयः। ईश्वरस्य गतिः। बुद्धेः हानिः। जात्या ब्राम्हणः। मेघात् वृष्टिः। मत्याः विपर्ययः। रात्र्यां गृहे वासः। साधूनां पङ्क्तौ।

(२) संस्कृत में अनुवाद करो (Translate into Sanskrit):—ज्वर की ओषधियाँ (the medicines of fever), मूर्त्तियाँ (the idols), दो अंगुलियाँ (two fingers), जाति में (in the

---

तृतीया एकवचन—'मुनि' का 'मुनिना'
'मति' का 'मत्या'

चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी और सप्तमी एकवचन में—मुनि के रूप के अतिरिक्त क्रमशः 'मत्यै, मत्याः, और मत्याम्' शेष मुनिवत् (Compare and contrast)

community), सृष्टि का कर्ता (the doer of the creation), रात में (in the night), ईश्वर की दया से मुक्ति (Salvation by the grace of God), उन्नति के उपाय (measures for improvement)

(३) शुद्ध करो (Correct):—बुद्धिस्य प्रभावेण । मुक्तिना किम्। सम्पत्तीन् लभते। मूर्त्तिस्य पूजा। धूलिना मलिनः। देवतार्णगतीन्। स्वशक्तिना धनलाभः।

दीर्घ ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग "नदी" शब्द (River)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	नदी	नद्यौ	नद्यः
द्वितीया	नदीम्	नद्यौ	नदीः
तृतीया	नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः
चतुर्थी	नद्यै	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
पञ्चमी	नद्याः	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
षष्ठी	नद्याः	नद्योः	नदीनाम्
सप्तमी	नद्याम्	नद्योः	नदीषु
सम्बोधन	(हे) नदि		

N. B.—व्याघ्री (tigress), सिंही (lioness), मृगी (female antilope), शूकरी (sow), हंसी (duck), सुन्दरी (beautiful female), कुमारी (maid), पत्नी (wife) इत्यादि 'ङीप्' (ई) प्रत्ययान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द और अंगुली (finger), श्रेणी (line), अटवी (forest, वन), पृथ्वी, पृथिवी (the earth), वीथी (road), रजनी (night), मञ्जरी (blossom, मञ्जर),

ओषधी (medicine), आदि दीर्घ ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप 'नदी' शब्द के समान होते हैं।*

परन्तु अवी (रजस्वला स्त्री), तरी (boat, नाव), तंत्री (lute, वीणा) और लक्ष्मी (goddess of wealth) के प्रथमा—एकवचन में विसर्ग सहित रूप होता है—जैसे—लक्ष्मीः, तंत्रीः, तरीः, अवीः ।

दीर्घ ईकारान्त स्त्रीलिंग "श्री" शब्द (Beauty)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	श्रीः	श्रियौ	श्रियः
द्वितीया	श्रियम्	श्रियौ	श्रियः
तृतीया	श्रिया	श्रीभ्याम्	श्रीभिः
चतुर्थी	श्रियै, श्रिये	श्रीभ्याम्	श्रीभ्यः
पञ्चमी	श्रियाः, श्रियः	श्रीभ्याम्	श्रीभ्यः
षष्ठी	श्रियाः, श्रियः	श्रियोः	श्रीणाम्, श्रियाम्
सप्तमी	श्रियाम्, श्रियि	श्रियोः	श्रीषु
सम्बोधन	(हे) श्रीः		

ह्री (shame, लज्जा), धी (intellect, बुद्धि) और भी (fear, डर) के रूप 'श्री' शब्द के समान होते हैं।

---

* संस्कृत में दीर्घ ईकारान्त शब्द प्रायः स्त्रीलिङ्ग ही होते हैं; इस लिये उनका रूप नदी शब्दवत् ही होता है।

दीर्घ ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग "स्त्री" शब्द (Woman)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	स्त्री	स्त्रियौ	स्त्रियः
द्वितीया	स्त्रियम्, स्त्रीम्	स्त्रियौ	स्त्रियः, स्त्रीः
तृतीया	स्त्रिया	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभिः
चतुर्थी	स्त्रियै	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभ्यः
पञ्चमी	स्त्रियाः	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभ्यः
षष्ठी	स्त्रियाः	स्त्रियोः	स्त्रीणाम्
सप्तमी	स्त्रियाम्	स्त्रियोः	स्त्रीषु
सम्बोधन	(हे) स्त्रि		

अभ्यास (Exercise 10.)

(१) हिन्दी या अंग्रेजी में अनुवाद करो (Translate into Hindi or English):—अटव्यः । दास्याः पुत्रः । नदीषु गङ्गा । जनन्यः । सिंहोः । स्त्रियाः शोभा । श्रियः इच्छा । ग्रामीणां स्त्रीम् । काश्याः वीथीषु । श्रियै ।

(२) संस्कृत में अनुवाद करो (Translate into Sanskrit):—नदियाँ (rivers), स्त्रियों में (in women) पूजनीय माताएँ (respectable mothers), पार्वती से (from Parvati), स्त्रियों को (to women), स्त्रियों के लिये (for women), कुमारियों की शोभा (the beauty of maids), वशिष्ठ की स्त्री अरुन्धती (Arundhati, the wife of Vashistha)

(३) शुद्ध करो (Correct)—विपुला लक्ष्मी । नारीनां शोभा । स्त्रिये स्नेहः । कामिनीस्य श्रीम् । नगरीत् वहिः । वनस्य व्याघ्रयः । नारीसु रम्भा । सावित्र्यः पतिः ।

ह्रस्व उकारान्त स्त्रीलिङ्ग "धेनु" शब्द (Cow)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	धेनुः	धेनू	धेनवः
द्वितीया	धेनुम्	धेनू	धेनूः
तृतीया	धेन्वा	धेनुभ्याम्	धेनुभिः
चतुर्थी	धेन्वै, धेनवे	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
पञ्चमी	धेन्वाः, धेनोः	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
षष्ठी	धेन्वाः, धेनोः	धेन्वोः	धेनूनाम्
सप्तमी	धेन्वाम्, धेनौ	धेन्वोः	धेनुषु
सम्बोधन	(हे) धेनो*		

N. B.—चञ्चु (beak, चोंच), तनु (body, देह), रेणु (dust, धूल), रज्जु (string, डोरी), स्नायु (nerve, नस) आदि ह्रस्व उकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप 'धेनु' शब्द के समान होते हैं।

दीर्घ ऊकारान्त स्त्रीलिंग "वधू" शब्द
(Daughter-in-law)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	वधूः	वध्वौ	वध्वः

*ह्रस्व उकारान्त पुंल्लिग 'साधु' शब्द और स्त्रीलिंग 'धेनु' शब्द के रूपों में समानता और भेद को देखो और रूप कण्ठस्थ करो। जैसे— द्वितीया बहुवचन में—साधु का 'साधून्' पर धेनु का, 'धेनूः' तृतीया एकवचन में साधु का 'साधुना' पर धेनु का 'धेन्वा' चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी और सप्तमी एकवचन में—साधु के रूपों के अतिरिक्त क्रमशः धेनु का धेन्वै, धेन्वाः, धेन्वाः, धेन्वाम्।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
द्वितीया	वधूम्	वध्वौ	वधूः
तृतीया	वध्वा	वधूभ्याम्	वधूभिः
चतुर्थी	वध्वै	वधूभ्याम्	वधूभ्यः
पञ्चमी	वध्वाः	वधूभ्याम्	वधूभ्यः
षष्ठी	वध्वाः	वध्वोः	वधूनाम्
सप्तमी	वध्वाम्	वध्वोः	वधूषु
सम्बोधन	(हे) वधु		

दीर्घ ऊकारान्त स्त्रीलिङ्ग "भ्रू" शब्द (Eye-brow)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	भ्रूः	भ्रुवौ	भ्रुवः
द्वितीया	भ्रुवम्	भ्रुवौ	भ्रुवः
तृतीया	भ्रुवा	भ्रूभ्याम्	भ्रूभिः
चतुर्थी	भ्रुवै, भ्रुवे	भ्रूभ्याम्	भ्रूभ्यः
पञ्चमी	भ्रुवाः, भ्रुवः	भ्रूभ्याम्	भ्रूभ्यः
षष्ठी	भ्रुवाः, भ्रुवः	भ्रुवोः	भ्रूणाम्, भ्रुवाम्
सप्तमी	भ्रुवाम्, भ्रुवि	भ्रुवोः	भ्रूषु
सम्बोधन	(हे) भ्रूः		

N. B.—श्वश्रू (mother-in-law, सास), चमू (army, सेना), चञ्चू (beak, चोंच) तनू (body, देह), प्रसू (mother, माता) आदि ऊकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप 'वधू' शब्द के समान होते हैं।

परन्तु 'भू' (earth, पृथ्वी) और सुभ्रु (woman having

beautiful eye-brow) के रूप 'भ्रू' शब्द के समान होते हैं। 'सुभ्रू' के सम्बोधन के एकवचन में 'सुभ्र' होता है।

ऋकारान्त स्त्रीलिंग "मातृ" शब्द (Mother)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	माता	मातरौ	मातरः
द्वितीया	मातरम्	मातरौ	मातॄः
तृतीया	मात्रा	मातृभ्याम्	मातृभिः
चतुर्थी	मात्रे	मातृभ्याम्	मातृभ्यः
पञ्चमी	मातुः	मातृभ्याम्	मातृभ्यः
षष्ठी	मातुः	मात्रोः	मातॄणाम्
सप्तमी	मातरि	मात्रोः	मातृषु
सम्बोधन	(हे) मातः		

केवल 'स्वसृ' (sister) शब्द को छोड़कर सभी ऋकारान्त स्त्री· लिंग शब्दों के रूप 'मातृ' शब्द के समान होते हैं। यथा—दुहितृ (daughter, लड़की), यातृ (husband's brother's wife) और ननान्दृ husband's sister, ननद)※

ऋकारान्त स्त्रीलिङ्ग "स्वसृ" शब्द (Sister)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	स्वसा	स्वसारौ	स्वसारः
द्वितीया	स्वसारम्	स्वसारौ	स्वसॄः

शेष 'मातृ' के समान।

अभ्यासार्थ

स्वरान्त पुंल्लिङ्ग और स्त्रीलिंग सुबन्त पदों का अनुवाद ।

यज्ञात् पर्जन्यः (यज्ञ से वृष्टि, rain from sacrifice); असन्तुष्टाः द्विजाः (असन्तुष्ट ब्राह्मण—unsatisfied Brahmanas); नदीनां पतिः सागरः (नदियों का स्वामी समुद्र—ocean, the husband of rivers); साधोः समागमः (साधु का समागम, company of the saint); पिता धर्मः, पिता स्वर्गः (पिता धर्म–हैं, पिता स्वर्ग–हैं; father is virtue, father is heaven); पितुः गरीयसी आज्ञा (पिता की भारी आज्ञा, onerous order of the father); मुनिषु कपिलो मुनिः (मुनियों में कपिल मुनि, the sage, kapila among sages); सुधीषु श्रद्धा (पण्डितों में श्रद्धा, faith in the learned); क्लेशानाम् अपहर्त्तारम् (दुःखों के हरण करने वाले को, to the remover of miseries); गवाम् पतिः (गायों का स्वामी, the lord of cows); पशूनां पतिः (जीवों का पति, the lord of beings); स्नेहमयी माता (प्रेम पूर्ण माता, an affectionate mother); शिवस्य पार्वती पत्नी (शिव की पार्वती स्त्री; Parvati, the wife of Shiva); लक्ष्मीः सागरकन्यका (सागर की कन्या लक्ष्मी; Lakshmi, the daughter of the ocean); तरूणां शाखाः (वृक्षों की शाखाओं को to the branches of trees); स्त्रीणां प्रकृतिः लज्जा (स्त्रियों का स्वभाव लज्जा; bashfulness, the nature of women); धेनूनां पालकः गोपः (गायों का पालक ग्वाला; a cow-herd, the protector of cows); पतिः देवः कुलस्त्रीणाम् (कुल स्त्रियों का देवता पति हैं; husband, the deity of the women of a noble family); भ्रुवां पङ्क्तिः (भौंहों की पंक्ति, the line of eye-brows); भ्रुवः छाया

(पृथ्वी की छाया, the shadow of the earth); हा पितः, क्वासि हे सुभ्रु (हा पिता, कहाँ हो, हे सुन्दर भौंह वाली !) O father, where are you, O lady of beautiful eye-brow); मातॄः कोपसमाविष्टाः (क्रोध से भरी माताओं को, to mothers, full of anger); नारीषु सीता भुवि सर्वमान्या (स्त्रियों में सीता पृथ्वी में सर्वमान्य हैं; (among women Sita is respected by all in the world); अग्नेः शिखा (अग्नि की ज्वाला, the flame of fire); श्रियः पतिः (लक्ष्मी के स्वामी; the husband of the Goddess of wealth); श्रुतिः विभिन्ना स्मृतयः विभिन्नाः (वेद भिन्न हैं, स्मृतियाँ भिन्न हैं, the Veda is different, the scriptures are different); निद्रया परिपीड़ितः (निद्रा से पीड़ित, troubled by sleep); पृथिव्याः ईश्वरः नृपः (पृथिवी का ईश्वर राजा; king, the god of the earth); सम्पत्तीनां प्रदातारम् (सम्पत्तियों के देने वाले को, to the giver of riches).

अभ्यास (Exercise 11.)

(१) Decline (रूप लिखो):—

मुनि and मति (द्वितीया बहुवचन; तृतीया एकवचन; चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी और सप्तमी एकवचन)।

पति and श्रीपति (तृतीया एकवचन; चतुर्थी, पञ्चमी, और षष्ठी एकवचन)।

दातृ and पितृ (प्रथमा और द्वितीया)।

साधु and धेनु (द्वितीया बहुवचन; तृतीया एकवचन; चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी और सप्तमी एकवचन)।

लक्ष्मी and नदी (प्रथमा एकवचन, चतुर्थी, पञ्चमी)। स्वसृ and दुहितृ (प्रथमा और द्वितीया)।

— श्री and स्त्री (द्वितीया एकवचन और बहुवचन; चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी और सप्तमी एकवचन)।

स्वरान्त नपुंसकलिंग।

अकारान्त "फल" शब्द (Fruit)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	फलम्	फले	फलानि
द्वितीया	फलम्	फले	फलानि

शेष विभक्तियों में अकारान्त पुल्लिङ्ग "गज" शब्द के समान रूप होते हैं।

N. B.—ज्ञान (knowledge), धन (wealth), वन (forest) दिन (day), पुष्प (flower), जल (water), अन्न (grain) पत्र (leaf), पात्र, (pot, बर्त्तन), क्षेत्र (field, खेत), मुख (mouth, मुह), सुख (happiness), दुःख (misery), पुण्य (virtue) पाप (vice), अपत्य (offspring), मित्र (friend), कलत्र (wife, स्त्री), कारण (cause), बल (strength) आदि शब्द और, गमन (act of going, जाना), दर्शन (act of seeing, देखना), श्रवण (act of hearing, सुनना), चलन (act of going, चलना), पान (act of drinking, पीना) आदि 'अनट्' प्रत्ययान्त भाववाचक शब्द, सभी अकारान्त नपुंसकों के रूप 'फल' शब्द के समान होते हैं।

अभ्यास (Exercise 12.)

(१) हिन्दी या अंग्रेजी में अनुवाद करो (Translate into Hindi or English):—दुःखस्य मूलानि। नारीणां भूषणं लज्जा। सुखानि, दुःखानि। पुष्पे। पात्रे। व्याघ्रात् भयम्। पक्वानि फलानि। बालानां रोदनं बलम्।

(२) संस्कृत में अनुवाद करो (Translate into Sanskrit):—पत्र, पुष्प, फल और जल (leaf, flower, fruit and water), जंगल (forest), मुँह (mouth), सुख के लिये (for happiness), (दो) दिन (two days), अन्न से (from grain), भय से (from fear).

(३) शुद्ध करो (Correct):—मिष्टान् फलान् । दानेण पुण्यः । शरीरः व्याधि-मन्दिरः । घनः वनः । शोभनाः क्षेत्रः ।

ह्रस्व इकारान्त नपुंसक "वारि" शब्द (Water)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	वारि	वारिणी	वारीणि
द्वितीया	वारि	वारिणी	वारीणि
तृतीया	वारिणा	वारिभ्याम्	वारिभिः
चतुर्थी	वारिणे	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
पञ्चमी	वारिणः	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
षष्ठी	वारिणः	वारिणोः	वारीणाम्
सप्तमी	वारिणि	वारिणोः	वारिषु
सम्बोधन	(हे) वारे, वारि		

दधि (curd, दही), अस्थि (bone, हड्डी), सक्थि (thigh, जंघा) और अक्षि (eye, आँख) शब्दों को छोड़ कर सभी ह्रस्व इकारान्त नपुंसक शब्दों के रूप वारि शब्द के समान होते हैं ।*

* ह्रस्व इकारान्त पुंलिङ्ग, 'मुनि' और स्त्रीलिङ्ग 'मति' के रूपों के साथ नपुंसक 'वारि' के रूपों की तुलना करके रूप कण्ठस्थ करो ।

ह्रस्व इकारान्त नपुंसक "दधि" शब्द (Curd)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	दधि	दधिनी	दधीनि
द्वितीया	दधि	दधिनी	दधीनि
तृतीया	दध्ना	दधिभ्याम्	दधिभिः
चतुर्थी	दध्ने	दधिभ्याम्	दधिभ्यः
पञ्चमी	दध्नः	दधिभ्याम्	दधिभ्यः
षष्ठी	दध्नः	दध्नोः	दध्नाम्
सप्तमी	दध्नि, दधिनि	दध्नोः	दधिषु
सम्बोधन	(हे) दधे, दधि		

अस्थि, सक्थि और अक्षि शब्दों के रूप दधि के समान होते हैं।

ह्रस्व उकारान्त नपुंसक "मधु" शब्द (Honey)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मधु	मधुनी	मधूनि
द्वितीया	मधु	मधुनी	मधूनि
तृतीया	मधुना	मधुभ्याम्	मधुभिः
चतुर्थी	मधुने	मधुभ्याम्	मधुभ्यः
पञ्चमी	मधुनः	मधुभ्याम्	मधुभ्यः
षष्ठी	मधुनः	मधुनोः	मधूनाम्
सप्तमी	मधुनि	मधुनोः	मधुषु
सम्बोधन	(हे) मधो, मधु		

N. B.—वस्तु (thing, चीज), अम्बु (water, जल), अश्रु (tear, आँसू), जानु (knee, घुठना), दारु (wood, लकड़ी), सानु (table-land, चट्टान) आदि सभी ह्रस्व उकारान्त नपुंसक शब्दों के रूप 'मधु' शब्द के समान होते हैं ।*

अभ्यासार्थ अनुवाद (Translation)

मिष्टानि फलानि (sweet fruits, मीठे फल)। विपुलंधनम् (immense wealth, बहुत धन)। स्वादु जलं (वारि, अम्बु—sweet water, स्वादिष्ट पानी) । दृध्नः भक्षणम् (the eating of curd, दही का खाना) । दधिनि घृतम् (ghee in curd, दही में घी), बहूनि मित्राणि (many friends, बहुत मित्र)। विस्तीर्णं क्षेत्रम् (spacious field, विस्तृत खेत)। अक्ष्णा काणः (blind of one eye, एक आँख का अन्धा) । दुग्धं पानं पानम् (milk is a real drink, दूध-ही असल-पान है) । अश्वैः यानम् (journey by horses, घोड़ों (से)—के द्वारा-यात्रा) । जीर्णानि वस्त्राणि (old clothes, पुराने कपड़े) । औषधं जाह्नवीतोयम् (the Ganges' water, a medicine, गङ्गा जल औषधि-है)। उज्वलं दुकूलम् (white upper garment, उजला दुपट्टा) । दुःखानि च सुखानि च (miseries and happiness, दुःख और सुख)। अपुत्रस्य गृहं शून्यम् (the house of a sonless man is empty, अपुत्र का घर सूना)।

अभ्यास (Exercise 13.)

(१) Decline (रूप लिखो):—

दधि (चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी और सप्तमी एक वचन) । मधु (प्रथमा और द्वितीया) ।

---

* ह्रस्व उकारान्त पुंल्लिंग 'साधु' और स्त्री लिंग 'धेनु' के रूपों के साथ नपुंसक 'मधु' शब्दों की तुलना कर के रूप कण्ठस्थ करो ।

(२) हिन्दी या अंग्रेजी में अनुवाद करो (Translate into Hindi or English):—

नदीनां जलानि । मधुरं मधु । जानुनी । अक्ष्णा । स्वादु दधि । शून्यात् गृहात् । सानूनि । अस्थ्ना । अक्षि ।

(३) संस्कृत में अनुवाद करो (Translate into Sanskrit):—

घने जंगलों को (to the dense forests). स्वादिष्ट फलों को (to the sweet fruits). मीठा दूध (sweet milk). आँख से (with an eye). दही में (in milk). मधु में (in honey).

(३) शुद्ध करो (Correct):—

वारेः स्वादः । मधून् । दधौ घृतः । निष्पृहस्यतृणः लोकम् । अक्षेः अश्रुणि । सानोः गन्धम् । भग्नम् अस्थिम् । सुन्दरो नेत्रः । गृहानाम् वस्तवः ।

व्यञ्जनान्त शब्द ।

पुल्लिङ्ग

जकारान्त पुंल्लिंग "वणिज्" (Merchant)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	वणिक्	वणिजौ	वणिजः
द्वितीया	वणिजम्	वणिजौ	वणिजः
तृतीया	वणिजा	वणिग्भ्याम्	वणिग्भिः
चतुर्थी	वणिजे	वणिग्भ्याम्	वणिग्भ्यः
पञ्चमी	वणिजः	वणिग्भ्याम्	वणिग्भ्यः
षष्ठी	वणिजः	वणिजोः	वणिजाम्
सप्तमी	वणिजि	वणिजोः	वणिक्षु
सम्बोधन	(हे) वणिक्		

N. B.—हुतभुज् (fire, अग्नि), ऋत्विज् (family-priest, पुरोहित), भूभुज् (king, राजा) इत्यादि ज्कारान्त पुंल्लिंग तथा रुज् disease, रोग), स्रज् (garland, माला) आदि जकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के रूप 'वणिज्' के समान होते हैं।

परन्तु देवराज् (Indra, इन्द्र), परिव्राज् (mendicant, संन्यासी), विराज् splendour), विश्वसृज् (creator of the Universe, ब्रह्मा) आदि शब्दों के रूप 'सम्राज्' के समान होते हैं। 'विश्वसृज्' के रूप 'वणिज्' के समान भी होते हैं।

पुंल्लिंग "सम्राज्" शब्द (Emperor.)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सम्राट्	सम्राजौ	सम्राजः
द्वितीया	सम्राजम्	सम्राजौ	सम्राजः
तृतीया	सम्राजा	सम्राड्भ्याम्	सम्राड्भिः
चतुर्थी	सम्राजे	सम्राड्भ्याम्	सम्राड्भ्यः
पञ्चमी	सम्राजः	सम्राड्भ्याम्	सम्राड्भ्यः
षष्ठी	सम्राजः	सम्राजोः	सम्राजाम्
सप्तमी	सम्राजि	सम्राजोः	सम्राट्सु
सम्बोधन	(हे) सम्राट्		

अभ्यास (Exercise 15.)

(१) हिन्दी या अंगरेजी में अनुवाद करो (Translate into Hindi or English):—भूभुजाम् आज्ञा। वणिजोः सम्पत्तयः। रुजा पीडितः। स्रक्षु कुशलः। ऋत्विजि भक्तिः। वृद्धः परिव्राट्। सम्राड्भ्यः।

(२) संस्कृत में अनुवाद करो (Translate into Sanskrit):— सौदागरों के धन (the riches of the merchants). सौदागरों में युद्ध (quarrel among merchants). अग्नि (हुतभुज्) की शिखाओं से (by the flames of fire). सन्यासियों के लिये भोजन (food for mendicants). फूलों की माला (स्रज् the garland of flowers.)

(३) शुद्ध करो (Correct):—सम्राटस्य आज्ञा। वणिकानां कलहः। सम्राजे भक्तिः। वृद्धाः परिव्राजाः। शोभना स्रक्। कस्विड्भ्यः दानम्।

तकारान्त पुल्लिंग "भूभृत्" शब्द

(King, Mountain)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	भूभृत्	भूभृतौ	भूभृतः
द्वितीया	भूभृतम्	भूभृतौ	भूभृतः
तृतीया	भूभृता	भूभृद्भ्याम्	भूभृद्भिः
चतुर्थी	भूभृते	भूभृद्भ्याम्	भूभृद्भ्यः
पञ्चमी	भूभृतः	भूभृद्भ्याम्	भूभृद्भ्यः
षष्ठी	भूभृतः	भूभृतोः	भूभृताम्
सप्तमी	भूभृति	भूभृतोः	भूभृत्सु
सम्बोधन	(हे) भूभृत्		

N. B.—ग्रन्थकृत् (the writer of the book, ग्रन्थकार); विश्वजित् (the conqueror of the world, विश्व को जीतने वाला), दिनकृत् (the sun, सूर्य), विपश्चित् (a learned man, विद्वान्)

परभृत् (cuckoo, कोयल), शशभृत् (the moon, चन्द्रमा), बृहत् (large, बड़ा), तनूनपात् (fire, अग्नि), महीक्षित् (king, राजा) इत्यादि तकारान्त पुल्लिंग शब्द तथा तडित् (lightning, बिजली), सरित् (river, नदी), योषित् (woman, स्त्री), विद्युत् (lightning, बिजली) आदि स्त्रीलिंग शब्दों के रूप 'भूभृत्' शब्द के समान होते हैं।

"श्रीमत्" शब्द (Fortunate)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	श्रीमान्	श्रीमन्तौ	श्रीमन्तः
द्वितीया	श्रीमन्तम्	श्रीमन्तौ	श्रीमतः
तृतीया	श्रीमता	श्रीमद्भ्याम्	श्रीमद्भिः
चतुर्थी	श्रीमते	श्रीमद्भ्याम्	श्रीमद्भ्यः
पञ्चमी	श्रीमतः	श्रीमद्भ्याम्	श्रीमद्भ्यः
षष्ठी	श्रीमतः	श्रीमतोः	श्रीमताम्
सप्तमी	श्रीमति	श्रीमतोः	श्रीमत्सु
सम्बोधन	(हे) श्रीमन्		

N. B.—बुद्धिमत् (wise,), धीमत् (intelligent, बुद्धिमान्), मतिमत् (intelligent, बुद्धिमान्), बन्धुमत् (having kinsmen, बन्धु वाला), अंशुमत् (the sun, सूर्य), भानुमत् (luminous, किरणवाला), सानुमत् (mountain, पर्वत), आयुष्मत् (long-living, चिरजीवी)। धनुष्मत् (archer, धनुर्धारी) आदि 'मत्' प्रत्ययान्तशब्द तथा धनवत् (rich, धनी), ज्ञानवात् (wise, ज्ञानी), विद्यावत् (learned, विद्वान्) तावत् (as much, उतना), यावत् (as much, जितना), कियत् (how much, कितना), नभस्वत् (air, वायु), भगवत् (adorable,

पूजनीय), विवस्वत् (the sun, सूर्य) आदि 'वत्' प्रत्ययान्त शब्द और कृतवत् (done, किया), ज्ञातवत् (known, जाना), दृष्टवत् (seen, देखा), श्रुतवत् (heard, सुना), उक्तवत् (spoken, कहा) आदि 'तवत्' प्रत्ययान्त शब्दों के रूप 'श्रीमत्' के समान होते हैं। ❀

तकारान्त पुंल्लिंग "गायत्" शब्द (Singing)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	गायन्	गायन्तौ	गायन्तः
द्वितीया	गायन्तम्	गायन्तौ	गायतः
तृतीया	गायता	गायद्भ्याम्	गायद्भिः
चतुर्थी	गायते	गायद्भ्याम्	गायद्भ्यः
पञ्चमी	गायतः	गायद्भ्याम्	गायद्भ्यः
षष्ठी	गायतः	गायतोः	गायताम्
सप्तमी	गायति	गायतोः	गायत्सु
सम्बोधन	(हे) गायन्		

N. B.—भवत् (being, होता हुआ), गच्छत् (going, जाता हुआ), कुर्व्वत् (doing, करता हुआ), इच्छत् (wishing, चाहता हुआ), तिष्ठत् (standing, खड़ा होता हुआ), जानत् (knowing, जानता हुआ), पश्यत् (seeing, देखता हुआ), धावत् (running, दौड़ता हुआ), नृत्यत् (dancing, नाचता हुआ), करिष्यत् (about

---

❀ 'धनवान्' 'श्रीमान्' आदि शब्द व्यञ्जनान्त 'धनवत्' और 'श्रीमत्' आदि संस्कृत शब्दों की प्रथमाविभक्ति के रूप हैं। इन्हें कभी विद्यार्थी अकारान्त 'धनवान' श्रीमान' आदि समझ कर भूल न करें।

'भवत्' (thou, आप) का रूप भी 'श्रीमत्' के समान "भवान्, भवन्तौ, भवन्तः" इत्यादि होते हैं।

to do, करने वाला), यास्यत् (about to go, जाने वाला), दास्यत् about to give, देने वाला), गमिष्यत् (about to go, जाने वाला) आदि शतृ (अत्) और स्यतृ (स्यत्) प्रत्ययान्त शब्दों (present and future participles) के रूप "गायत्" शब्द के समान होते हैं।

परन्तु, जाग्रत् (being awake, जागता हुआ), शासत् governing, शासन करता हुआ), ददत् (giving, देता हुआ) दधत् (holding, धारण करता हुआ), बिभ्रत् (passessing, धारण करता हुआ) आदि शब्दों के रूप शतृ (अत्) प्रत्ययान्त होने पर भी "भूभृत्" के समान होते हैं, अर्थात्, "जाग्रत्, जाग्रतौ, जाग्रतः; ददत्, ददतौ, ददतः" इत्यादि ही होते हैं।

"महत्" शब्द (Great)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	महान्	महान्तौ	महान्तः
द्वितीया	महान्तम्	महान्तौ	महतः

शेष "गायत्" के समान।

अभ्यास (Exercise 15.)

(१) Decline (रूप लिखो):—भवत् (thou), भवत् (being), महत् (प्रथमा, द्वितीया), इच्छत्, गच्छत्, शासत्, ददत् (प्रथमा, द्वितीया)। धनवत्, श्रीमत्, यावत्, तावत्, कुर्वत्, नृत्यत् (प्रथमा १ वचन)।

(२) हिन्दी या अंग्रेजी में अनुवाद करो (Translate into Hindi or English):—गच्छता बालकेन। महान्तः वृक्षाः। नृत्यद्भि मयूरैः। पितुः कुलं गच्छता। मातुः कुलात् आगच्छता। मतिमतां श्रेष्ठः। यावान्। कियान्। तावान्। कियद्भिः नरैः।

(३) बलवानों के लिये (for the strong), मतिमानों से (from the intelligent), (दो) बड़े (two great)।

जाते हुए आदमियों में (in men going), जानते हुए (दो) छात्रों का (of two students knowing). देखते हुए लड़कों को (to boys seeing.)

(४) शुद्ध करो (Correct):—

बुद्धिमानस्य पुरुषस्य । ज्ञानवानाः जनाः । ददन् नृपतिः । बलवानानां युद्धम् । श्रीमानेन भूभृतेन । अंशुमानस्य किरणाः ।

नकारान्त पुल्लिंग "लघिमन्" शब्द (Lightness)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	लघिमा	लघिमानौ	लघिमानः
द्वितीया	लघिमानम्	लघिमानौ	लघिम्नः
तृतीया	लघिम्ना	लघिमभ्याम्	लघिमभिः
चतुर्थी	लघिम्ने	लघिमभ्याम्	लघिमभ्यः
पञ्चमी	लघिम्नः	लघिमभ्याम्	लघिमभ्यः
षष्ठी	लघिम्नः	लघिम्नोः	लघिम्नाम्
सप्तमी	लघिम्नि,लघिमनि	लघिम्नोः	लघिमसु
सम्बोधन	(हे) लघिमन्		

N. B.—गरिमन् (heaviness, गुरुता), द्रढिमन् (hardness, दृढ़ता), प्रेमन् (affection), मूर्द्धन् (head, शिर) इत्यादि पुल्लिग तथा पामन् (scab, खुजली), सीमन् (boundary, सीमा) इत्यादि स्त्रीलिंग नकारान्त शब्दों के रूप 'लघिमन्' शब्द के समान होते हैं।

"राजन्" शब्द (King)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	राजा	राजानौ	राजानः
द्वितीया	राजानम्	राजानौ	राज्ञः
तृतीया	राज्ञा	राजभ्याम्	राजभिः
चतुर्थी	राज्ञे	राजभ्याम्	राजभ्यः
पञ्चमी	राज्ञः	राजभ्याम्	राजभ्यः
षष्ठी	राज्ञः	राज्ञोः	राज्ञाम्
सप्तमी	राज्ञि, राजनि	राज्ञोः	राजसु
सम्बोधन	(हे) राजन्*		

"आत्मन्" शब्द (Soul)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	आत्मा	आत्मानौ	आत्मानः
द्वितीया	आत्मानम्	आत्मानौ	आत्मनः
तृतीया	आत्मना	आत्मभ्याम्	आत्मभिः
चतुर्थी	आत्मने	आत्मभ्याम्	आत्मभ्यः
पञ्चमी	आत्मनः	आत्मभ्याम्	आत्मभ्यः
षष्ठी	आत्मनः	आत्मनोः	आत्मनाम्
सप्तमी	आत्मनि	आत्मनोः	आत्मसु
सम्बोधन	(हे) आत्मन् *		

---

* 'राजा' 'आत्मा' आदि नकारान्त शब्दों के प्रथमा एकवचन के रूपों को विद्यार्थी मूलशब्द (प्रातिपदिक) समझ कर हिन्दी के रूप के साम्य के कारण भूल कर बैठते हैं, पर वे आकारान्त नहीं, नकारान्त है।

N. B.—अर्वन् (horse, घोड़ा); अश्मन् (stone, पत्थर); यज्वन् (sacrificer, यजमान); यक्ष्मन् (consumption, राजयक्ष्मा); द्विजन्मन् (twice born, द्विज); ब्रह्मन् (Brahman) इत्यादि जिन नकारान्त शब्दों के न् कार के पूर्व म तथा व संयुक्त वर्ण रहते हैं उन शब्दों के रूप प्रायः 'आत्मन्' शब्द के समान होते हैं ।

"युवन्" शब्द (Young man)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	युवा	युवानौ	युवानः
द्वितीया	युवानम्	युवानौ	यूनः
तृतीया	यूना	युवभ्याम्	युवभिः
चतुर्थी	यूने	युवभ्याम्	युवभ्यः
पञ्चमी	यूनः	युवभ्याम्	युवभ्यः
षष्ठी	यूनः	यूनोः	यूनाम्
सप्तमी	यूनि	यूनोः	युवसु
सम्बोधन	(हे) युवन्		

"श्वन्" शब्द (Dog)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	श्वा	श्वानौ	श्वानः
द्वितीया	श्वानम्	श्वानौ	शुनः
तृतीया	शुना	श्वभ्याम्	श्वभिः
चतुर्थी	शुने	श्वभ्याम्	श्वभ्यः
पञ्चमी	शुनः	श्वभ्याम्	श्वभ्यः

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
षष्ठी	शुनः	शुनोः	शुनाम्
सप्तमी	शुनि	शुनोः	श्वसु
सम्बोधन	(हे) श्वन्		

अभ्यास (Exercise 16)

(१) Decline (रूप लिखो):—गरिमन्, युवन्, श्वन् द्वितीया बहुवचन, तृतीया, चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी और सप्तमी एकवचन।

राजन्, आत्मन् (सप्तमी एकवचन, तृतीया बहुवचन, सप्तमी बहुवचन)।

(२) हिन्दी या अंगरेजी में अनुवाद करो (Translate into Hindi or English):—

युवानं पतिम्। शुनि चैवश्वपाकेच। यूनः। राज्ञिभक्तिः। आत्मना। श्वसु।

(३) संस्कृत में अनुवाद करो (Translate into Sanskrit):—

दो कुत्तों से (by two dogs). युवा पुरुषों के लिये (for young men). राजा में (in king). हे राजा (O king). राजा के लिये (for king). द्विज के लिये (for a twice-born).

(४) शुद्ध करो (Correct):—युवासु विश्वासः। आत्मया सन्तुष्टः। राजे भक्तिः। लघिमाम्। श्वानेसु पण्डितेषु च।

'इन्' भागान्त "गुणिन्" शब्द (Qualified)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	गुणी	गुणिनौ	गुणिनः
द्वितीया	गुणिनम्	गुणिनौ	गुणिनः
तृतीया	गुणिना	गुणिभ्याम्	गुणिभिः

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
चतुर्थी	गुणिने	गुणिभ्याम्	गुणिभ्यः
पञ्चमी	गुणिनः	गुणिभ्याम्	गुणिभ्यः
षष्ठी	गुणिनः	गुणिनोः	गुणिनाम्
सप्तमी	गुणिनि	गुणिनोः	गुणिषु
सम्बोधन	(हे) गुणिन्		

N. B.—धनिन् (rich), ज्ञानिन् (wise), अर्थिन् (who asks any thing, याचक), तपस्विन् (ascetic), तेजस्विन् (brilliant), एकाकिन् (alone, अकेले), करिन् (elephant, हाथी), पक्षिन् (bird), मन्त्रिन् (minister), रोगिन् (sick), स्वामिन् (master), साक्षिन् (witness, गवाह) इत्यादि 'इन्' भागान्त शब्दों के रूप 'गुणिन्' शब्द के समान होते हैं ।*

केवल 'पथिन्' (way) आदि शब्दों का रूप पृथक् होता है ।

"पथिन्" शब्द (Pathway)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पन्थाः	पन्थानौ	पन्थानः
द्वितीया	पन्थानम्	पन्थानौ	पथः
तृतीया	पथा	पथिभ्याम्	पथिभिः
चतुर्थी	पथे	पथिभ्याम्	पथिभ्यः
पञ्चमी	पथः	पथिभ्याम्	पथिभ्यः

---

* 'गुणी' 'धनी' 'ज्ञानी' आदि शब्दों को 'ई' कारान्त नहीं समझना चाहिये, ये 'इन्' भागान्त 'गुणिन्' 'धनिन्' 'ज्ञानिन्' आदि हैं ।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
षष्ठी	पथः	पथोः	पथाम्
सप्तमी	पथि	पथोः	पथिषु
सम्बोधन	हे) पन्थाः		

अभ्यास (Exercise 17)

(१) हिन्दी या अँग्रेजी में अनुवाद करो (Translate into Hindi or English):—तेजस्विनाम् । ज्ञानिभिः जनैः । पथि । गुणिषु ।

(२) संस्कृत में अनुवाद करो (Translate into Sanskrit)—दुर्गम रास्ता (difficult pathway।). अकेले आदमी से (by a man alone). गुणियों में (in the learned). तपस्वी के लिये (for an ascetic)

(३) शुद्ध करो (Correct):—मन्त्रीन् । वलीसु पुरुषेषु । गुणीनाम् च धनीनां च । नखीनां च नदीनांच श्रृङ्गीनाम् शस्त्रपाणिनाम् ।

सकारान्त पुल्लिंग "वेधस्" शब्द (Creator)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	वेधाः	वेधसौ	वेधसः
द्वितीया	वेधसम्	वेधसौ	वेधसः
तृतीया	वेधसा	वेधोभ्याम्	वेधोभिः
चतुर्थी	वेधसे	वेधोभ्याम्	वेधोभ्यः
पञ्चमी	वेधसः	वेधोभ्याम्	वेधोभ्यः
षष्ठी	वेधसः	वेधसोः	वेधसाम्
सप्तमी	वेधसि	वेधसोः	वेधःसु
सम्बोधन	(हे) वेधः		

N. B —विद्वस्, लघीयस्, पुमस् आदि कई शब्दों को छोड़ कर चन्द्रमस् (the moon), दिवौकस् (god, देवता), दुर्मनस् (sad, शोकित), प्रचेतस् (varuna, वरुण), विमनस् (sad), विहायस् sky, आकाश) इत्यादि सब पुल्लिङ्ग तथा अप्सरस् (nymph) सुमनस् (flower, फूल) आदि सकारान्त शब्दों के रूप 'वेधस्' के तुल्य होते हैं।

सकारान्त पुल्लिंग "विद्वस्" शब्द (Learned)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	विद्वान्	विद्वांसौ	विद्वांसः
द्वितीया	विद्वांसम्	विद्वांसौ	विदुषः
तृतीया	विदुषा	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भिः
चतुर्थी	विदुषे	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भ्यः
पञ्चमी	विदुषः	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भ्यः
षष्ठी	विदुषः	विदुषोः	विदुषाम्
सप्तमी	विदुषि	विदुषोः	विद्वत्सु
सम्बोधन	(हे) विद्वन्		

"लघीयस्" शब्द (Lighter)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	लघीयान्	लघीयांसौ	लघीयांसः
द्वितीया	लघीयांसम्	लघीयांसौ	लघीयसः
तृतीया	लघीयसा	लघीयोभ्याम्	लघीयोभिः
चतुर्थी	लघीयसे	लघीयोभ्याम्	लघीयोभ्यः

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
पञ्चमी	लघीयसः	लघीयोभ्याम्	लघीयोभ्यः
षष्ठी	लघीयसः	लघीयसोः	लघीयसाम्
सप्तमी	लघीयसि	लघीयसोः	लघीयसु
सम्बोधन (हे) लघीयन्			

'ईयस्' प्रत्यय निष्पन्न समस्त शब्दों के रूप 'लघीयस्' शब्द के समान होते हैं।

"पुमस्" शब्द (Man)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पुमान्	पुमांसौ	पुमांसः
द्वितीया	पुमांसम्	पुमांसौ	पुंसः
तृतीया	पुंसा	पुम्भ्याम्	पुम्भिः
चतुर्थी	पुंसे	पुम्भ्याम्	पुम्भ्यः
पञ्चमी	पुंसः	पुम्भ्याम्	पुम्भ्यः
षष्ठी	पुंसः	पुंसोः	पुंसाम्
सप्तमी	पुंसि	पुंसोः	पुंसु
संबोधन	(हे) पुमन्		

अभ्यास (Exercise 18)

(१) हिन्दी या अंग्रेजी में अनुवाद करो—(Translate into Hindi or English):—लघीयसि जने। विहायसि गतिः। विदुषां सत्कारः। पुम्भिः परिपूर्णा नगरी। कनीयसा भ्रात्रा।

(२) संस्कृत में अनुवाद करो (Translate into Sanskrit):- विमन पुरुष से (by a sad man). पुरुषों में (in men). विद्वानों का (of the learned). कनीयान भ्राता में (in younger brother)।

(३) शुद्ध करो (Correct):—विद्वानेन। मूर्खस्यपुमानस्य। व्यर्थं जन्म। लघीयाने कारणे। अप्सराणां कुले।

स्त्रीलिङ्ग

चकारान्त "वाच्" शब्द (Speech)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	वाक्	वाचौ	वाचः
द्वितीया	वाचम्	वाचौ	वाचः
तृतीया	वाचा	वाग्भ्याम्	वाग्भिः
चतुर्थी	वाचे	वाग्भ्याम्	वाग्भ्यः
पञ्चमी	वाचः	वाग्भ्याम्	वाग्भ्यः
षष्ठी	वाचः	वाचोः	वाचाम्
सप्तमी	वाचि	वाचोः	वाक्षु
सम्बोधन	(हे) वाक्		

समास में युक्त होने पर भी 'वाच्' शब्द का रूप ऐसा ही होता, जैसे, सत्यवाक् पुरुषः।

सभी पुल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग चकारान्त शब्दों के रूप 'वाच्' के समान होते हैं।

दकारान्त "आपद्" शब्द (Danger)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	आपत्	आपदौ	आपदः
द्वितीया	आपदम्	आपदौ	आपदः
तृतीया	आपदा	आपद्भ्याम्	आपद्भिः
चतुर्थी	आपदे	आपद्भ्याम्	आपद्भ्यः
पञ्चमी	आपदः	आपद्भ्याम्	आपद्भ्यः
षष्ठी	आपदः	आपदोः	आपदाम्
सप्तमी	आपदि	आपदोः	आपत्सु
सम्बोधन	(हे) आपत्		

समास में युक्त होने पर अर्थात् पुल्लिङ्ग हो जाने पर भी इसका रूप ऐसा ही होता है। जैसे, तीर्णापत् जनः। पुल्लिङ्ग या स्त्रीलिङ्ग सभी दकारान्त शब्दों के रूप 'आपद्' के समान होते हैं, जैसे, सम्पद्, विपद्, शरद्, उद्भिद् इत्यादि।

पकारान्त "अप्" शब्द (Water)

	बहुवचन
प्रथमा	आपः
द्वितीया	अपः
तृतीया	अद्भिः
चतुर्थी	अद्भ्यः
पञ्चमी	अद्भ्यः

	बहुवचन
षष्ठी	अपाम्
सप्तमी	अप्सु

अप् शब्द का प्रयोग केवल बहुवचन में ही होता है।

वकारान्त स्त्रीलिंग "दिव्" शब्द (Heaven)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	द्यौः	दिवौ	दिवः
द्वितीया	द्याम्, दिवम्	दिवौ	दिवः
तृतीया	दिवा	द्युभ्याम्	द्युभिः
चतुर्थी	दिवे	द्युभ्याम्	द्युभ्यः
पञ्चमी	दिवः	द्युभ्याम्	द्युभ्यः
षष्ठी	दिवः	दिवोः	दिवाम्
सप्तमी	दिवि	दिवोः	द्युषु

शकारान्त "दिश्" शब्द (Quarter)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	दिक्	दिशौ	दिशः
द्वितीया	दिशम्	दिशौ	दिशः
तृतीया	दिशा	दिग्भ्याम्	दिग्भिः
चतुर्थी	दिशे	दिग्भ्याम्	दिग्भ्यः
पञ्चमी	दिशः	दिग्भ्याम्	दिग्भ्यः

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
षष्ठी	दिशः	दिशोः	दिशाम्
सप्तमी	दिशि	दिशोः	दिक्षु
सम्बोधन	(हे) दिक्		

ईदृश् (such, ऐसा), कीदृश् (whatlike, कैसा), तादृश् (such like, तैसा), भवादृश् (like you, आपके ऐसा) इत्यादि पुंल्लिग तथा सुदृश् (pretty woman, सुन्दर स्त्री)· मृगदृश् (deer-eyed woman, मृगनयनी) आदि स्त्रीलिङ्ग अकारान्त शब्दों के रूप दिश् के समान होते हैं।

अभ्यासार्थ पुंलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग व्यञ्जनान्त शब्दों के अनुवाद (Translation)

गुणी जनों में (in qualified men)—गुणिषु जनेषु । सम्राट् की आज्ञा (the order of the Emperor)—सम्राजः आज्ञा । आपत्ति में (in danger)—आपदि । कुत्ते में और चाण्डाल में (in a dog and in a chandala)—शुनि चैव श्वपाके च । आपदों का मार्ग (the path of dangers)—आपदां पन्थाः । छोटा भाई (younger brother)—कनीयान् भ्राता । दिशाओं में फैला हुआ । (spread in quarters)—दिक्षुविस्तृतः । पानियों की राशि (collection of water)—अपां राशिः । विद्वानों की अभ्यर्थना । (respect of the learned)—विदुषाम् अभ्यर्थना । बोली में अमृत (nector in speech)—वाचि अमृतम् । दौड़ते हुए बकरे (running goats)—धावन्तः छागाः । स्वर्ग में या पृथ्वी में (in heaven or in the earth)—दिवि वा भुविवा । युवा पति को (to a young husband)—युवानं पतिम् । ज्ञानी आदमी के लिये (for a learned man)—ज्ञानिने जनाय ।

अभ्यास (Exercise 19)

(१) संस्कृत में अनुवाद करो (Translate into Sanskrit):—
युवा पुरुषों से (by young men), कुत्तों का झुण्ड (flock of dogs) विद्वानों के लिये (for the learned), मन्त्रियों की राय (the opinion of the ministers), श्रीमान् पुरुषों के लिये (for fortunate men), सम्राट् की घोषणा (the proclamation of the Emperor)

(२) शुद्ध करो (Correct):—वलवानेन सह । दुर्गमे पथे । आत्मस्य कर्मस्य फलम् । धनीस्य पुरुषस्य । विपदे सम्पदेचैव । आत्मायाः बन्धुः । श्रीमानस्य नृपस्य ।

नपुंसक लिंग ।

तकारान्त "श्रीमत्" शब्द (Fortunate)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	श्रीमत्	श्रीमती	श्रीमन्ति
द्वितीया	श्रीमत्	श्रीमती	श्रीमन्ति
सम्बोधन	(हे) श्रीमत्		

शेष विभक्तियों और वचनों में इसके रूप पुल्लिङ्ग शब्द के समान होते हैं। सभी तकारान्त नपुंसक शब्दों के रूप प्रायः श्रीमत् शब्द के समान होते हैं।

"महत्" शब्द (Great)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	महत्	महती	महान्ति
द्वितीया	महत्	महती	महान्ति
सम्बोधन	(हे) महत्		

शेष विभक्तियों में पुल्लिंग के समान रूप होते हैं।

नकारान्त नपुंसक "धामन्" शब्द (Home)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	धाम	धाम्नी धामनी	धामानि
द्वितीया	धाम	धाम्नी, धामनी	धामानि
सम्बोधन	(हे) धाम, धामन्		

शेष रूप पुल्लिग में "लघिमन्" के समान होते हैं। कर्मन् आदि कई शब्दों को छोड़कर दामन् (rope, रस्सी), नामन् (name, नाम), प्रेमन् (affection), लोमन् (hair, रोआँ), व्योमन् (sky, आकाश), सामन् (सामवेद), हेमन् (gold, सोना) आदि नपुंसक शब्दों के रूप 'धामन्' के समान होते हैं।

"कर्म्मन्" शब्द (Work)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	कर्म्म	कर्म्मणी	कर्म्माणि
द्वितीया	कर्म्म	कर्म्मणी	कर्म्माणि
सम्बोधन	(हे) कर्म्म, कर्म्मन्		

शेष रूप पुल्लिङ्ग 'आत्मन्' शब्द के समान होते हैं।

N. B.—चर्म्मन् (skin, चमड़ा), जन्मन् (birth, जन्म), वर्म्मन् (armour, कवच), शर्म्मन् (happiness, सुख), वर्त्मन् (road, राह), भस्मन् (ashes, राख) सद्मन् (house, घर), वेश्मन् (house, घर), छद्मन् (disguise, गुप्तभेष), लक्ष्मन् (mark, चिह्न) आदि शब्दों के रूप 'कर्मन्' शब्द के समान होते हैं।

"अहन्" शब्द (Day)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अहः	अह्नी, अहनी	अहानि
द्वितीया	अहः	अह्नी, अहनी	अहानि
तृतीया	अह्ना	अहोभ्याम्	अहोभिः
चतुर्थी	अह्ने	अहोभ्याम्	अहोभ्यः
पञ्चमी	अह्नः	अहोभ्याम्	अहोभ्यः
षष्ठी	अह्नः	अह्नोः	अह्नाम्
सप्तमी	अह्नि, अहनि	अह्नोः	अहःसु
सम्बोधन	(हे) अहः		

सकारान्त नपुंसक "पयस्" शब्द (Water, milk)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पयः	पयसी	पयांसि
द्वितीया	पयः	पयसी	पयांसि

शेष विभक्तियों में इसके रूप "वेधस्" शब्द के समान होते हैं।

N. B.—मनस् (mind, मन), चेतस् (mind, मन), अम्भस् (water, जल), अयस् (iron, लोहा), उरस् (breast, छाती), छन्दस् (metre, पद्य), तपस् (penance, तपस्या), वयस् (age, उम्र), रजस् (dust, धूली), यशस् (fame, यश), वक्षस् (breast, छाती), वचस् (speech, बोली), वासस् (cloth, कपड़ा), शिरस् (head, शिर), सरस् (tank, सरोवर) आदि 'अस्' भागान्त नपुंसक शब्दों के रूप 'पयस्' शब्द के समान होते हैं।

"हविस्" शब्द (Clarified butter)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	हविः	हविषी	हवींषि
द्वितीया	हविः	हविषी	हवींषि
तृतीया	हविषा	हविर्भ्याम्	हविर्भिः
चतुर्थी	हविषे	हविर्भ्याम्	हविर्भ्यः
पञ्चमी	हविषः	हविर्भ्याम्	हविर्भ्यः
षष्ठी	हविषः	हविषोः	हविषाम्
सप्तमी	हविषि	हविषोः	हविःषु
सम्बोधन	(हे) हविः		

अर्चिस् (flame, ज्वाला), ज्योतिस् (light,, प्रकाश), वर्हिस् (कुश), सर्पिस् (ghee) आदि 'इस्' भागान्त नपुंसक शब्दों के रूप 'हविस्' शब्द के समान होते हैं ।

'उस्' भागान्त नपुंसक "धनुस्" शब्द (Bow)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	धनुः	धनुषी	धनूंषि
द्वितीया	धनुः	धनुषी	धनूंषि
तृतीया	धनुषा	धनुर्भ्याम्	धनुर्भिः
चतुर्थी	धनुषे	धनुर्भ्याम्	धनुर्भ्यः
पञ्चमी	धनुषः	धनुर्भ्याम्	धनुर्भ्यः
षष्ठी	धनुषः	धनुषोः	धनुषाम्
सप्तमी	धनुषि	धनुषोः	धनुःषु
सम्बोधन	(हे) धनुः		

आयुस् (age, वयस्), चक्षुस् (eye, आँख), वपुस् (body, शरीर), यजुस् (यजुर्वेद) आदि 'उस्' भागान्त नपुंसक शब्दों के रूप 'धनुस्' शब्द के समान होते हैं ।

अभ्यासार्थ अनुवाद (Translation)

बड़े सरोवर (large tanks)—महान्ति सरांसि । नाम से प्रसिद्ध (famous by name)—नाम्ना प्रसिद्धः । अपना नाम गुरु का नाम और अतिकृपण का नाम (one's own name, teacher's name and the name of a great miser)—आत्मनाम गुरोर्नाम नामातिकृपणस्य च । क्या कर्म और क्या अकर्म (what-is-action and what in-action)—किं कर्म किम् अकर्म इति । दूध से जला हुआ (burnt by milk)—पयसा दग्धः । मन में दूसरा, बोली में दूसरा (something in mind, something else in speech)—मनसि अन्यत् वचसि अन्यत् । मनसे चिन्तित (thought by mind)—मनसा चिन्तितम् । जन्म से शूद्र (shudra by birth)—जन्मना शूद्रः । धनुष पर चढ़ी हुई डोरी (string fastened on bow)—धनुषि आतता मौर्वी । चाण्डाल के घर से (from the house of a chandala)—चाण्डालस्य वेश्मनः । दिन, रात और दोनों सन्ध्याएँ (day, night and both dawn and dusk)—अहः च रात्रिः च उभे च सन्ध्ये । घी से आग के समान (like fire by ghee)—हविषा कृष्णवर्त्मेव ।

अभ्यास (Exercise 20)

(१) हिन्दी या अंग्रेजी में अनुवाद करो (Translate into Hindi or English):—देवानां सद्मनि । जन्मना कर्मणा च जातिः । सरसि विकसितं पद्मम् । शिरसा स्नातः । तपोभिः लोकाः । गायत्री छन्दसां माता । भस्मनां चयः । शिरसो भूषणम् ।

(२) संस्कृत में अनुवाद करो (Translate into sanskrit)—
पुराने वस्त्रों को (to old clothes), छाती में पीड़ा (pain in breast), दो आँखों से हीन (deprived of two eyes), सुख-दुःखों का कारण मन (mind, the cause of pleasure and pain), यजुर्वेद का पाठ (the study of the Yajurveda), घी से वीर्य (strength by ghee) स्वच्छ आकाश में (in the clear sky),

(३) शुद्ध करो (Correct):—कर्मेण सुखदुःखलाभः । सूर्यस्य तेजम् । हविना विना भोजनम् । पयस्य पानं भुजंगानाम् । जगते धार्मिकः सुखी । सरस्य मधुरं पयम् । धनुषाणां रवः । चर्माय व्याघ्रहननम् । आत्मनः नामम् । जन्मेन धनवान् ।

परिशिष्ट (Addenda)*

अत् प्रत्ययान्त नपुंसक "गच्छत्" शब्द (Going)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा, सम्बो०	गच्छत्	गच्छन्ती	गच्छन्ति
द्वितीया	गच्छत्	गच्छन्ती	गच्छन्ति

शेष धावत् के समान ।

"इच्छत्" (Wishing)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा, सम्बो०	इच्छत्	इच्छती, इच्छन्ती	इच्छन्ति
द्वितीया	इच्छत्	इच्छती, इच्छन्ती	इच्छन्ति

* ये सब शब्द नपुंसक शब्दों के विशेषण होने पर नपुंसक हो जाते हैं और तब इनके रूप नपुंसक शब्दों के समान होते हैं । जैसे—

स्थायिनः गुणाः (पुल्लिंग), स्थायि कर्म (नपुं०) ।

गच्छन्तः पुरुषाः (पुल्लिंग), गच्छन्ति सरांसि (नपुं०) ।

अत् (शतृ) प्रत्ययान्त नपुंसक शब्दों में भ्वादि और दिवादिगणीय धातुओं से बने शब्द 'गच्छत्' के समान और कुछ 'इच्छत्' के समान होते हैं।

इन्भागान्त नपुंसक "स्थायिन्" शब्द (Permanent)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	स्थायि	स्थायिनी	स्थायीनि
द्वितीया	स्थायि	स्थायिनी	स्थायीनि
सम्बोधन	(हे) स्थायिन्		

शेष 'गुणिन्' के समान।

इन् भागान्त सब नपुंसक शब्दों के रूप ऐसे ही होते हैं।

सर्व्वनाम (Pronouns)।

"सर्व्व" शब्द (All, whole)—पुल्लिङ्ग *

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सर्व्वः	सर्व्वौ	सर्व्वे
द्वितीया	सर्व्वम्	सर्व्वौ	सर्व्वान्
तृतीया	सर्व्वेण	सर्व्वाभ्याम्	सर्व्वैः
चतुर्थी	सर्व्वस्मै	सर्व्वाभ्याम्	सर्व्वेभ्यः

* पुल्लिंग का विशेषण होने पर पुल्लिंग, नपुंसक का विशेषण होने पर नपुंसक और स्त्रीलिंग का विशेषण होने पर इसका रूप स्त्रीलिंग के समान होता है। पुल्लिंग 'गज' और स्त्रीलिंग 'लता' से चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी और सप्तमी में जो भेद पड़ता है सो देखो।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
पञ्चमी	सर्व्वस्मात्	सर्व्वाभ्याम्	सर्व्वेभ्यः
षष्ठी	सर्व्वस्य	सर्व्वयोः	सर्व्वेषाम्
सप्तमी	सर्व्वस्मिन्	सर्व्वयोः	सर्व्वेषु

नोट—सर्व्वनाम का सम्बोधन नहीं होता।

नपुंसक लिंग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सर्व्वम्	सर्व्वे	सर्व्वाणि
द्वितीया	सर्व्वम्	सर्व्वे	सर्व्वाणि

शेष विभक्तियों में इसके रूप पुल्लिङ्ग के समान होते हैं।

स्त्रीलिंग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सर्व्वा	सर्व्वे	सर्व्वाः
द्वितीया	सर्व्वाम्	सर्व्वे	सर्व्वाः
तृतीया	सर्व्वया	सर्व्वाभ्याम्	सर्व्वाभिः
चतुर्थी	सर्व्वस्यै	सर्व्वाभ्याम्	सर्व्वाभ्यः
पञ्चमी	सर्व्वस्याः	सर्व्वाभ्याम्	सर्व्वाभ्यः
षष्ठी	सर्व्वस्याः	सर्व्वयोः	सर्व्वासाम्
सप्तमी	सर्व्वस्याम्	सर्व्वयोः	सर्व्वासु

N. B.—सर्व्व (all, सब), विश्व (all, सब), उभय (both, दोनों), एक (one) और एकतर (one of the two, दो में एक) इनके रूप 'सर्व्व' के समान होते हैं।

'अन्य' (दूसरा, other), अन्यतर (दो में एक, either), इतर (other, दूसरा), कतर (which of the two, दो में कौन), कतम (which of many, बहुत में कौन) और एकतम (one of many, बहुत में एक) इन शब्दों के रूप भी "सर्व्व" के समान होते हैं, केवल नपुंसक की प्रथमा और द्वितीया के एकवचन में 'अन्यत्, अन्यतरत्, इतरत्, कतरत्, कतमत्, एकतमत्' रूप होते हैं।

"पूर्व" शब्द (Prior, East)

पुल्लिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पूर्व्वः	पूर्व्वौ	पूर्व्वे, पूर्व्वाः
द्वितीया	पूर्व्वम्	पूर्व्वौ	पूर्व्वान्
तृतीया	पूर्व्वेण	पूर्व्वाभ्याम्	पूर्व्वैः
चतुर्थी	पूर्व्वस्मै	पूर्व्वाभ्याम्	पूर्व्वेभ्यः
पञ्चमी	पूर्व्वस्मात्, पूर्व्वात्	पूर्व्वाभ्याम्	पूर्व्वेभ्यः
षष्ठी	पूर्व्वस्य	पूर्व्वयोः	पूर्व्वेषाम्
सप्तमी	पूर्व्वस्मिन्, पूर्व्वे	पूर्व्वयोः	पूर्व्वेषु

नपुंसक लिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पूर्व्वम्	पूर्व्वे	पूर्व्वाणि
द्वितीया	पूर्व्वम्	पूर्व्वे	पूर्व्वाणि

अन्य विभक्तियों में रूप पुल्लिङ्ग के समान होते हैं। स्त्रीलिङ्ग में इसके रूप स्त्रीलिङ्ग 'सर्व्वा' के समान होते हैं।

N. B.—पर (दूसरा, other, after), अपर (दूसरा, other), अवर (posterior, west, पीछे, पश्चिम), अधर (inferior, west , नीचे, पश्चिम), दक्षिण (south, right, दक्खिन, दाहना), उत्तर (north, उत्तर), स्व (own, अपना) इनके रूप 'पूर्व्व' के समान होते हैं ।*

अभ्यास (Exercise 21)

(१) हिन्दी या अंग्रेजी में अनुवाद करो (Translate into Hindi or English):—सर्व्वाणि फलानि । सर्व्वस्याः लतायाः । उत्तरस्यां दिशि । अन्यस्मिन् दिने । पूर्व्वस्मात् देशात् । अन्यत् पुस्तकम् । इतरत् फलम् ।

(२) संस्कृत में अनुवाद करो (Translate into Sanskrit)—दूसरे पुरुष (other men), दक्षिण दिशा में (in the south), सब स्त्रियों में (in all women), सब फलों को (to all fruits), सब लता के लिये (for all creepers) ।

(३) शुद्ध करो (Correct):—सर्व्वाः जनाः । अन्यं पुस्तकम् । पूर्व्वाय देशाय । उत्तरे काले ।

---

*'सर्व्व' तथा 'विश्व' शब्द का अर्थ जब 'सकल, सब' होता है तब ये 'सर्व' के समान होते हैं अन्यथा इनका रूप अकारान्त शब्द के समान होता है ।

पूर्व्व, पर, अवर, दक्षिण, उत्तर, अपर; अधर ये सात शब्द दिग्वाचक देशवाचक और कालवाचक अर्थ में सर्वनाम होते हैं अर्थात् तब इनका रूप 'सर्व्व' के समान होता है । अन्यथा पुल्लिङ्ग और नपुंसक में अकारान्त और स्त्रीलिंग में आकारान्त के समान रूप होते हैं । 'स्व' शब्द का अर्थ जब 'अपना' होता है तब यह सर्वनाम होता है; 'कुटुम्ब' तथा 'धन' अर्थ में अकारान्त के समान रूप चलता है ।

"अस्मद्" शब्द (I, मैं)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वितीया	माम्, मा	आवाम्, नौ	अस्मान्, नः
तृतीया	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
चतुर्थी	मह्यम्, मे	आवाभ्याम्, नौ	अस्मभ्यम्, नः
पञ्चमी	मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्
षष्ठी	मम, मे	आवयोः, नौ	अस्माकम्, नः
सप्तमी	मयि	आवयोः	अस्मासु

तीनों लिङ्गों में इसके रूप समान होते हैं।

"युष्मद्" शब्द (You, तू)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वितीया	त्वाम्, त्वा	युवाम्, वाम्	युष्मान्, वः
तृतीया	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
चतुर्थी	तुभ्यम्, ते	युवाभ्याम्, वाम्	युष्मभ्यम्, वः
पञ्चमी	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
षष्ठी	तव, ते	युवयोः, वाम्	युष्माकम्, वः
सप्तमी	त्वयि	युवयोः	युष्मासु

तीनों लिङ्गों में रूप समान होते हैं।

"इदम्" शब्द (This)

पुल्लिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अयम्	इमौ	इमे
द्वितीया	इमम्	इमौ	इमान्
तृतीया	अनेन	आभ्याम्	एभिः
चतुर्थी	अस्मै	आभ्याम्	एभ्यः
पञ्चमी	अस्मात्	आभ्याम्	एभ्यः
षष्ठी	अस्य	अनयोः	एषाम्
सप्तमी	अस्मिन्	अनयोः	एषु

नपुंसक लिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	इदम्	इमे	इमानि
द्वितीया	इदम्	इमे	इमानि

अन्य विभक्तियों में पुल्लिङ्ग के समान रूप होते हैं।

स्त्रीलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	इयम्	इमे	इमाः
द्वितीया	इमाम्	इमे	इमाः
तृतीया	अनया	आभ्याम्	आभिः
चतुर्थी	अस्यै	आभ्याम्	आभ्यः

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
पञ्चमी	अस्याः	आभ्याम्	आभ्यः
षष्ठी	अस्याः	अनयोः	आसाम्
सप्तमी	अस्याम्	अनयोः	आसु

टिप्पणी—अस्मद् और युष्मद् के जो दूसरे रूप मा, मे, नौ औरनः तथा त्वा, ते, वाम् और वः क्रमशः होते हैं इनका प्रयोग वाक्य या श्लोक के चरण के आदि में अथवा च, एव, वा, हा के पूर्व में नहीं किया जाता जैसे, मे ईश्वरः, मा त्वा च पातु इत्यादि प्रयोग अशुद्ध है।

"किम्" शब्द (Who, Which, What, कौन)

पुल्लिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	कः	कौ	के
द्वितीया	कम्	कौ	कान्
तृतीया	केन	काभ्याम्	कैः
चतुर्थी	कस्मै	काभ्याम्	केभ्यः
पञ्चमी	कस्मात्	काभ्याम्	केभ्यः
षष्ठी	कस्य	कयोः	केषाम्
सप्तमी	कस्मिन्	कयोः	केषु

नपुंसक लिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	किम्	के	कानि
द्वितीया	किम्	के	कानि

शेष विभक्तियों में रूप पुल्लिङ्ग के समान होते हैं।

स्त्रीलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	का	के	काः
द्वितीया	काम्	के	काः
तृतीया	कया	काभ्याम्	काभिः
चतुर्थी	कस्यै	काभ्याम्	काभ्यः
पञ्चमी	कस्याः	काभ्याम्	काभ्यः
षष्ठी	कस्याः	कयोः	कासाम्
सप्तमी	कस्याम्	कयोः	कासु

"यद्" शब्द (Who, Which, What, जो)

पुल्लिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	यः	यौ	ये
द्वितीया	यम्	यौ	यान्
तृतीया	येन	याभ्याम्	यैः
चतुर्थी	यस्मै	याभ्याम्	येभ्यः
पञ्चमी	यस्मात्	याभ्याम्	येभ्यः
षष्ठी	यस्य	ययोः	येषाम्
सप्तमी	यस्मिन्	ययोः	येषु

नपुंसक लिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	यत्	ये	यानि
द्वितीया	यत्	ये	यानि

शेष विभक्तियों में पुल्लिङ्ग के समान रूप होते हैं।

स्त्रीलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	या	ये	याः
द्वितीया	याम्	ये	याः
तृतीया	यया	याभ्याम्	याभिः
चतुर्थी	यस्यै	याभ्याम्	याभ्यः
पञ्चमी	यस्याः	याभ्याम्	याभ्यः
षष्ठी	यस्याः	ययोः	यासाम्
सप्तमी	यस्याम्	ययोः	यासु

"तद्" शब्द (He, She, It, वह)

पुल्लिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सः	तौ	ते
द्वितीया	तम्	तौ	तान्
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तैः
चतुर्थी	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः

पञ्चमी	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः
षष्ठी	तस्य	तयोः	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन्	तयोः	तेषु

नपुंसक लिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	तत्	ते	तानि
द्वितीया	तत्	ते	तानि

शेष विभक्तियों में रूप पुल्लिङ्ग के समान होते हैं।

स्त्रीलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सा	ते	ताः
द्वितोया	ताम्	ते	ताः
तृतीया	तया	ताभ्याम्	ताभिः
चतुर्थी	तस्यै	ताभ्याम्	ताभ्यः
पञ्चमी	तस्याः	ताभ्याम्	ताभ्यः
षष्ठी	तस्याः	तयोः	तासाम्
सप्तमी	तस्याम्	तयोः	तासु

'एतद्', (यह) शब्द के सब रूप सब विभक्तियों में 'तद्' के समान होते हैं परन्तु पुल्लिङ्ग तथा स्त्रीलिङ्ग के प्रथमा एक वचन में मूर्द्धन्य 'ष' कार का आदेश हो जाता है। जैसे, एषः (पुं०) एषा (स्त्री०)।

"अदस्" शब्द (This, That, Yonder)

पुल्लिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	असौ	अमू	अमी
द्वितीया	अमुम्	अमू	अमून्
तृतीया	अमुना	अमूभ्याम्	अमीभिः
चतुर्थी	अमुष्मै	अमूभ्याम्	अमीभ्यः
पञ्चमी	अमुष्मात्	अमूभ्याम्	अमीभ्यः
षष्ठी	अमुष्य	अमुयोः	अमीषाम्
सप्तमी	अमुष्मिन्	अमुयोः	अमीषु

नपुंसक लिंग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अदः	अमू	अमूनि
द्वितीया	अदः	अमू	अमूनि

शेष रूप पुल्लिङ्ग के समान होते हैं ।

स्त्रीलिंग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	असौ	अमू	अमूः
द्वितीया	अमूम्	अमू	अमूः
तृतीया	अमुया	अमूभ्याम्	अमूभिः
चतुर्थी	अमुष्यै	अमूभ्याम्	अमूभ्यः

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
पञ्चमी	अमुष्याः	अमूभ्याम्	अमूभ्यः
षष्ठी	अमुष्याः	अमुयोः	अमूषाम्
सप्तमी	अमुष्याम्	अमुयोः	अमूषु

अभ्यास (Exercise 22)

(१) शब्द रूप लिखो (Decline):—अस्मद्, युष्मद् (द्वितीया, चतुर्थी, षष्ठी)। इदम्, अदस्, (स्त्रीलिङ्ग—तृतीया, सप्तमी, द्वितीया बहुवचन)। किम्, तद् (स्त्रीलिङ्ग—प्रथमा, पञ्चमी, षष्ठी)।

(२) हिन्दी या अंग्रेजी में अनुवाद करो (Translate into Hindi or English):—इमाः नारीः। अस्यै कन्यायै। अमी छात्राः। कानि पुस्तकानि। एषा स्त्री। देवदत्तः वो मित्रम्। हरिः वाम् रक्षकः। ते। नः। मा। अमू बालिके। अनया लतया। यया त्वया जगत्स्रष्टा। के। ये। यानि कानि च मित्राणि।

(३) संस्कृत में अनुवाद करो (Translate into Sanskrit):—हम लोगों के पुत्र (our son), तुम्हारे पिता को (to your father), हम लोगों में प्रेम (live in us), इस रात में (in this night), जिस ईश्वर से (by what god), यह नारी (this woman) किन फलों को (to what fruits), किस स्त्री से (by what woman), ये फल (these fruits), वे दोनों (those two)।

(४) शुद्ध करो (Correct):—मे मित्रम्। ते च महिमा। तस्याः वृक्षस्य फलानि। तस्मै कन्यायै। कस्मिन् रात्रौ। कः फलं कः विधानं च अमुष्य कन्यायाः। ते एव चैत्रक्षपाः। अस्य बालिकायाः हस्तौ। एषां नारीणाम्। असौ पुस्तकम्। तौ एव बालिके। यस्य नराणम्।

संख्यावाचक शब्द (Numerals)

"एक" शब्द (one, some)—एकवचनान्त

इसके रूप तीनों लिङ्गों में 'सर्व्व' के समान होते हैं।

'अनेक' (many), तीनों लिङ्गों में 'सर्व्व' के समान रूप होते हैं।

"द्वि" (Two, दो)—द्विवचनान्त।

	पुंल्लिङ्ग	नपुंसक और स्त्रीलिङ्ग।
प्रथमा	द्वौ	द्वे
द्वितीया	द्वौ	द्वे
तृतीया	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
चतुर्थी	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
पञ्चमी	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
षष्ठी	द्वयोः	द्वयोः
सप्तमी	द्वयोः	द्वयोः

"त्रि" शब्द (Three, तीन)—बहुवचनान्त।

	पुल्लिङ्ग	नपुंसक	स्त्रीलिङ्ग।
प्रथमा	त्रयः	त्रीणि	तिस्रः
द्वितीया	त्रीन्	त्रीणि	तिस्रः
तृतीया	त्रिभिः	त्रिभिः	तिसृभिः
चतुर्थी	त्रिभ्यः	त्रिभ्यः	तिसृभ्यः
पञ्चमी	त्रिभ्यः	त्रिभ्यः	तिसृभ्यः
षष्ठी	त्रयाणाम्	त्रयाणाम्	तिसृणाम्
सप्तमी	त्रिषु	त्रिषु	तिसृषु

"चतुर्" शब्द (Four, चार)—बहुवचनान्त ।

	पुल्लिङ्ग	नपुंसक	स्त्रीलिङ्ग
प्रथमा	चत्वारः	चत्वारि	चतस्रः
द्वितीया	चतुरः	चत्वारि	चतस्रः
तृतीया	चतुर्भिः	चतुर्भिः	चतसृभिः
चतुर्थी	चतुर्भ्यः	चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः
पञ्चमी	चतुर्भ्यः	चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः
षष्ठी	चतुर्णाम्	चतुर्णाम्	चतसृणाम्
सप्तमी	चतुर्षु	चतुर्षु	चतसृषु

"पञ्चन्" शब्द (Five, पाँच)—बहुवचनान्त

	बहुवचन
प्रथमा	पञ्च
द्वितीया	पञ्च
तृतीया	पञ्चभि·
चतुर्थी	पञ्चभ्यः
पञ्चमी	पञ्चभ्यः
षष्ठी	पञ्चानाम्
सप्तमी	पञ्चसु

तीनों लिङ्गों में रूप समान होते हैं।

"षष्" शब्द (Six, छः)—बहुवचनान्त

	बहुवचन
प्रथमा	षट्
द्वितीया	षट्
तृतीया	षड्भिः
चतुर्थी	षड्भ्यः
पञ्चमी	षड्भ्यः
षष्ठी	षण्णाम्
सप्तमी	षट्सु

तीनों लिङ्गों में रूप समान होते हैं।

"अष्टन्" शब्द (Eight, आठ)—बहुवचनान्त

	बहुवचन
प्रथमा	अष्टौ, अष्ट
द्वितीया	अष्टौ, अष्ट
तृतीया	अष्टाभिः, अष्टभिः
चतुर्थी	अष्टाभ्यः, अष्टभ्यः
पञ्चमी	अष्टाभ्यः, अष्टभ्यः
षष्ठी	अष्टानाम्
सप्तमी	अष्टासु, अष्टसु

तीनों लिङ्गों में रूप समान होते हैं।

सप्तन् (seven), नवन् (nine), दशन् (ten) इत्यादि अष्टादशन् (eighteen, अठारह) शब्द पर्य्यन्त सभी संख्यावाचक शब्दों के रूप 'पञ्चन्' के समान तीनों लिङ्गों में होते हैं।

संख्यावाचक शब्द (Cardinals)

एकः (one, एक)
द्वौ (two, दो)
त्रयः (three, तीन)
चत्वारः (four, चार)
पञ्च (five, पाँच)
षट् (six, छै)
सप्त (seven, सात)
अष्ट (eight, आठ)
नव (nine, नौ)
दश (ten, दश)
एकादश (eleven, ग्यारह)
द्वादश (twelve, बारह)
त्रयोदश (thriteen, तेरह)
चतुर्दश (fourteen, चौदह)
पञ्चदश (fifteen, पन्द्रह)
षोडश (sixteen, सोलह)
सप्तदश (seventeer, सत्रह)
अष्टादश (eighteen, अट्ठारह)
ऊनविंशतिः, एकोनविंशतिः (nineteen, उन्नीस)
विंशति (twenty, बीस)
एकविंशतिः (twenty one, एक्कीस)
द्वाविंशतिः (twenty two, बाईस)
त्रयोविंशतिः (twenty three, तेईस)
चतुर्विंशतिः (twenty four, चौबीस)
पञ्चविंशतिः (twenty five, पच्चीस)
षड्विंशतिः (twenty six, छब्बीस)

सप्तविंशतिः (twenty seven, सत्ताईस)
अष्टविंशतिः (twenty eight, अट्ठाईस)
ऊनत्रिंशत् (twenty nine, उन्तीस)
त्रिंशत् (thirty, तीस)
एकत्रिंशत् (thirty one, एकतीस)
द्वात्रिंशत् (thirty two, बत्तीस)
त्रयस्त्रिंशत् (thirty three, तैंतीस)
चतुस्त्रिंशत् (thirty four, चौंतीस)
पञ्चत्रिंशत् (thirty five, पैंतीस)
षट्त्रिंशत् (thirty six, छत्तीस)
सप्तत्रिंशत् (thirty seven, सैंतीस)
अष्टात्रिंशत् (thirty eight, अड़तीस)

ऊनचत्वारिंशत् (thirty nine, उनतालीस)
चत्वारिंशत् (forty, चालीस)
एकचत्वारिंशत् (forty one, एकतालीस)
द्विचत्वारिंशत् (forty two, बेआलीस)
त्रिचत्वारिंशत् (forty three, तैंतालीस)
चतुश्चत्वारिंशत् (forty four, चौवालीस)
पञ्चचत्वारिंशत् (forty five, पैंतालीस)
षट्चत्वारिंशत् (forty six, छेआलीस)
सप्तचत्वारिंशत् (forty seven, सैंतालीस)
अष्टचत्वारिंशत् (forty eight, अड़तालीस)
ऊनपञ्चाशत् (forty nine, उनचास)
पञ्चाशत् (fifty, पचास)

एकपञ्चाशत् (fifty one, एकावन)

दिपञ्चाशत् (fifty two, बावन)

त्रिपञ्चाशत् (fifty three, तिरप्पन)

चतुः पञ्चाशत् (fifty four, चौवन)

पञ्चपञ्चाशत् (fifty five, पचपन)

षट्पञ्चाशत् (fifty six, छप्पन)

सप्तपञ्चाशत् (fifty seven, सत्तावन)

अष्टपञ्चाशत् (fifty eight, अट्ठावन)

ऊनषष्टिः (fifty nine, उनसठ)

षष्टिः (sixty, साठ)

एकषष्टिः (sixty one, एकसठ)

द्विषष्टिः (sixty two, बासठ)

त्रिषष्टिः (sixty three, तिरसठ)

चतुःषष्टिः (sixty four, चौंसठ)

पञ्चषष्टिः (sixty five, पैंसठ)

षट्षष्टिः (sixty six, छेआसठ)

सप्तषष्टिः (sixty seven, सड़सठ)

अष्टषष्टिः (sixty eight, अड़सठ)

ऊनसप्ततिः (sixty nine, उनहत्तर)

सप्ततिः (seventy, सत्तर)

एकसप्ततिः (seventy one, एकहत्तर

द्विसप्ततिः (seventy two, बहत्तर)

त्रिसप्ततिः(seventy three, तिहत्तर)

चतुःसप्ततिः(seventy four, चौहत्तर)

पञ्चसप्ततिः (seventy five, पचहत्तर)

षट्सप्ततिः (seventy six, छिहत्तर)

सप्तसप्ततिः (seventy seven, सतहत्तर)

अष्टसप्ततिः (seventy eight, अठत्तर)

ऊनाशीतिः (seventy nine, उनासी)

अशीतिः (eighty, अस्सी)

एकाशीतिः (eighty one, एकासी)

द्व्यशीतिः (eighty two, बेयासी)

त्र्यशीतिः (eighty three, तेरासी)

चतुरशीतिः (eighty four, चौरासी)

पञ्चाशीतिः (eighty five, पचासी)

षडशीतिः (eighty six, छिआसी)

सप्ताशीतिः (eighty seven, सत्तासी)

अष्टाशीतिः (eighty eight, अठासी)

नवाशीतिः (eighty nine, नवासी)

नवतिः (ninety, नब्बे)

एकनवतिः (ninety one, इकान्नबे)

द्विनवतिः (ninety two, बानबे)

त्रिनवतिः (ninety three, तिरानबे)

चतुर्नवतिः (ninety four, चौरानबे)

पञ्चनवतिः (ninety five, पञ्चानबे)

षण्णवतिः (ninety six, छिआनबे)

सप्तनवतिः (ninety seven सत्तानबे)

अष्टनवतिः (ninety eight, अण्ठानबे)

नवनवतिः (ninety nine, निन्नानबे)

शतम् (hundred, सौ)

एकाधिकशतम् (one hundred and one एक सौ एक)

द्व्यधिकशतम् (one hundred and two, एक सौ दो)

त्र्यधिकशतम् (one hundred and three, एक सौ तीन)

सहस्रम् (thousand, हजार)

अयुतम् (ten thousand, दश हजार)

लक्षम् (hundreds of thousand, लाख)

नियुतम् (million, दश लाख)

कोटिः (tens of million, करोड)

अर्बुदम् (hundreds of million)

इनमें 'पञ्चन्' से लेकर 'अष्टादशन्' पर्य्यन्त सभी शब्द बहुवचनान्त हैं और तीनों लिङ्गों में इनके रूप समान होते हैं; जैसे—दशभिः बालकैः, दशभिः कन्याभिः, त्रयोदशानाम् वृक्षाणाम्, त्रयोदशानाम्, नारीणाम्, चतुर्दश फलानि इत्यादि।

'ऊनविंशति' (nineteen, उन्नीस) से लेकर 'नवनवति' (ninety nine, निन्नानबे) पर्य्यन्त समस्त संख्यावाचक शब्द सदा एकवचनान्त हैं और विशेष्य किसी लिङ्ग का और किसी वचन का क्यों न हो ये सदा स्त्रीलिङ्ग रहते हैं और एकवचन में इनका प्रयोग होता है। जैसे—विंशतिः नराः, विंशतिः बालिकाः, विंशतिः फलानि, विंशत्या फलैः इत्यादि। इकारान्त शब्द यथा, 'ऊनविंशति, विंशति, षष्टि, सप्तति, अशीति, नवति

और कोटि' के रूप 'मति' शब्द के समान होते हैं और 'त्रिंशत्, चत्वारिंशत्, पञ्चाशत्' शब्दों के रूप 'भूभृत्' के समान होते हैं। जैसे—त्रिंशत् नराः, त्रिंशता फलैः, षष्टिः वृक्षाः, षष्ट्या नारीभिः, षष्ट्या पुस्तकैः इत्यादि। 'शत, सहस्र, अयुत, लक्ष, नियुत, अर्बुद, इत्यादि नपुंसक हैं, अतः इनके रूप 'फल' के समान होते हैं। जैसे—शतं फलानि शतं नराः इत्यादि।

व्यावृत्ति (repetition) बोध होने पर 'शत' आदि के प्रयोग द्विवचन और बहुवचन में भी होते हैं। जैसे—द्वे शते (two hundred, दो सौ), त्रीणि शतानि (three hundred, तीन सौ) इत्यादि।

पूरणवाचक (Ordinals)

संख्या	पुल्लिङ्ग,	स्त्रीलिङ्ग,	नपुंसक।
एक	प्रथमः (first, पहला,)	प्रथमा,	प्रथमम्
द्वि	द्वितीयः (second, दूसरा),	द्वितीया,	द्वितीयम्
त्रि	तृतीयः (third, तीसरा),	तृतीया,	तृतीयम्
चतुर्	चतुर्थः (fourth, चौथा),	चतुर्थी,	चतुर्थम्
पञ्चन्	पञ्चमः (fifth, पाँचवाँ),	पञ्चमी,	पञ्चमम्
षष्	षष्ठः (sixth, छठाँ),	षष्ठी,	षष्ठम्
सप्तन्	सप्तमः (seventh, सातवाँ),	सप्तमी	सप्तमम्
अष्टन्	अष्टमः (eighth, आठवाँ),	अष्टमी,	अष्टमम्
नवन्	नवमः (nineth, नवाँ),	नवमी,	नवमम्

दशन्	दशमः (tenth, दशवाँ),	दशमी,	दशमम्
एकादशन्	एकादशः (eleventh, ग्यारहवाँ)	एकादशी,	एकादशम्
द्वादशन्	द्वादशः (twelfth, बारहवाँ),	द्वादशी,	द्वादशम्
त्रयोदशन्	त्रयोदशः (thirteenth तेरहवाँ),	त्रयोदशी,	त्रयोदशम्
चतुर्दशन्	चतुर्दशः (fourteenth चौदहवाँ),	चतुर्दशी,	चतुर्दशम्
पञ्चदशन्	पञ्चदशः (fifteenth, पन्द्रहवाँ),	पञ्चदशी,	पञ्चदशम्
षोडशन्	षोडशः (sixteenth सोलहवाँ)	षोडशी,	षोडशम्
सप्तदशन्	सप्तदशः (seventeenth सत्रहवाँ),	सप्तदशी,	सप्तदशम्
अष्टादशन्	अष्टादशः (eighteenth अट्ठारहवाँ),	अष्टादशी,	अष्टादशम्
ऊनविंशति	ऊनविंशः, ऊनविंशतितमः (nineteenth, उन्नीसवाँ),	ऊनविंशी, ऊनविंशतितमी	ऊनविंशम् ऊनविंशतितमम्,
विंशति	विंशः, विंशतितमः (twentieth, बीसवाँ)	विंशी विंशतितमी,	विंशम्, विंशतितमम्

त्रिंशत्	(त्रिंशत्तमः	thirtieth, तीसवाँ),	त्रिंशत्तमी, त्रिंशत्तमम्
चत्वारिंशत्	चत्वारिंशत्तमः	(fortieth चालीसवाँ)	चत्वारिंशत्तमी चत्वारिंशत्तमम्
पञ्चाशत्	पञ्चाशत्तमः	(fiftieth, पचासवाँ,	पञ्चाशत्तमी, पञ्चाशत्तमम्
षष्टिः	षष्टितमः	(sixtieth साठवाँ),	षष्टितमी पष्टितमम्
सप्तति	सप्ततितमः	(seventieth सत्तरवाँ),	सप्ततितमी, सप्ततितमम्
अशीति	अशीतितमः	(eightieth, अस्सीवाँ),	अशीतितमी, अशीतितमम्
नवति	नवतितमः	(ninetieth, नब्बेवाँ)	नवतितमी, नवतितमम्
शत	शततमः	(hundredth, सौवाँ)	शततमी, शततमम्
सहस्र	सहस्रतमः	(thousandth, हजारवाँ)	सहस्रतमी सहस्रतमम् *

---

* जैसा विशेष्य रहेगा वैसा पुंल्लिग, स्त्रीलिंग और नपुंसक इन पूरणवाचक विशेषणों का प्रयोग होगा, जैसे, अष्टमः बालकः, अष्टमी तिथिः अष्टमं फलम् इत्यादि ।

अभ्यास (Exercise 23.)

(१) हिन्दी या अङ्गरेजी में अनुवाद करो (Translate into Hindi or English)—एका बालिका। चत्वारि फलानि। चतसृभिः बालिकाभिः। अशीतिः बालकाः। शतं नद्यः। षडशीतिः योधाः। चतुर्दशसु विद्यासु। एकादश्यां तिथौ। त्रिंशत्तमे दिने। अष्टादश्यां रात्रौ। षट् रसाः। अष्टोत्तरशतं छात्राः। पञ्चाशत्तमी बालिका।

(२) संस्कृत में अनुवाद करो (Translate into Sanskrit)–बीस लड़के (twenty boys). पैंतीस फल (thirty five fruits). चौवालिस लड़कों से (by forty four boys). महीने का तीसवाँ दिन (the thirtieth day of the month). दसवीं लड़की (the tenth daughter). हजार घोड़ों में (in thousand horses). साठवीं रात (the sixtieth night).

(३) शुद्ध करो (Correct):—चत्वारः कन्यकाः। त्रयाणां विद्यानाम्। त्रयः फलानि। शतैः बालकैः। सप्तमे रात्रौ। षष्ठमः छात्रः। विंशतीनां बालकानाम्।

अभ्यासार्थ अनुवाद (Translation)

जो सब जीवों की रात (which is the night of all beings)–या निशा सर्व्वभूतानाम्। ये स्त्रियाँ (these women)—इमाः स्त्रियः। तुझमें और मुझमें (in you and in me)–त्वयि मयि च। हमलोगों के गुरु लोग (superior of ours)–अस्माकं गुरवः। क्या तुम्हारा नाम (what is your name ?)—किं ते नाम। पूरब दिशा में (in the east)–पूर्व्वस्यां दिशि। वे हम लोगों के दिवस (those our days)–ते हि नो दिवसाः। जो (जौन) सो (तौन) मित्र (what ever friends)—यानि कानि च मित्राणि। जौन तौन पाप (what ever sins)—यानि कानि च पापानि। बरस के छै ऋतु (six

seasons of the year)—वत्सरस्य षट् ऋतवः। बारह मास (twelve months)—द्वादश मासाः। सौ अश्वमेध (hundred horse-sacrifices)—शतम् अश्वमेधाः। सत्तर फल (seventy fruits)-सप्ततिः फलानि। एक सौ आठ जप (hundred & eight mutterings) अष्टोत्तरशतं जपाः। आठवें अध्याय में (in the eighth chapter)—अष्टमे अध्याये। तीसवाँ दिन (the thirtieth day)-त्रिंशत्तमं दिनम्। बीसवीं रात को (in the twentieth night)-विंशीं, विंशतितमीं रात्रिम्। अठारह पुराणों में (in the eighteen Puranas)-अष्टादशसु पुराणेषु। पहला पुत्र (the first son)-प्रथमः पुत्रः।

❀ अव्यय (Indeclinables.)

जिन शब्दों के रूप तीनों लिङ्गों में, सातो विभक्तियों में और तीनों वचनों में समान रहते हैं उन्हें 'अव्यय' कहते हैं। केवल इनके अन्त के र् और स् का विसर्ग हो जाता है। यथा-

अकस्मात् (एकाएक, suddenly) अपि (भी, also)

अत्र (यहाँ, here)	अन्यथा (नहीं तो, otherwise)
अथ (अनन्तर, after)	अन्तर (भीतर, within)
अद्य (आज, to-day)	अन्तरेण (बिना, without)
अधुना (अब, now)	अलम् (बस, enough)
अन्यत्र (दूसरी जगह, else where)	अवश्यम् (जरूर, certainly)
	अपि, अये, अरे (oh)

---

* सदृशं त्रिषु लिङ्गेषु सर्व्वासु च विभक्तिषु।
वचनेषु च सर्व्वेषु यन्न व्येति तदव्ययम्॥
अव्यय—नहीं होता है व्यय (परिवर्त्तन) जिसका उसे अव्यय कहते हैं।

असाम्प्रतम् (अयोग्य, improper)
अहो (also)
आ (तक, as far as)
इतस् (यहाँ से, hence)
इति (इस तरह, so, in this way)
इत्थम् (इस तरह, thus)
इदानीम् (इस समय, just now
इव (ऐसा, as, like)
इह (यहाँ, here)
ईषत् (थोड़ा, a little)
उच्चैस् (जोर से, aloud)
उत (या, or)
ऋते (बिना, except)
उपरि (ऊपर, above)
एकत्र (एक जगह, in one place)
एकदा (एक बार, once)
एव (ही, only)
एवम् (इसी तरह, thus)
कच्चित् (क्या, what)
कथम् (क्यों, why)
कदाचित् (कभी, once upon a time)
कदा (कब, when)
क्व, कुत्र (कहाँ, where)
किम् (क्या, what)
किन्तु (लेकिन, but)
किल (सुना जाता है, it is heard)
कुतः (कहाँ, कहाँ से, where, whence)
केवलम् (केवल, only)
खलु (जरूर, certainly)
च (और, and)
चिरम्, चिरेण, चिराय, चिरात् (देर तक, for a long time)
चेत् (अगर, if)
ततस् (वहाँ से, thence)
तत्र (वहाँ, there)
तदा (तब, then)
तस्मात् (इसलिये, therefore)

जातु (कदाचित्, some time)
झटिति (जल्दी, soon)
तूष्णीम् (चुपचाप, silently)
दिवा (दिन में; by day)
दिष्ट्या (भाग्य से, fortunately)
द्राक् (जल्दी, soon)
धिक् (धिक्कार, fie)
ध्रुवम् (जरूर, certainly)
न, नो (नहीं, not)
नमस् (नमस्कार, Salutation)
नाम (by name)
ननु (अवश्य, surely)
नक्तम् (रात में, at night)
निकषा (समीप में, near)
नूनम् (अवश्य, certainly)
पुनर् (फिर, again)
पुरा (पहले, before, in ancient times)
पृथक् (अलग, apart)
प्रातर् (भोर में, in the morning)
परितः (चारों तरफ,around)
प्रायस् (प्रायः, frequently)
प्रत्युत (बल्कि, on the other hand)
प्राक् (पहले, before)
बहिः (बाहर, out)
भोस् (हे, hullo)
भूयस् (बारबार, repeatedly)
भृशम् (बहुत, greatly)
भूरि (बहुत, much)
मा (नहीं, not)
मिथ्या, मृषा (असत्य, false)
मिथस् (एकान्त में, in private)
मुहुस् (बार बार, again and again)
यतस् (क्योंकि, because)
यत्र (जहाँ, where)
यथा (जैसे, as)

यदा (जब, when)
यदि (अगर, if)
युगपत् (एक बार, at once)
वा (या, or)
विना (बगैर, except)
शीघ्रम् (जल्दी, soon)
शनैस् (धीरे धीरे, slowly)
श्वस् (कल्ह, to-morrow)
शश्वत् (सदा, always)
सकृत् (एक बार, once)
सदा (always)
सम्यक् (अच्छी तरह, well)
स्वयम् (खुद, one self)

सहसा (एकाएक, suddenly)
स्वर् (स्वर्ग, heaven)
सम्प्रति, साम्प्रतम् (अभी, now)
सह, साकम्, सार्द्धम् (साथ, with)
सुष्ठु (अच्छी तरह, well)
स्वस्ति (मङ्गल, blessing)
हि (क्योंकि, because)
हन्त (alas !)
हे (o)
ह्यस् (बीता हुआ कल, yesterday)

*इनके अतिरिक्त 'प्र परा, अप, सम्, नि, अव, अनु, निर्, दुर्, वि, अधि, सु, उत्, परि, प्रति, अभि, अति, अपि, उप, आ,' ये बीस अव्यय क्रिया के पूर्व में आने पर उपसर्ग कहे जाते हैं। क्रियाओं के पहले इन्हें लगा कर नाना प्रकार की अर्थों में विशेषता की जाती है। जैसे, गच्छति (जाता है), आगच्छति (आता है) इत्यादि ।

*हार (हृ धातु) का अर्थ है 'हरण, माला' पर 'प्र' लगाने से 'प्रहार' का अर्थ हो जाता है 'मारना'; 'आ' लगाने से 'आहार' का 'भोजन' 'सम्' लगाने से 'संहार' का 'नाश'; 'वि' लगाने से 'विहार' का रमण और 'परि' लगाने से 'परिहार' का 'त्याग' ।

N.B.—ये अव्यय और उपसर्ग हिन्दी में तो अव्यय और उपसर्ग ही कहलाते हैं पर अङ्गरेजी (English) के व्याकरण में इनमें से कोई preposition हैं, कोई conjunction, कोई adverb और कोई Interjection हैं।

विशेष्य और विशेषण

जिसके द्वारा किसी वस्तु, व्यक्ति, जाति, गुण या कर्म्म का बोध होता है उसे विशेष्य पद (substantive) कहते हैं, यथा-जलम्, गृहम् वृक्षः, देवदत्तः, सिंहः, सर्पः, शिशुः, पृथिवी, सूर्य्यः, पठनम्, अरुणता, शैत्यम् इत्यादि। जिसके द्वारा विशेष्य का गुण, अवस्था या संख्या का बोध होता है उसे विशेषण पद (adjective) कहते हैं। विशेषण पद विशेष्य के साथ रहता है। जैसे, नीलः घटः, नीलं वस्त्रम्, नीला नदी इत्यादि।

विशेष्य का जो लिङ्ग (gender) रहता है विशेषण का भी वही लिङ्ग होता है अर्थात् यदि विशेष्य पुलिङ्ग हो तो विशेषण भी पुलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग हो तो स्त्रीलिङ्ग और नपुंसक हो तो नपुंसक होता है। जैसे, सुन्दरः शिशुः, सुन्दरी कन्यका, सुन्दरं गृहम्; गुणवान् पुरुषः, गुणवती स्त्री, गुणवत् फलम्; त्रयः पुरुषाः, तिस्रः नद्यः, त्रीणि फलानि; उज्ज्वलः पटः, उज्ज्वला शाटी, उज्ज्वलं दुकूलम् इत्यादि।

विशेष्य का जो वचन (number) होता है, विशेषण का भी वही वचन होता है अर्थात् विशेष्य एकवचन का हो तो विशेषण भी एकवचन का होता है, द्विवचन का हो तो द्वि-

वचन का और बहुवचन का हो तो बहुवचन का होता है। यथा--सुन्दरं गृहम्, सुन्दरे गृहे, सुन्दराणि गृहाणि। बलवान् सिंहः, बलवन्तौ सिंहौ, बलवन्तः सिंहाः। वेगवती नदी, वेगवत्यौ नद्यौ, वेगवत्यः नद्यः इत्यादि। विशेष्य की जो विभक्ति होती है, विशेषण की भी वही विभक्ति होती है। यथा--सुन्दरः शिशुः, सुन्दरं शिशुम्, सुन्दरेण शिशुना, सुन्दराय शिशवे, सुन्दरात् शिशोः, सुन्दरस्य शिशोः, सुन्दरे शिशौ, निर्मलं जलम्, निर्मलेन जलेन, निर्मलाय जलाय, निर्मलात् जलात्, निर्मलस्य जलस्य, निमले जले इत्यादि।

अभ्यास (Exercise 24.)

(१) हिन्दी या अंगरेजी में अनुवाद करो (Translate into Hindi or English):—मलिनं नभः। मधुरा वाणी। मधुरया वाचा। शीतले वायौ। दरिद्रेभ्यः नरेभ्यः। चपलानां कपीनां। गुणिनि जने। धनवती नगरी।

(२) संस्कृत में अनुवाद करो (Translate into Sanskrit):—निर्मल जल के लिये (for pure water). निर्मल नदियों का (of pure rivers). सुन्दर शिशु में (in a handsome child). मधुर फलों का (of sweet fruits). मीठा मधु (sweet honey). वेगवती (दो) नदियों से (from two running rivers).

(३) शुद्ध करो (Correct):—शुष्कं तरुः। बलवान् पिपासा। मधुरौ फले। बहु फलानि। निर्मलं सरांसि। वेगवती नद्यौ। निर्मलात् जलस्य। महता परिश्रमाय।

स्त्रीप्रत्यय (Feminine bases)

अकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों में स्त्रीलिङ्ग बनाने में कहीं 'आ' और कहीं 'ई' प्रत्यय लगाये जाते हैं। ❀

---

* 'अजाद्यतष्टाप्' 'अज' (बकरा) आदि आकारान्त पुल्लिंग शब्दों के अन्त में स्त्रीलिंग बनाने में 'आ' प्रत्यय लगता है। यथा—अज-अजा, अश्व-अश्वा, चटक-चटका, कोकिल-कोकिला, मूषिक-मूषिका, बाल-बाला, वत्स-वत्सा, (विशेषण) मन्द-मन्दा, ज्येष्ठ-ज्येष्ठा, मध्यम-मध्यमा, कनिष्ठ-कनिष्ठा, स्थिर-स्थिरा, धीर-धीरा, दीन-दीना, मलिन-मलिना, कृश-कृशा, कृपण-कृपणा, क्रूर-क्रूरा, सरल-सरला, चपल-चपला, निपुण-निपुणा, प्रिय-प्रिया, पूर्व्व-पूर्व्वा, पश्चिम-पश्चिमा, तरल-तरला, चतुर-चतुरा, दक्ष-दक्षा, दृढ़-दृढ़ा, प्रथम-प्रथमा, द्वितीय-द्वितीया, तृतीय-तृतीया; (त-प्रत्ययान्त) कान्त-कान्ता, शान्त-शान्ता, शक्त-शक्ता, जात-जाता, भूत-भूता, गत-गता, इत्यादि।

'गौर' आदि शब्दों में 'ई' लगता है। यथा गौर-गौरी, कुमार-कुमारी, देव-देवी, नद-नदी, नट-नटी, नाग-नागी, ईश्वर-ईश्वरी, किशोर-किशोरी, सुन्दर-सुन्दरी, तरुण-तरुणी; (जातिवाचक) हंस-हंसी, मृग-मृगी, सिंह-सिंही, व्याघ्र-व्याघ्री, शूकर-शूकरी, कुक्कुर-कुक्कुरी, बक-बकी, मानुष-मानुषी, सर्प-सर्पी, ब्राह्मण-ब्राह्मणी, गोप-गोपी इत्यादि।

'ट' जिसका 'इत्' होता है ऐसे प्रत्यय से जो शब्द बने हैं, अण् प्रत्यय से बने जो शब्द हैं 'मात्र' प्रत्यय जिनके अन्त में हैं ऐसे शब्दों के अन्त में 'ई' प्रत्यय लगता है। यथा—भोगकर-भोगकरी, पतिघ्न-पतिघ्नी, स्वर्णमय-स्वर्णमयी, हिरण्मय-हिरण्मयी, मैथिल-मैथिली, वैष्णव-वैष्णवी, नर्त्तक-नर्त्तकी, उरुमात्र-उरुमात्री, इत्यादि।

बहुव्रीहि समास में अंगवाचक शब्दों के अन्त में 'आ' वा 'ई' लगता है। यथा—बिम्बोष्ठ-बिम्बोष्ठी, बिम्बोष्ठा, कृशांग-कृशांगी, कृशांगा, सुमुख-सुमुखी, सुमुखा, इत्यादि।

यथा—सर्व्व-सर्व्वा, स्थिर-स्थिरा, प्रबल-प्रबला, कृश-कृशा वैश्य-वैश्या, शूद्र-शूद्रा, दृढ़-दृढ़ा इत्यादि। वैष्णव-वैष्णवी, नद-नदी, हंस-हंसी, मृग-मृगी, गौर-गौरी, कुमार-कुमारी, सुन्दर-सुन्दरी इत्यादि।

जिन पुल्लिङ्ग शब्दों के अन्त में 'मत्' 'वत्' तथा 'इमन्' प्रत्यय होता है, उनके अन्त में स्त्रीलिङ्ग बनाने में 'ई' प्रत्यय लगता है। यथा—बुद्धिमत्-बुद्धिमती, श्रीमत्-श्रीमती, भक्तिमत्-भक्तिमती, बलवत्-बलवती, लज्ज़ावत्-लज्ज़ावती, विद्यावत्-विद्यावती, गुणवत्-गुणवती, मानिन्-मानिनी, मनोहारिन्-मनोहारिणी, मायाविन्-मयाविनी, शुभदायिन्-शुभदायिनी, चमत्कारिन्-चमत्कारिणी, इत्यादि।

'अत्' (शतृ) प्रत्ययान्त पुल्लिग शब्दों में स्त्रीलिङ्ग बनाने में 'ई' प्रत्यय लगता है। भ्वादिगणीय तथा दिवादिगणीय धातुओं से बने शब्दों में नित्य ही और तुदादि तथा अदादिगणीय आकारान्त धातुओं से बने शब्दों में विकल्प से 'त्' का 'न्त्' भी हो जाता है। यथा—गच्छत्-गच्छन्ती, तिष्ठत्-तिष्ठन्ती, पश्यत्-पश्यन्ती, पतत्-पतन्ती, नृत्यत्-नृत्यन्ती, वदत्-वदन्ती, गायत्-गायन्ती, रुदत्-रुदती, कुर्व्वत्-कुर्व्वती, गृह्णत्-गृह्णती, द्विषत्-द्विषती, इच्छत्-इच्छती-इच्छन्ती, यात्-याती-यान्ती इत्यादि।

जिन गुणवाचक शब्दों के अन्त में ह्रस्व 'उ' रहता है, स्त्रीलिङ्ग बनाने में उनके आगे विकल्प से 'ई' प्रत्यय लगता

है। यथा—मृदु-मृदुः, मृद्वी; साधु-साधुः, साध्वी; गुरु-गुरुः, गुर्व्वी; लघु-लघुः-लघ्वी इत्यादि।

जिन पुल्लिङ्ग शब्दों के अन्त में (ऋ) रहता है, उनके अन्त में 'ई' प्रत्यय लगता है। यथा—कर्तृ-कर्त्री, धातृ-धात्री, जनयितृ-जनयित्री, प्रसवितृ-प्रसवित्री इत्यादि।

अभ्यास (Exercise 25)

स्त्रीलिंग बनाओ (Give the feminines of):—धनवत्, मनोहारिन्, व्याघ्र, अश्व, शूद्र, लघु, धातृ, सुन्दर, बुद्धिमत्, कृश, दीन, धावत्, कुर्व्वत्।

(२) शुद्ध करो (Correct):—मलिनी कान्तिः। दुर्बलांगः नारी। गच्छती बालिका। मालां कुर्व्वन्ती मालिनी। लघ्वि बुद्धिः। जनयिता माता। सर्पा। शूकरा।

कारक (Case-endings)

कारक छः प्रकार के हैं—कर्त्ता, कर्म्म, करण, सम्प्रदान, अपादान और अधिकरण।

कर्ता*

जो क्रिया का सम्पादन करने वाला होता है अर्थात् जो क्रिया को करता है वह कर्त्ता कहलाता है। कर्त्ता में प्रथमा विभक्ति लगती है। यथा—बालकः क्रीड़ति (बालक खेलता है)। देवदत्तः गच्छति (देवदत्त जाता है)। मृगः धावति

* 'स्वतन्त्रः कर्त्ता' क्रिया के सम्पादन में जो स्वतंत्र हो उसे कर्त्ता-कारक कहते हैं।

(मृग दौड़ता है)। मृगौ धावतः (दो मृग दौड़ते हैं)। मृगाः धावन्ति (दो से अधिक मृग दौड़ते हैं) इत्यादि ।

कर्म्म *

कर्त्ता जिसको करता है, देखता है, खाता है, पीता है, देता है, स्पर्श करता है इत्यादि उन सभों को कर्म्म कहते हैं। कर्म्मकारक में द्वितीया विभक्ति होती है। यथा—घटं करोति (घड़े को बनाता है)। चन्द्रं पश्यति (चन्द्रमा को देखता है)। अन्नं भुङ्क्ते (अन्न को खाता है)। दुग्धं पिवति (दूध को पीता है)। धनं ददाति (धन को देता है)। गात्रं स्पृशति (शरीर को छूता है)। शत्रुं जयति (शत्रु को जीतता है)। शास्त्रम् अधीते (शास्त्र को पढ़ता है)। पुष्पं चिनोति (फूल को चुनता है)। गुरुं पृच्छति (गुरु को पूछता है)। ग्रामं गच्छति (गाँव को जाता है) इत्यादि ।

करण †

जिसके द्वारा क्रिया की जाती है, उसे करण कारक कहते हैं। करण कारक में तृतीया विभक्ति होती है। यथा—हस्तेन-गृह्णाति (हाथ से या हाथ के द्वारा ग्रहण करता है)। चक्षुषा

---

* 'कर्त्तुरीप्सिततमंकर्म' कर्त्ता अपनी क्रिया के द्वारा जिसको सबसे अधिक चाहता है उसे कर्म्म कारक कहते हैं ।

† 'साधकतमं करणम्' क्रिया के सम्पादन में जो सब से बढ़ कर सहायक हो उसे करण कहते हैं ।

पश्यति (नेत्र से या नेत्र के द्वारा देखता है)। दन्तेन चर्व्वयति (दाँत से या दाँत के द्वारा चबाता है)। दण्डेन ताडयति (दण्ड से या दण्ड के द्वारा ताड़ना करता है)। जलेन अग्निं निर्व्वापयति (जल से या जल के द्वारा आग बुझाता है)।

सम्प्रदान*

जिसके लिये या जिसको कोई पदार्थ दान दिया जाता है, उसे सम्प्रदान कारक कहते हैं। सम्प्रदान कारक में चतुर्थी विभक्ति होती है। यथा—दरिद्राय धनं दीयताम् (दरिद्र के लिये वा दरिद्र को† धन दो)। दीनेभ्यः अन्नं देहि (दीनों के लिये वा दीनों को अन्न दो)। मह्यं पुस्तकं देहि (मेरे लिये वा मुझको पुस्तक दो)।

अपादान‡

जिससे कोई गिरे, चले, .डरे, ग्रहण करे वा उत्पन्न हो इत्यादि, उसे अपादान कारक कहते हैं अर्थात् जिससे किसी वस्तु का वियोग जाना जाय उसे अपादान कहते हैं। अपादान कारक में पञ्चमी विभक्ति होती है। यथा—वृक्षात् पत्रं पतति (वृक्ष से पत्ता गिरता है)। व्याघ्रात् बिभेति (बाघ से डरता

---

* 'यस्मै दानं स सम्प्रदानम्' जिसके लिये दान किया जाय उसे सम्प्रदान् कारक कहते हैं।

† चतुर्थी विभक्ति का चिन्ह 'के लिये' और 'को' दोनों है।

‡ 'ध्रुवमपायेऽपादानम्' वियोग में जो ध्रुव हो अर्थात् निश्चल रहे उसे अपादान कारक कहते हैं।

है।) ग्रामात् चलति (गाँव से चलता है)। सरोवरात् जलं गृह्णाति (सरोवर से जल लेता है)। दुग्धात् घृतम् उत्पद्यते (दूध से घी उत्पन्न होता है)।

अधिकरण *

क्रिया के आधार को अधिकरण कहते हैं। अधिकरण कारक में सप्तमी विभक्ति होती है। यथा—शय्यायां शेते (शय्या पर सोता है)। आसने उपविशति (आसन पर बैठता है)। गृहे तिष्ठति (घर में रहता है)। विद्यायाम् अनुरागो विद्यते (विद्या में अनुराग है)। सुखे अभिलाषः अस्ति (सुख में अभिलाषा है)। दुग्धे माधुर्य्यम् अस्ति (दूध में मधुरता है)। कलशे जलम् अस्ति (घड़े में पानी है)। तिलेषु तैलम् अस्ति (तिल में तेल है)। पात्रे दुग्धं स्थापयति (पात्र में दूध रखता है)। वर्षासु वृष्टिः भवति (वर्षा में वृष्टि होती है)। सायङ्काले सूर्य्यः अस्तं गच्छति (सन्ध्या समय में सूर्य्य अस्त होते हैं)। रात्रौ चन्द्रः उदेति (रात में चन्द्रमा उदय लेते हैं)।

N. B.—हिन्दी में जिसे सम्बन्ध कारक कहते हैं, यथा—रामस्य पुस्तकम् (राम की पुस्तक); नद्याः तटम् (नदी का तट); पितुः पुत्रः (पिता का पुत्र) इत्यादि वह असल में कारक नहीं है क्योंकि इसका सम्बन्ध क्रिया के अर्थ के साथ नहीं रहता। इसलिये 'सम्बन्ध कारक' की

---

*'आधारोऽधिकरणम्' क्रिया के सम्पादन में जो आधार हो उसे अधिकरण कारक कहते हैं।

गणना कारकों में नहीं की गई है। सम्बन्ध अर्थ में शब्दों में केवल षष्ठी विभक्ति लगायी जाती है।

विद्यार्थी पदनिर्देश (Parsing) करने के समय कारक और विभक्ति का जो भेद है उसे भूल कर जहाँ प्रथमा विभक्ति देखते वहाँ कर्त्ता, पञ्चमी देखते वहाँ अपादान, सप्तमी देखते वहाँ अधिकरण आदि कह दिया करते हैं, पर कारक और प्रथमा; द्वितोया, तृतीया आदि विभक्तियाँ भिन्न हैं। क्रिया के अर्थ के साथ जिसका अन्वय (सम्बन्ध रहता है) उसे कारक कहते हैं। यथा—'काष्ठं छिनत्ति (काठ को काटता है) यहाँ छिनत्ति (काटना) क्रिया का जो अर्थ है उसके साथ काष्ठम् (काठ को) सम्बन्ध है क्योंकि 'छिनत्ति' (काटता है) यह कहने के बाद ही 'क्या वा किसको' काटता है यह जिज्ञासा (जानने की इच्छा) हो जाती है। फिर 'काष्ठं छिनत्ति' (काठ को काटता है) इतना कहने पर 'कौन' काटता है; किससे या किसके 'द्वारा' काटता है 'किस के लिये' काटता है; 'किस में से' काटता है और 'कहाँ' काटता है इनकी भी आकांक्षाएँ हो जाती हैं। तब 'कौन' काटता है इस प्रश्न के उत्तर में 'देवदत्तः छिनत्ति' (देवदत्त काटता है) यह सुनने पर 'देवदत्त' काटना क्रिया का करने वाला प्रतीत होता है, इसलिये इसका कर्त्ता नाम रक्खा गया है। फिर 'किससे या किसके द्वारा' इसके उत्तर में 'कुठारेण छिनत्ति' (कुल्हाड़ी से काटता है) यह सुन कर 'कुठार' (कुल्हाड़ी) क्रिया के सम्पादन में सब से विशेष

साधक जान पड़ता है इसलिये इसका नाम 'करण कारक' रक्खा गया है। फिर 'किसके लिये' काटता है इसके जवाब में 'गुरवे छिनत्ति' (गुरु के लिये काटता है) यह सुन कर 'गुरु' के लिये लकड़ी का दान समझा जाता है इसलिये इसका सम्प्रदान नाम रक्खा गया है। फिर 'किस में से' काटता है, इसके उत्तर में 'वृक्षात् छिनत्ति' (वृक्ष से काटता है) यह सुन कर 'वृक्ष' से लकड़ी काटने से वियोग ज्ञात होता है इस-लिये इसको 'अपादान' कहते हैं। फिर 'कहाँ' काटता है, इस के उत्तर में 'वने छिनत्ति' (वन में काटता है) यह सुनकर 'वन' काटना क्रिया का आधार समझा जाता है इसलिये इसको 'अधिकरण' कहते हैं। यों देखते हैं कि 'देवदत्तः कुठा-रेण गुरवे वृक्षात् वने काष्ठं छिनत्ति' इस वाक्य में देवदत्तः कर्त्ता है इसलिये इसमें प्रथमा विभक्ति; कुठारेण करण है इसलिये इसमें तृतीया विभक्ति; गुरवे सम्प्रदान है इसलिये इसमें चतुर्थी विभक्ति; वृक्षात् अपादान है इसलिये इसमें पञ्चमी विभक्ति; वने अधिकरण है इसलिये इसमें सप्तमी विभक्ति और काष्ठम् कर्म्म है इसलिये इसमें द्वितीया विभक्ति लगी है। ये प्रथमा, द्वितीया, तृतीया आदि विभक्तियाँ और भी कई नियमों के द्वारा अर्थविशेष में और शब्दविशेष के संयोग से शब्दों में लगती हैं और एक ही कारक में कई विभक्तियाँ अवस्था-भेद हो जाने से लगाई जाती हैं। यथा—कर्त्ता में प्रथमा विभक्ति होती है और कर्मवाच्य में उसी में तृतीया विभक्ति लग जाती है।

जैसे, रामेण रावणः हतः (राम से रावण मारा गया); कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है पर कर्मवाच्य में उसी कर्म में प्रथमा विभक्ति लग जाती है। जैसे, रावणः हतः (रावण मारा गया)। फिर केवल कर्म में ही द्वितीया, करण में ही तृतीया, सम्प्रदान में ही चतुर्थी आदि नहीं होती, दूसरे पदों (शब्दों) के सामीप्य (संयोग) रहने पर भी शब्दों में ये विभक्तियाँ लगती हैं, जैसे प्रतियोगे द्वितीया (जनं प्रति), विनायोगे तृतीया (तेन विना), मङ्गल आदियोगे चतुर्थी (तुभ्यं मङ्गलम्), इत्यादि। इसलिये व्याकरण में सुबन्त विभक्तियों का दो भेद किया गया है (१) कारक विभक्ति, अर्थात् जो कारक (कर्त्ता, कर्म, करण आदि) में होती है (२) उपपद विभक्ति, अर्थात् जो पद (शब्द) विशेष के संयोग के कारण लगाई जाती है। इसलिये नीचे उपपद विभक्तियों में जो जो मुख्य हैं उनका और अर्थ विशेष में जो होती हैं उनमें जो मुख्य हैं उनका विवरण दिया जाता है।

अर्थविशेष तथा शब्दविशेष के संयोग में विभक्तियों का प्रयोग।

(१) सम्बोधन में प्रथमा विभक्ति होती है। यथा—हे पितः, हे भ्रातरौ, हे पुत्र इत्यादि।

(२) जहाँ किसी व्यक्ति या वस्तु का केवल नाम कहा जाय, क्रियापद, कर्मपद आदि कुछ न रहे वहाँ उसमें प्रथमा

विभक्ति लगती है। यथा—वृक्षः, नदी, पुष्पम्, जलम्, रामः, सीता इत्यादि।

(३) व्याप्ति अर्थ में पथ तथा कालवाचक शब्द में द्वितीया विभक्ति होती है। यथा—दिवसम् उपवसति (दिन भर उपवास करता है)। क्रोशं गिरिः स्थितः (एक कोश तक पर्व्वत है)।

(४) धिक्, प्रति (अभितः; परितः) आदि कई शब्दों के योग में द्वितीया विभक्ति होती है। यथा—पापिनं धिक् (पापी को धिक्कार है)। कृपणं धिक् (कृपण-सूम-को धिक्कार है)। गुरो! मां प्रति सदयो भव (हे गुरु! मेरे प्रति दयायुक्त होवो)। दीनं प्रति दया उचिता (दीन के प्रति दया करना उचित है)।

(५) क्रियाविशेषण में द्वितीया विभक्ति एकवचन में होती है और उसका रूप नपुंसक लिङ्ग के समान होता है। यथा—शीघ्रं गच्छति (शीघ्र जाता है)। सत्वरं धावति (तेजी से दौड़ता है)। मधुरं हसति (मधुर हँसी हँसता है)। बहु भुङ्क्ते (बहुत खाता है)।

(६) सह, सार्द्धम्, अलम्, किम् इत्यादि कई शब्दों के योग में तृतीया विभक्ति होती है। यथा—रामो लक्ष्मणेन सह वनं जगाम (राम, लक्ष्मण के साथ वन गये)। केनापि सार्द्धं विरोधो न कर्त्तव्यः (किसी के साथ विरोध नहीं करना चाहिये)। विवादेन अलम् (विवाद से प्रयोजन नहीं) कलहेन किम् (कलह से क्या ?)।

(७) निमित्तार्थ में तथा नमस् शब्द के योग में चतुर्थी

विभक्ति होती है। यथा—ज्ञानाय अध्ययनम् (ज्ञान के निमित्त अध्ययन)। सुखाय धनोपार्ज्जनम् (सुख के निमित्त धनोपार्ज्जन)। परोपकारायसतां जीवनम् (परोपकार के निमित्त सज्जनों का जीवन)। गुरवे नमः (गुरु को प्रणाम)। पित्रे नमः (पिता को प्रणाम)।

(८) हेत्वर्थबोधक शब्द में तृतीया तथा पञ्चमी होती है। यथा—भयेन कम्पते (भय के कारण काँपता है)। क्रोधेन ताड्यति (क्रोध के कारण मारता है)। हर्षात् नृत्यति (हर्ष के कारण नाचता है)। दुःखात् रोदिति (दुःख के कारण रोता है)।

(९) अन्य, पृथक् आदि कई शब्दों के योग में तथा अपेक्षा का अर्थबोध होने पर पञ्चमी विभक्ति होती है। यथा—मित्रात् अन्यः कः परित्रातुं समर्थः (मित्र से दूसरा कौन रक्षा कर सकता है)। इदम् अस्मात् पृथक् (यह इससे फरक है)। धनात् विद्या गरीयसी (धन से विद्या बड़ी है)।

(१०) "विना" शब्द के योग से द्वितीया, तृतीया तथा पञ्चमी विभक्ति होती है। यथा—श्रमम् वा श्रमेण वा श्रमात् विना विद्या न भवति। (श्रम के विना विद्या नहीं होती है)।

(११) सम्बन्ध में षष्ठी विभक्ति होती है। यथा—मम हस्तः (मेरा हाथ)। तव पुत्रः (तुम्हारा पुत्र)। नद्याः जलम् (नदी का जल)। वृक्षस्य शाखा (वृक्ष की शाखा)। कोकिलस्य कलरवाः (कोकिल के कलरव)। प्रभोरादेशः (स्वामी की आज्ञा) इत्यादि।

(१२) सम, तुल्य, समान, सदृश इत्यादि शब्दों के योग में तृतीया तथा षष्ठी विभक्ति होती है। यथा— विद्यया समं धनं नास्ति (विद्या के समान धन नहीं है)। विनयस्य तुल्यो गुणो नास्ति (विनय के तुल्य गुण नहीं है)।

(१३) जहाँ पर किसी समूह में से केवल एक वस्तु अथवा व्यक्ति विशेष को निर्द्धारित (निश्चित) किया जाता है वहाँ उस एक वस्तु या व्यक्ति में षष्ठी तथा सप्तमी विभक्ति होती है। इसे निर्धारणे षष्ठी तथा सप्तमी कहते हैं। यथा—पर्व्वतानां हिमालयः श्रेष्ठः (पर्व्वतों में हिमालय श्रेष्ठ है)। कविषु कालिदासः श्रेष्ठः (कवियों में कालिदास श्रेष्ठ हैं)।

अभ्यास (Exercise 26.)

(१) वाक्य बनाकर निम्नलिखितों का उदाहरण दो (Frame sentences to illustrate)—निर्धारणे षष्ठी तथा सप्तमी। क्रिया विशेषणे द्वितीया। व्याप्त्यर्थे द्वितीया। सहयोगे तृतीया। अपादाने पञ्चमी। विनायोगे द्वितीया, तृतीया, पञ्चमी। हेत्वर्थे तृतीया, पञ्चमी। निमित्तार्थे चतुर्थी।

(२) हिन्दी या अँग्रेजी में अनुवाद करो और सुबन्त पदों का पद-निर्देश करो (Translate into Hindi or English and account for the case endings)—मृगाः धावन्ति। पुष्पं चिनोति। रात्रौ चन्द्रः उदेति। तिलेषु तैलमस्ति। पापिनं धिक्। मधुरं हसति। केनापि सार्द्धं विरोधो न कर्त्तव्यः। पित्रे नमः। धनात् विद्या गरीयसी। श्रमेण विना विद्या न भवति। विद्यया समं धनं नास्ति। कविषुकालिदासः श्रेष्ठः।

(३) शुद्ध करो (Correct):—दरिद्रं धनं दीयताम्। मम प्रति

सदयो भव। मित्रेण अन्यः कः परित्रातुं समर्थः। धर्मस्य विना सुखं न भवति। पितरं नमः। कलहात् किम्। विवादात् अलम्। व्याघ्रं बिभेति।

तिङन्त प्रकरण।

भू (होना), स्था (ठहरना), गम् (जाना), दृश् (देखना, इत्यादि को धातु (verbal roots) कहते हैं। इन्हीं धातुओं से क्रियाएँ (verbs) बनाई जाती हैं। धातु के अन्त में जो विभक्तियाँ लगाई जाती हैं उन्हें तिङ् कहते हैं। इसलिये क्रिया-वाचक पद को तिङन्त पद कहते हैं।

क्रिया तीन काल में होती है—वर्त्तमान (Present tense), भूत (Past tense) और भविष्यत् (Future tense)। जो उपस्थित है उसे वर्त्तमान काल कहते हैं; यथा—पश्यति (देखता है), पश्यामि (देखता हूँ), जो बीत चुका उसे भूत (अतीत) काल कहते हैं; यथा—ददर्श (देखा, देखा था), अकरोत् (किया, किया था)। जो होने वाला है उसे भविष्यत् काल कहते हैं, यथा—गमिष्यामि (जाऊँगा), करिष्यामि (करूँगा) इत्यादि।

क्रिया में भी तीन वचन होते हैं; एकवचन, द्विवचन और बहुवचन। एकवचन का कर्त्ता रहने से क्रिया एकवचन, द्विवचन का रहने से द्विवचन और बहुवचन का रहने से बहुवचन होती है। यथा—अहं गच्छामि (मैं जाता हूँ), आवाम् गच्छावः (हम दोनों जाते हैं), वयं गच्छामः (हम लोग जाते हैं)।

त्वं गमिष्यसि (तू जायगा), युवाम् गमिष्यथः (तुम दोनों जाओगे), यूयं गमिष्यथ (तुम लोग जाओगे) स गमिष्यति (वह जायगा), तौ गमिष्यतः (वे दोनों जायँगे), ते गमिष्यन्ति (वे लोग जायँगे) ।

प्रथम पुरुष (Third person), मध्यम पुरुष (Second person) और उत्तम पुरुष (First person) में धातु के अन्त में भिन्न भिन्न विभक्तियाँ लगती हैं । अस्मद् (मैं, I) शब्द से उत्तमपुरुष), युष्मद् (तुम you) शब्द से मध्यम पुरुष का बोध होता है । इनके अतिरिक्त अन्य सभी शब्दों से प्रथम-पुरुष समझा जाता है । यथा—अहं गच्छामि (मैं जाता हूँ)—उत्तम पुरुष; त्वं गच्छसि (तू जाता है) मध्यम पुरुष राजा गच्छति (राजा जाता है)—प्रथम पुरुष ।*

अकर्म्मक क्रिया

जिन क्रियाओं को कर्म्म की आवश्यकता नहीं होती उन्हें अकर्म्मक क्रिया (Intransitive verb) कहते हैं । यथा—अहं तिष्ठामि (मैं रहता हूँ), शिशुः शेते (बच्चा सोता है), अश्वो धावति (घोड़ा दौड़ता है), नदी वर्द्धते (नदी बढ़ती है) ।

---

* भवत् (भवान्, भवन्तौ, भवन्तः इत्यादि) का यद्यपि युष्मद् के ऐसा (आप) अर्थ है तथापि यह प्रथम पुरुष है । यथा—भवान् गच्छति (शुद्ध है), गच्छसि (अशुद्ध है) ।

सकर्म्मक क्रिया ।

जिन क्रियाओं को कर्म्म की आवश्यकता होती है उन्हें सकर्म्मक क्रिया (Transitive verb) कहते हैं। यथा—गुरुः शिष्यम् उपदिशति (गुरु शिष्य को उपदेश करता है), रामः रावणं जघान (राम ने रावण को मारा)।

तिङ् विभक्तियाँ (लकार)।

वर्त्तमान काल में धातु के अन्त में लट् विभक्ति लगती है, भूत (अतीत) काल में लङ् तथा लिट् विभक्तियाँ लगती हैं। भविष्यत् काल में लृट् विभक्ति लगती है। विधि (अनुज्ञा) अनुरोध, निमन्त्रण, प्रार्थना आदि अर्थों में लोट् और विधि-लिङ् की विभक्तियाँ होती है। इन लट्, लङ्, लृट् आदि विभक्तियों में से प्रत्येक दो भागों में विभक्त हैं (१) परस्मैपद (२) आत्मनेपद ।*

विभक्तियों की आकृति ।

लट्–वर्तमानकाल (Present tense)

परस्मैपद ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	ति	सि	मि
द्विवचन	तस्	थस्	वस्
बहुवचन	अन्ति	थ	मस्

* कुछ धातुओं में परस्मैपद, कुछ धातुओं में आत्मनेपद और कई धातुओं में दोनों पदों की विभक्तियाँ लगती हैं; इसलिये धातु परस्मैपदी, आत्मनेपदी और उभयपदी तीन प्रकार के होते हैं ।

आत्मनेपद ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	ते	से	ए
द्विवचन	आते	आथे	वहे
बहुवचन	अन्ते	ध्वे	महे

लोट्–अनुज्ञा (Imperative mood)

परस्मैपद ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	तु	हि	आनि
द्विवचन	ताम्	तम्	आव
बहुवचन	अन्तु	त	आम

आत्मनेपद ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	ताम्	स्व	ऐ
द्विवचन	आताम्	आथाम्	आवहै
बहुवचन	अन्ताम्	ध्वम्	आमहै

लङ्–भूतकाल (Past tense)

परस्मैपद ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	त्	स्	अम्
द्विवचन	ताम्	तम्	व
बहुवचन	अन्	त	म

आत्मनेपद ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	त	थस्	इ
द्विवचन	आताम्	आथाम्	वहि
बहुवचन	अन्त	ध्वम्	महि

विधिलिङ् (Potential mood)

परस्मैपद ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	यात्	यास्	याम्
द्विवचन	याताम्	यातम्	याव
बहुवचन	युस्	यात	याम

आत्मनेपद ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	ईत	ईथास्	ईय
द्विवचन	ईयाताम्	ईयाथाम्	ईवहि
बहुवचन	ईरन्	ईध्वम्	ईमहि

लृट्–भविष्यत् (Future tense)

परस्मैपद ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	स्यति	स्यसि	स्यामि
द्विवचन	स्यतः	स्यथः	स्यावस्
बहुवचन	स्यन्ति	स्यथ	स्यामस्

आत्मनेपद ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	स्यते	स्यसे	स्ये
द्विवचन	स्येते	स्येथे	स्यावहे
बहुवचन	स्यन्ते	स्यध्वे	स्यामहे

लिट्—अतीत (भूत)–(Past tense)

परस्मैपद ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	अ	थ	अ
द्विवचन	अतुस्	अथुस्	व
बहुवचन	उस्	अ	म

आत्मनेपद ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	ए	से	ए
द्विवचन	आते	आथे	वहे
बहुवचन	इरे	ध्वे	महे*

धातुरूप ।

अकर्मक क्रिया ।

'भू' धातु—होना (To be)

लट्—वर्त्तमानकाल

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	भवति	भवसि	भवामि
द्विवचन	भवतः	भवथः	भवावः
बहुवचन	भवन्ति	भवथ	भवामः

* हिन्दी का पूर्णभूत (हुआ था, गया था, had been, had gone) संस्कृत का लिट् है ।

लोट्—अनुज्ञा (Imperative Mood)

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	भवतु	भव	भवानि
द्विवचन	भवताम्	भवतम्	भवाव
बहुवचन	भवन्तु	भवत	भवाम

विधिलिङ्—(Potential Mood)

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	भवेत्	भवेः	भवेयम्
द्विवचन	भवेताम्	भवेतम्	भवेव
बहुवचन	भवेयुः	भवेत	भवेम

लङ्–भूतकाल (Past Tense)

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	अभवत्	अभवः	अभवम्
द्विवचन	अभवताम्	अभवतम्	अभवाव
बहुवचन	अभवन्	अभवत	अभवाम

लिट्–अतीतभूत (पूर्णभूत Past Perfect)

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	बभूव	बभूविथ	बभूव
द्विवचन	बभूवतुः	बभूवथुः	बभूविव
बहुवचन	बभूवुः	बभूव	बभूविम

लृट्—भविष्यत् काल (Future Tense)

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	भविष्यति	भविष्यसि	भविष्यामि
द्विवचन	भविष्यतः	भविष्यथः	भविष्यावः
बहुवचन	भविष्यन्ति	भविष्यथ	भविष्यामः*

* उत्तमपुरुष के एकवचन, द्विवचन और बहुवचन के कर्त्ता क्रमशः 'अहं, आवाम् और वयम्' हैं। यथा—लट् (वर्त्तमान काल)—अहं भवामि (मैं होता हूँ), आवाम् भवावः (हम दोनों होते हैं), वयं भवामः (हम सब होते हैं)। मध्यमपुरुष के एकवचन, द्विवचन और बहुवचन के कर्त्ता क्रमशः 'त्वं, युवाम् और यूयम्' हैं। यथा—लट् (वर्त्तमान काल)—त्वं भवसि (तू होता है), युवाम् भवथः (तुम दोनों होते हो), यूयम् भवथ (तुम सब होते हो)। अस्मद् और युष्मद् के अतिरिक्त सभी अन्य शब्द क्रिया के प्रथमपुरुष के कर्त्ता होते हैं। यथा—लट्—स भवति (वह होता है), तौ भवतः (वे दोनों होते हैं), ते भवन्ति (वे सब होते हैं) तथा बालकः भवति (बालक होता है), बालकौ भवतः (दो बालक होते हैं), बालकाः भवन्ति (दो से अधिक बालक होते हैं) इत्यादि।

इसी प्रकार, लोट्-उत्तमपुरुष-अहं भवानि (मैं होऊँ), आवाम् भवाव (हम दोनों होवें), वयं भवाम (हम सब होवें)। मध्यमपुरुष-त्वं भव (तू हो), युवाम् भवतम् (तुम दोनों होओ), यूयम् भवत (तुम सब होओ)। प्रथमपुरुष-स भवतु (वह होवे), तौ भवताम् (वे दोनों होवें), ते भवन्तु (वे सब होवें)। विधि लिङ्—उत्तमपुरुष-अहं भवेयम् (मैं होऊँ), आवाम् भवेव (हम दोनों होव); वयं भवेम (हम सब होवें)। मध्यमपुरुष-त्वं भवेः (तू हो), युवाम् भवे

अभ्यास (Exercise 27)

(१) हिन्दी या अँग्रेजी में अनुवाद करो (Translate into Hindi or English):—स सुखी भवति । बालकाः प्रसन्नाः भवन्ति । अहं ज्वरी अभवम् । ते दीर्घायुषः भवेयुः । स श्रमी भवतु । तव पुत्रः सफलो भविष्यति । त्वं सुखी भव । ब्राह्मणाः निर्भयाः भवन्तु ।

(२) संस्कृत में अनुवाद करो (Translate into Sanskrit):–

तम् (तुम दोनों होओ), यूयम् भवेत (तुम सब होओ)। प्रथम-पुरुष–स भवेत् (वह होवे), तौ भवेताम् (वे दोनों होवें), ते भवेयुः (वे सब होवें)। लङ्–उत्तमपुरुष-अहम् अभवम् (मैं हुआ), आवाम् अभवाव (हम दोनों हुए), वयम् अभवाम (हम सब हुए)। मध्यम-पुरुष-त्वम् अभवः (तू हुआ), युवाम् अभवतम् (तुम दोनों हुए), यूयम् अभवत (तुम सब हुए)।

प्रथमपुरुष—स अभवत् (वह हुआ), तौ अभवताम् (वे दोनों हुए), ते अभवन् (वे सब हुए)। लृट्—उत्तमपुरुष–अहं भविष्यामि (मैं होऊँगा), आवाम् भविष्यावः (हम दोनों होंगे), वयम् भविष्यामः (हम सब होंगे)। मध्यमपुरुष–त्वं भविष्यसि (तू होगा), युवाम् भविष्यथः (तुम दोनों होंगे), यूयम् भविष्यथ (तुम सब होगे)। प्रथमपुरुष—स भविष्यति (वह होगा), तौ भविष्यतः (वे दोनों होंगे) ते भविष्यन्ति (वे सब होंगे)। लिट्—उत्तमपुरुष-अहं बभूव (मैं हुआ वा हुआ था), आवाम् बभूविव (हम दोनों हुए वा हुए थे), वयं बभूविम (हम सब हुए वा हुए थे)। मध्यमपुरुष—त्वं बभूविथ (तू हुआ), युवाम् बभूवथुः (तुम दोनों हुए), यूयम् बभूव (तुम सब हुए)। प्रथमपुरुष–स बभूव (वह हुआ), तौ बभूवतुः (वे दोनों हुए), ते बभुवुः (वे सब हुए)।

इसी तरह दूसरे धातुओं के विषय में भी जानना चाहिये।

मैं प्रसन्न होता हूँ (I am pleased), उसके लड़के चिन्तित होते हैं। (His sons are anxious), वह स्वस्थ होगा (He will be healthy), लड़के आनन्दित हुए (Boys were happy), मेरा पुत्र सफल होवे (May my son be successful), वे दोनों दुःखी होंगे (Both of these will be sorry).

(३) शुद्ध करो (Correct):—वयं सुखिनो भविष्यावः। त्वं प्रसन्नः भवति। तौ स्वस्थौ अभवन्। यूयं धनिनः भवसि। ते पुत्र-वन्तः भवेताम्।

'स्था' धातु—रहना, ठहरना (To stay)

लट्—वर्तमानकाल।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	तिष्ठति	तिष्ठसि	तिष्ठामि
द्विवचन	तिष्ठतः	तिष्ठथः	तिष्ठावः
बहुवचन	तिष्ठन्ति	तिष्ठथ	तिष्ठामः

लोट्–अनुज्ञा।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	तिष्ठतु	तिष्ठ	तिष्ठानि
द्विवचन	तिष्ठताम्	तिष्ठतम्	तिष्ठाव
बहुवचन	तिष्ठन्तु	तिष्ठत	तिष्ठाम

विधिलिङ्–(विधि) (Potential Mood)

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	तिष्ठेत्	तिष्ठेः	तिष्ठेयम्
द्विवचन	तिष्ठेताम्	तिष्ठेतम्	तिष्ठेव
बहुवचन	तिष्ठेयुः	तिष्ठेत	तिष्ठेम

लङ्-भूतकाल ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	अतिष्ठत्	अतिष्ठः	अतिष्ठम्
द्विवचन	अतिष्ठताम्	अतिष्ठतम्	अतिष्ठाव
बहुवचन	अतिष्ठन्	अतिष्ठत	अतिष्ठाम

लिट्—अतीतभूत (Past Perfect)

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	तस्थौ	तस्थिथ, तस्थाथ	तस्थौ
द्विवचन	तस्थतुः	तस्थथुः	तस्थिव
बहुवचन	तस्थुः	तस्थ	तस्थिम

लृट्—भविष्यत् ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	स्थास्यति	स्थास्यसि	स्थास्यामि
द्विवचन	स्थास्यतः	स्थास्यथः	स्थास्यावः
बहुवचन	स्थास्यन्ति	स्थास्यथ	स्थास्यामः

अभ्यास (Exercise 28)

(१) संस्कृत में अनुवाद करो (Translate into Sanskrit):—
वह नगर में रहता है—(He stays in a town). मैं मथुरा में ठहरूँगा—(I shall stay in Mathura). तुम लोग काशी में ठहरना—(Let you all stay in Kashi). ब्राह्मण लोग घर में ठहरे थे। (The Brahmans stayed in the house). तुम यहाँ ठहरो—(You stay here). कब वे वहाँ ठहरेंगे !—(When will they stay there).

(२) शुद्ध करो (Correct):—ते अतिष्ठत् । अहं तिष्ठिष्यामि । त्वं तत्र तिष्ठेत् । यूयं तिष्ठ । वयं स्थास्यामि । वयं तस्थौ ।

'हस्' धातु—हँसना (To laugh)

लट्—वर्त्तमानकाल ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	हसति	हससि	हसामि
द्विवचन	हसतः	हसथः	हसावः
बहुवचन	हसन्ति	हसथ	हसामः

लोट्—अनुज्ञा ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	हसतु	हस	हसानि
द्विवचन	हसताम्	हसतम्	हसाव
बहुवचन	हसन्तु	हसत	हसाम

विधिलिङ्—विधि ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	हसेत्	हसेः	हसेयम्
द्विवचन	हसेताम्	हसेतम्	हसेव
बहुवचन	हसेयुः	हसेत	हसेम

लङ्—भूतकाल ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	अहसत्	अहसः	अहसम्
द्विवचन	अहसताम्	अहसतम्	अहसाव
बहुवचन	अहसन्	अहसत	अहसाम

लिट्—अतीतभूत (Past Perfect)

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	जहास	जहसिथ	जहास, जहस
द्विवचन	जहसतुः	जहसथुः	जहसिव
बहुवचन	जहसुः	जहस	जहसिम

लृट्—भविष्यत्

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	हसिष्यति	हसिष्यसि	हसिष्यामि
द्विवचन	हसिष्यतः	हसिष्यथः	हसिष्यावः
बहुवचन	हसिष्यन्ति	हसिष्यथ	हसिष्यामः

अभ्यास (Exercise 29)

(१) संस्कृत मे अनुवाद करो (Translate into Sanskrit):- वे सब हँसे—(They laughed). तुम क्यों हँसते हो ?—(Why do you laugh). तुम पर वे सब हँसेंगे—(They will laugh at you). अन्धों पर मत हँसो—(Do not laugh at the blind) मैं न हँसूँगा—(I shall not laugh).

(२) शुद्ध करो (Correct):—त्वं हसति। ते जहास। वयम् अहसन्। यूयं हसिष्यथः। कथं ते हसतः।

'रुद्' धातु—रोना (To cry, to weep)

लट्—वर्तमानकाल।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	रोदिति	रोदिषि	रोदिमि
द्विवचन	रुदितः	रुदिथः	रुदिवः
बहुवचन	रुदन्ति	रुदिथ	रुदिमः

लोट्—अनुज्ञा।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	रोदितु	रुदिहि	रोदानि
द्विवचन	रुदिताम्	रुदितम्	रोदाव
बहुवचन	रुदन्तु	रुदित	रोदाम

विधिलिङ्—विधि।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	रुद्यात्	रुद्याः	रुद्याम्
द्विवचन	रुद्याताम्	रुद्यातम्	रुद्याव
बहुवचन	रुद्युः	रुद्यात	रुद्याम

लङ्—भूतकाल।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	अरोदीत्, (अरोदत्)	अरोदीः, (अरोदः)	अरोदम्
द्विवचन	अरुदिताम्	अरुदितम्	अरुदिव
बहुवचन	अरुदन्	अरुदित	अरुदिम

लिट्—अतीतभूत।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरु
एकवचन	रुरोद	रुरोदिथ	रुरोद
द्विवचन	रुरुदतुः	रुरुदथुः	रुरुदिव
बहुवचन	रुरुदुः	रुरुद	रुरुदिम

लृट्—भविष्यत् काल।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	रोदिष्यति	रोदिष्यसि	रोदिष्यामि
द्विवचन	रोदिष्यतः	रोदिष्यथः	रोदिष्यावः
बहुवचन	रोदिष्यन्ति	रोदिष्यथ	रोदिष्यामः

अभ्यास (Exercise 30)

(१) संस्कृत में अनुवाद करो (Translate into Sanskrit):– वे सब रोए वा रोए थे—(They wept). मैं रोऊँगा—(I shall weep). तुम क्यों रोते हो—(Why do you weep). लड़के केवल रोते हैं—(Children only cry). तुम लोग मत रोओ—(You should not cry). मैं रोता हूँ—(I cry).

(२) शुद्ध करो (Correct):—तौ रुदिथः। अहं रुदिष्यामि। त्वं मा रुद। यूयं रुद्याः। ते अरोदन्।

'पत्' धातु–गिरना (To fall)

लट्—वर्त्तमानकाल।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	पतति	पतसि	पतामि
द्विवचन	पततः	पतथः	पतावः
बहुवचन	पतन्ति	पतथ	पतामः

लोट्—अनुज्ञा।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	पततु	पत	पतानि
द्विवचन	पतताम्	पततम्	पताव
बहुवचन	पतन्तु	पतत	पताम

विधिलिङ्—विधि।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	पतेत्	पतेः	पतेयम्
द्विवचन	पतेताम्	पतेतम्	पतेव
बहुवचन	पतेयुः	पतेत	पतेम

लङ्—भूतकाल।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	अपतत्	अपतः	अपतम्
द्विवचन	अपतताम्	अपततम्	अपताव
बहुवचन	अपतन्	अपतत	अपताम

लिट्—अतीतभूत।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	पपात	पेतिथ	पपात
द्विवचन	पेततुः	पेतथुः	पेतिव
बहुवचन	पेतुः	पेत	पेतिम

लृट्—भविष्यत् काल।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	पतिष्यति	पतिष्यसि	पतिष्यामि
द्विवचन	पतिष्यतः	पतिष्यथः	पतिष्यावः
बहुवचन	पतिष्यन्ति	पतिष्यथ	पतिष्यामः

अभ्यास (Exercise 31)

(१) संस्कृत में अनुवाद करो (Tarnslate into Sanskrit)—आकाश से फूल गिरे—(Flowers fell from the sky). वृक्ष से पत्ते गिरते हैं—(Leaves fall from trees). वह तुरत गिर जायगा—(He will fall at once). तुम मत गिरो—(Do not fall). वे गिर सकते हैं—(They may fall–विधि लिङ्).

(२) शुद्ध करो (Correct):—ते अपतत्। यूयं पतिष्यथः। वयम् अपतामः। कथं त्वं पतति। अहं पेत। वानराः वृक्षात् अपतन्त।

सकर्मक क्रिया।

'कृ' धातु–करना (To do)

लट्–वर्त्तमानकाल (परस्मैपद)

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	करोति	करोषि	करोमि
द्विवचन	कुरुतः	कुरुथः	कुर्व्वः
बहुवचन	कुर्वन्ति	कुरुथ	कुर्म्मः

लोट्—अनुज्ञा।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	करोतु	कुरु	करवाणि
द्विवचन	कुरुताम्	कुरुतम्	करवाव
बहुवचन	कुर्व्वन्तु	कुरुत	करवाम

विधिलिङ्—विधि ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	कुर्य्यात्	कुर्य्याः	कुर्य्याम्
द्विवचन	कुर्य्याताम्	कुर्य्यातम्	कुर्य्याव
बहुवचन	कुर्य्युः	कुर्य्यात	कुर्य्याम

लङ्—भूतकाल ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	अकरोत्	अकरोः	अकरवम्
द्विवचन	अकुरुताम्	अकुरुतम्	अकुर्व्व
बहुवचन	अकुर्व्वन्	अकुरुत	अकुर्म्म

लिट—अतीतभूत ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	चकार	चकर्थ	चकार, चकर
द्विवचन	चक्रतुः	चक्रथुः	चकृव
बहुवचन	चक्रुः	चक्र	चकृम

लृट्—भविष्यत्काल ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	करिष्यति	करिष्यसि	करिष्यामि
द्विवचन	करिष्यतः	करिष्यथः	करिष्यावः
बहुवचन	करिष्यन्ति	करिष्यथ	करिष्यामः

आत्मनेपद ।

लट्—वर्त्तमानकाल ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	कुरुते	कुरुषे	कुर्व्वे
द्विवचन	कुर्व्वाते	कुर्व्वाथे	कुर्व्वहे
बहुवचन	कुर्व्वते	कुरुध्वे	कुर्म्महे

लोट्—अनुज्ञा ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	कुरुताम्	कुरुष्व	करवै
द्विवचन	कुर्व्वाताम्	कुर्व्वाथाम्	करवावहै
बहुवचन	कुर्व्वताम्	कुरुध्वम्	करवामहै

विधिलिङ्—विधि ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	कुर्व्वीत	कुर्व्वीथाः	कुर्व्वीय
द्विवचन	कुर्व्वीयाताम्	कुर्व्वीयाथाम्	कुर्व्वीवहि
बहुवचन	कुर्व्वीरन्	कुर्व्वीध्वम्	कुर्व्वीमहि

लङ्—भूतकाल ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	अकुरुत	अकुरुथाः	अकुर्व्वि
द्विवचन	अकुर्व्वातान्	अकुर्व्वाथाम्	अकुर्व्वहि
बहुवचन	अकुर्व्वत	अकुरुध्वम्	अकुर्म्महि

लिट्—अतीतभूत ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	चक्रे	चकृषे	चक्रे
द्विवचन	चक्राते	चक्राथे	चकृवहे
बहुवचन	चक्रिरे	चकृढ्वे	चकृमहे

लृट्—भविष्यत्काल ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	करिष्यते	करिष्यसे	करिष्ये
द्विवचन	करिष्येते	करिष्यथे	करिष्यावहे
बहुवचन	करिष्यन्ते	करिष्यध्वे	करिष्यामहे

अभ्यास (Exercise 32)

(१) संस्कृत में अनुवाद करो (Translate into Sanskrit)—मैं इस काम को करूँगा—(I shall do this work). उनने यह किया—(They did this). तुम यह करो—(Do this). वे इसे करें—(May they do this). तुम लोग अपना कर्त्तव्य करो—(Do your duty) ।

(२) शुद्ध करो (Correct):—ते अकरोत् । वयम् इदम् अकुर्त्रि ते कार्य्यं चक्रे । वयं करिष्यामहि । यूयं कुरुष्व ।

'गम्' धातु—जाना (To go)

लट्—वर्त्तमानकाल ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	गच्छति	गच्छसि	गच्छामि
द्विवचन	गच्छतः	गच्छथः	गच्छावः
बहुवचन	गच्छन्ति	गच्छथ	गच्छामः

लोट्—अनुज्ञा ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	गच्छतु	गच्छ	गच्छानि
द्विवचन	गच्छताम्	गच्छतम्	गच्छाव
बहुवचन	गच्छन्तु	गच्छत	गच्छाम

विधिलिङ्—विधि ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	गच्छेत्	गच्छेः	गच्छेयम्
द्विवचन	गच्छेताम्	गच्छेतम्	गच्छेव
बहुवचन	गच्छेयुः	गच्छेत	गच्छेम

लङ्—भूतकाल ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	अगच्छत्	अगच्छः	अगच्छम्
द्विवचन	अगच्छताम्	अगच्छतम्	अगच्छाव
बहुवचन	अगच्छन्	अगच्छत	अगच्छाम

लिट्—अतीतभूत ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	जगाम	जगमिथ, जगन्थ	जगाम, जगम
द्विवचन	जग्मतुः	जग्मथुः	जग्मिव
बहुवचन	जग्मुः	जग्म	जग्मिम

लृट्—भविष्यत्काल ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	गमिष्यति	गमिष्यसि	गमिष्यामि
द्विवचन	गमिष्यतः	गमिष्यथः	गमिष्यावः
बहुवचन	गमिष्यन्ति	गमिष्यथ	गमिष्यामः

अभ्यास (Exercise 33)

(१) संस्कृत में अनुवाद करो (Translate into Sanskrit)—जैनों के मन्दिर में न जायं–(One should not go to the temple of a Jaina). तुम वहाँ कब गये थे–(When did you go there). तुम लोग जाओ—(You all go). मैं नहीं जाऊँगा–(I shall not go). यदि वह जाय तो तुम भी जाओ—(Go, if he goes). वे नहीं गये–(They did not go). वह घर जाता है—(He goes home).

(२) शुद्ध करो (Correct):—वयं गच्छावः । आवाम् अगच्छावः । तौ जग्मुः । बालकाः गच्छेत् । यूयम् गमिष्यथः ।

'श्रु' धातु—सुनना (To hear)

लट्—वर्त्तमानकाल ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	शृणोति	शृणोषि	शृणोमि
द्विवचन	शृणुतः	शृणुथः	शृणुवः शृण्वः
बहुवचन	शृण्वन्ति	शृणुथ	शृणुमः, शृण्मः

लोट्—अनुज्ञा ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	शृणोतु	शृणु	शृणवानि
द्विवचन	शृणुताम्	शृणुतम्	शृणवाव
बहुवचन	शृण्वन्तु	शृणुत	शृणवाम

विधिलिङ्—विधि ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	शृणुयात्	शृणुयाः	शृणुयाम्
द्विवचन	शृणुयाताम्	शृणुयातम्	शृणुयाव
बहुवचन	शृणुयुः	शृणुयात	शृणुयाम

लङ्—भूतकाल ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	अशृणोत्	अशृणोः	अशृणवम्
द्विवचन	अशृणुताम्	अशृणुतम्	अशृणुव, अशृण्व
बहुवचन	अशृण्वन्	अशृणुत	अशृणुम, अशृण्म

लिट्—अतीतभूत ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	शुश्राव	शुश्रोथ	शुश्राव, शुश्रव
द्विवचन	शुश्रुवतुः	शुश्रुवथुः	शुश्रुव
बहुवचन	शुश्रुवुः	शुश्रुव	शुश्रुम

लृट्—भविष्यत् काल।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	श्रोष्यति	श्रोष्यसि	श्रोष्यामि
द्विवचन	श्रोष्यतः	श्रोष्यथः	श्रोष्यावः
बहुवचन	श्रोष्यन्ति	श्रोष्यथ	श्रोष्यामः

अभ्यास (Exercise 34)

(१) संस्कृत में अनुवाद करो (Translate into Sanskrit):—हम लोग वेदों की ध्वनि सुनते हैं—(We hear the sound of the Vedas). गुरु की बात को सुनो—(Listen to the word of the preceptor). कानों से मङ्गल सुनें—(May we hear welfare by ears). मैं कब यह समाचार सुनूँगा—(When shall I hear this news). उसने यह सुना था—(He heard this). तुम ने यह कथा कहाँ सुनी ?—(Where did you hear this tale ?). गुरु से जो सुनो उसे करो. (Do what you hear from the teacher)।

(२) शुद्ध करो (Correct):—अहम् इदम् अश्रृणोत्। त्वं तं समाचारं कुत्र शुश्राव। स एतत् श्रृणोष्यति। ते कथां अश्रृण्वन्त। भवान् गुरूपदेशं श्रृणु।

'दृश्' धातु–देखना (To see)

लट्–वर्तमानकाल।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	पश्यति	पश्यसि	पश्यामि
द्विवचन	पश्यतः	पश्यथः	पश्यावः
बहुवचन	पश्यन्ति	पश्यथ	पश्यामः

लोट्—अनुज्ञा ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	पश्यतु	पश्य	पश्यानि
द्विवचन	पश्यताम्	पश्यतम्	पश्याव
बहुवचन	पश्यन्तु	पश्यत	पश्याम

विधिलिङ्—विधि ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	पश्येत्	पश्येः	पश्येयम्
द्विवचन	पश्येताम्	पश्येतम्	पश्येव
बहुवचन	पश्येयुः	पश्येत	पश्येम

लङ्—भूतकाल ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	अपश्यत्	अपश्यः	अपश्यम्
द्विवचन	अपश्यताम्	अपश्यतम्	अपश्याव
बहुवचन	अपश्यन्	अपश्यत	अपश्याम

लिट्—अतीतभूत ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	ददर्श	ददर्शिथ, दद्रष्ठ	ददर्श
द्विवचन	ददृशतुः	ददृशथुः	ददृशिव
बहुवचन	ददृशुः	ददृश	ददृशिम

लृट्—भविष्यत्काल।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	द्रक्ष्यति	द्रक्ष्यसि	द्रक्ष्यामि
द्विवचन	द्रक्ष्यतः	द्रक्ष्यथः	द्रक्ष्यावः
बहुवचन	द्रक्ष्यन्ति	द्रक्ष्यथ	द्रक्ष्यामः

अभ्यास (Exercise 35)

(१) संस्कृत में अनुवाद करो (Translate into Sanskrit)—लड़के पक्षियों को देख रहे है—(Boys are seeing the bird). वह चन्द्रमा को देखता है—(He sees the moon). इस पुस्तक को देखो—(See this book). मैंने कल बहुत पेड़ देखे—(I saw many trees yesterday). क्या तुम वह पत्र देखोगे ?—(Will you see that letter ?)—ऐसी घटना मैं कभी न देखूँ (May I not see such an incident at any time ?

(२) शुद्ध करो (Correct):—अहं नाटकं रात्रौ अपश्यत्। मूर्खाः इदं न दृश्यन्ति। अहम् ताम् ददृश। यूयं तत् द्रक्ष्यथः। वयं भद्रं पश्येव। त्वं पत्रं पश्यतु।

'दा' धातु—देना (To give)

लट्—वर्तमानकाल (परस्मैपद)।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	ददाति	ददासि	ददामि
द्विवचन	दत्तः	दत्थः	दद्वः
बहुवचन	ददति	दत्थ	दद्मः

लोट्—अनुज्ञा।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	ददातु	देहि	ददानि
द्विवचन	दत्ताम्	दत्तम्	ददाव
बहुवचन	ददतु	दत्त	ददाम

विधिलिङ्—विधि।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	दद्यात्	दद्याः	दद्याम्
द्विवचन	दद्याताम्	दद्यातम्	दद्याव
बहुवचन	दद्युः	दद्यात	दद्याम

लङ्—भूतकाल।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	अददात्	अददाः	अददाम्
द्विवचन	अदत्ताम्	अदत्तम्	अदद्व
बहुवचन	अददुः	अदत्त	अदद्म

लिट्—अतीतभूत।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	ददौ	ददिथ, ददाथ	ददौ
द्विवचन	ददतुः	ददथुः	ददिव
बहुवचन	ददुः	दद	ददिम

लृट—भविष्यत् काल।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	दास्यति	दास्यसि	दास्यामि
द्विवचन	दास्यतः	दास्यथः	दास्यावः
बहुवचन	दास्यन्ति	दास्यथ	दास्यामः

आत्मनेपद

लट्—वर्तमानकाल।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	दत्ते	दत्से	ददे
द्विवचन	ददाते	ददाथे	दद्वहे
बहुवचन	ददते	दद्ध्वे	दद्महे

लोट्—अनुज्ञा

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	दत्ताम्	दत्स्व	ददै
द्विवचन	ददाताम्	ददाथाम्	ददावहै
बहुवचन	ददताम्	दद्ध्वम्	ददामहै

विधिलिङ्—विधि।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	ददीत	ददीथाः	ददीय
द्विवचन	ददीयाताम्	ददीयाथाम्	ददीवहि
बहुवचन	ददीरन्	ददीध्वम्	ददीमहि

लङ्—भूतकाल ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	अदत्त	अदत्थाः	अददि
द्विवचन	अददाताम्	अददाथाम्	अदद्वहि
बहुवचन	अददत	अदद्ध्वम्	अदद्महि

लिट्—अतीतभूत ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	ददे	ददिषे	ददे
द्विवचन	ददाते	ददाथे	ददिवहे
बहुवचन	ददिरे	दिध्वे	ददिमहे

लृट्—भविष्यत् काल ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	दास्यते	दास्यसे	दास्ये
द्विवचन	दास्येते	दास्येथे	दास्यावहे
बहुवचन	दास्यन्ते	दास्यध्वे	दास्यामहे

अभ्यास (Exercise 36)

(१) संस्कृत में अनुवाद करो (Translate into Sanskrit):—
उसने ब्राह्मण को एक गाय दी—(He gave a cow to a Brahman). दरिद्रों को धन दो—(Give riches to the poor). तुम मुझे कब पुस्तक दोगे ?—(When will you give me the book ?). तुझे मैं क्या दूँ ?—(What may I give you ?). वे जाड़े में दरिद्रों

को वस्त्र देते हैं–(He gives clothes to the poor in winter). मैंने उसे कुछ भी नहीं दिया–(I did not give any thing to him).

(२) शुद्ध करो (Correct):—ते दरिद्रेभ्यो न किमपि ददन्ति। यूयं किं दत्था। ब्राह्मणाय दक्षिणाम् अहं दत्ते। त्वं तत् दास्यति। ते क्षात्रेभ्यः पुस्तकानि ददौ। यथाशक्ति नरः अन्नं ददेत्।

'ग्रह्' धातु—ग्रहण करना, लेना (To take)

लट्—वर्त्तमान काल (परस्मैपद)

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	गृह्णाति	गृह्णासि	गृह्णामि
द्विवचन	गृह्णीतः	गृह्णीथः	गृह्णीवः
बहुवचन	गृह्णन्ति	गृह्णीथ	गृह्णीमः

लोट्—अनुज्ञा।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	गृह्णातु	गृहाण	गृह्णानि
द्विवचन	गृह्णीताम्	गृह्णीतम्	गृह्णाव
बहुवचन	गृह्णन्तु	गृह्णीत	गृह्णाम

विधि लिङ्—विधि।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	गृह्णीयात्	गृह्णीयाः	गृह्णीयाम्
द्विवचन	गृह्णीयाताम्	गृह्णीयातम्	गृह्णीयाव
बहुवचन	गृह्णीयुः	गृह्णीयात	गृह्णीयाम

लङ्—भूतकाल।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	अगृह्णात्	अगृह्णाः	अगृह्णाम्
द्विवचन	अगृह्णीताम्	अगृह्णीतम्	अगृह्णीव
बहुवचन	अगृह्णन्	अगृह्णीत	अगृह्णीम

लिट्—अतीतभूत।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	जग्राह	जग्रहिथ	जग्राह, जग्रह
द्विवचन	जगृहतुः	जगृहथुः	जगृहिव
बहुवचन	जगृहुः	जगृह	जगृहिम

लृट्—भविष्यत् काल।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	ग्रहीष्यति	ग्रहीष्यसि	ग्रहीष्यामि
द्विवचन	ग्रहीष्यतः	ग्रहीष्यथः	ग्रहीष्यावः
बहुवचन	ग्रहीष्यन्ति	ग्रहीष्यथ	ग्रहीष्यामः

आत्मनेपद।

लट्—वर्त्तमानकाल।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	गृह्णीते	गृह्णीषे	गृह्णे
द्विवचन	गृह्णाते	गृह्णाथे	गृह्णीवहे
बहुवचन	गृह्णते	गृह्णीध्वे	गृह्णीमहे

लोट्-अनुज्ञा ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	गृह्णीताम्	गृह्णीष्व	गृह्णै
द्विवचन	गृह्णाताम्	गृह्णाथाम्	गृह्णावहै
बहुवचन	गृह्णताम्	गृह्णीध्वम्	गृह्णामहै

विधिलिङ्—विधि ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	गृह्णीत	गृह्णीथाः	गृह्णीय
द्विवचन	गृह्णीयाताम्	गृह्णीयाथाम्	गृह्णीवहि
बहुवचन	गृह्णीरन्	गृह्णीध्वम्	गृह्णीमहि

लङ्—भूतकाल ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	अगृह्णीत	अगृह्णीथाः	अगृह्णि
द्विवचन	अगृह्णाताम्	अगृह्णाथाम्	अगृह्णीवहि
बहुवचन	अगृह्णत	अगृह्णीध्वम्	अगृह्णीमहि

लिट्—अतीतभूत ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	जगृहे	जगृहिषे	जगृहे
द्विवचन	जगृहाते	जगृहाथे	जगृहिवहे
बहुवचन	जगृहिरे	जगृहिध्वे	जगृहिमहे

लृट्—भविष्यत् काल

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	ग्रहीष्यते	ग्रहीष्यसे	ग्रहीष्ये
द्विवचन	ग्रहीष्येते	ग्रहीष्येथे	ग्रहीष्यावहे
बहुवचन	ग्रहीष्यन्ते	ग्रहीष्यध्वे	ग्रहीष्यामहे

अभ्यास (Exercise 37)

(१) संस्कृत में अनुवाद करो (Translate into Sanskrit):—दूसरे का धन नहीं लो–(Do not take the wealth of another). तुम अपनी पुस्तक कब लोगे ?—(When will you take your book ?). उसने फल नहीं लिया–(He did not take the fruit). स्वामी की आज्ञा बिना यह मैं कैसे लूँ ?—(How may I take this without the permission of the owner ?). उन्होंने यह ग्रहण किया—(They took this)

(२) शुद्ध करो (Corrcet):—मा गृह्णीहि परद्रव्यम् । अहं तव चरणौ गृह्णाति । स तत् कदा गृह्णीष्यति । ते दानं जग्रहुः । ग्रहीष्व त्वम् एतत् पत्रम् ।

'प्रच्छ्' धातु–पूछना (To ask)

लट्–वर्तमानकाल ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	पृच्छति	पृच्छसि	पृच्छामि
द्विवचन	पृच्छतः	पृच्छथः	पृच्छावः
बहुवचन	पृच्छन्ति	पृच्छथ	पृच्छामः

लोट्—अनुज्ञा ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	पृच्छतु	पृच्छ	पृच्छानि
द्विवचन	पृच्छताम्	पृच्छतम्	पृच्छाव
बहुवचन	पृच्छन्तु	पृच्छत	पृच्छाम

विधिलिङ्—विधि ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	पृच्छेत्	पृच्छेः	पृच्छेयम्
द्विवचन	पृच्छेताम्	पृच्छेतम्	पृच्छेव
बहुवचन	पृच्छेयुः	पृच्छेत	पृच्छेम

लङ्—भूतकाल ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	अपृच्छत्	अपृच्छः	अपृच्छम्
द्विवचन	अपृच्छताम्	अपृच्छतम्	अपृच्छाव
बहुवचन	अपृच्छन्	अपृच्छत	अपृच्छाम

लिट्—अतीतभूत ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	पप्रच्छ	पप्रच्छिथ, पप्रष्ठ	पप्रच्छ
द्विवचन	पप्रच्छतुः	पप्रच्छथुः	पप्रच्छिव
बहुवचन	पप्रच्छुः	पप्रच्छ	पप्रच्छिम

लृट्—भविष्यत् काल ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	प्रक्ष्यति	प्रक्ष्यसि	प्रक्ष्यामि
द्विवचन	प्रक्ष्यतः	प्रक्ष्यथः	प्रक्ष्यावः
बहुवचन	प्रक्ष्यन्ति	प्रक्ष्यथ	प्रक्ष्यामः

अभ्यास (Exercise 38)

(१) संस्कृत में अनुवाद करो (Translate into sanskrit)— मैंने चार प्रश्न पूछे—(I asked four questions). तुम बार बार क्या पूछते हो ?—(What do you ask again and again ?). मैं गुरुजी से पूछूँगा—(I shall ask the teacher). उसने मुझे कल क्या पूछा था ?—(What did he ask me yesterday). वह मुझे पूछे—(He may ask me–विधिलिङ्). वे यह पूछते हैं—(They ask this).

(२) शुद्ध करो (Correct):—स इदं पृच्छिष्यति । त्वं किं पृच्छति । ते अपृच्छत् स पपृच्छुः । अहं त्वां पृच्छेव । त्वं मा प्रच्छ । शिष्याः गुरुं अपृच्छन्त ।

'ब्रू' धातु—बोलना (To speak, to say)

लट्—वर्तमानकाल (परस्मैपद)

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	ब्रवीति	ब्रवीषि	ब्रवीमि
द्विवचन	ब्रूतः	ब्रूथः *	ब्रूवः
बहुवचन	ब्रुवन्ति	ब्रूथ	ब्रूमः

* ति, तस्, अन्ति, सि, थस्—इन पाँच विभक्तियों में 'ब्रू' धातु के रूप विकल्प से क्रमशः 'आह, आहतुः, आहुः, आत्थ, आहथुः' ये पाँच होते हैं ।

लोट्—अनुज्ञा ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	ब्रवीतु	ब्रूहि	ब्रवाणि
द्विवचन	ब्रूताम्	ब्रूतम्	ब्रवाव
बहुवचन	ब्रुवन्तु	ब्रूत	ब्रवाम

विधिलिङ्—विधि ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	ब्रूयात्	ब्रूयाः	ब्रूयाम्
द्विवचन	ब्रूयाताम्	ब्रूयातम्	ब्रूयाव
बहुवचन	ब्रूयुः	ब्रूयात	ब्रूयाम

लङ्—भूतकाल ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	अब्रवीत्	अब्रवीः	अब्रवम्
द्विवचन	अब्रुताम्	अब्रूतम्	अब्रम
बहुवचन	अब्रुवन्	अब्रूत	अब्रव

लिट्—अतीतभूत ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	उवाच	उवचिथ,उवक्थ	उवाच, उवच
द्विवचन	ऊचतुः	ऊचथुः	ऊचिव
बहुवचन	ऊचुः	ऊच	ऊचिम

लृट्—भविष्यत्काल।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	वद्यति	वद्यसि	वक्ष्यामि
द्विवचन	वद्यतः	वद्यथः	वक्ष्यावः
बहुवचन	वक्ष्यन्ति	वक्ष्यथ	वक्ष्यामः

आत्मनेपद।

लट्—वर्त्तमानकाल।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	ब्रुते	ब्रूषे	ब्रुवे
द्विवचन	ब्रुवाते	ब्रुवाथे	ब्रूवहे
बहुबचन	ब्रुवते	ब्रूध्वे	ब्रूमहे

लोट्—अनुज्ञा।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	ब्रूताम्	ब्रुष्व	ब्रवै
द्विवचन	ब्रूवाताम्	ब्रुवाथाम्	ब्रवावहै
बहुवचन	ब्रुवताम्	ब्रूध्वम्	ब्रवामहै

विधिलिङ्—विधि।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	ब्रुवीत	ब्रुवीथाः	ब्रुवीय
द्विवचन	ब्रुवीयाताम्	ब्रुवीयाथाम्	ब्रुवीवहि
बहुवचन	ब्रुवीरन्	ब्रुवीध्वम्	ब्रुवीमहि

लङ्—भूतकाल ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	अब्रूत	अब्रूथाः	अब्रुवि
द्विवचन	अब्रुवाताम्	अब्रुवाथाम्	अब्रुवहि
बहुवचन	अब्रुवत	अब्रूध्वम्	अब्रूमहि

लिट्—अतीतभूत ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	ऊचे	ऊचिषे	ऊचे
द्विवचन	ऊचाते	ऊचाथे	ऊचिवहे
बहुवचन	ऊचिरे	ऊचिध्वे	ऊचिमहे

लृट्—भविष्यत् काल ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	वक्ष्यते	वक्ष्यसे	वक्ष्ये
द्विवचन	वक्ष्यते	वक्ष्येथे	वक्ष्यावहे
बहुवचन	वक्ष्यन्ते	वक्ष्यध्वे	वक्ष्यामहे

अभ्यास (Exercise 39)

(१) संस्कृत में अनुवाद करो (Translate into Sanskrit):—मैं यह कथा कहूँगा—(I shall say that story). तुमने मुझे क्या कहा था ?—(What did you say to me ?). लड़के बहुधा झूठ बोलते हैं—(Boys often speak lies). वह यह कहे—(He may tell this). एक श्लोक कहो—(Tell a verse). वे यह बोले—(They spoke this) ।

(२) शुद्ध करो (Correct):—मिथ्या मा ब्रवीहि। यूयं तत् कदा उवाच। स इदं ब्रवीष्यति। ते अब्रवीत्। त्वं मां ब्रूयात्। सत्यम् उच्यात्, प्रियं उच्यात्।

'भक्ष्' धातु—खाना (To eat)

लट्—वर्त्तमानकाल।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	भक्षयति	भक्षयसि	भक्षयामि
द्विवचन	भक्षयतः	भक्षयथः	भक्षयावः
बहुवचन	भक्षयन्ति	भक्षयथ	भक्षयामः

लोट्—अनुज्ञा।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	भक्षयतु	भक्षय	भक्षयाणि
द्विवचन	भक्षयताम्	भक्षयतम्	भक्षयाव
बहुवचन	भक्षयन्तु	भक्षयत	भक्षयाम

विधिलिङ्—विधि।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	भक्षयेत्	भक्षयेः	भक्षयेयम्
द्विवचन	भक्षयेताम्	भक्षयेतम्	भक्षयेव
बहुवचन	भक्षयेयुः	भक्षयेत	भक्षयेम

लङ्--भूतकाल ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	अभक्षयत्	अभक्षयः	अभक्षयम्
द्विवचन	अभक्षयताम्	अभक्षयतम्	अभक्षयाव
बहुवचन	अभक्षयन्	अभक्षयत	अभक्षयाम

लिट्--अतीतभूत ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	भक्षयामास	भक्षयामासिथ	भक्षयामास
द्विवचन	भक्षयामासतुः	भक्षयामासथुः	भक्षयामासिव
बहुवचन	भक्षयामासुः	भक्षयामास	भक्षयामासिम

लृट्--भविष्यत्काल ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	भक्षयिष्यति	भक्षयिष्यसि	भक्षयिष्यामि
द्विवचन	भक्षयिष्यतः	भक्षयिष्यथः	भक्षयिष्यावः
बहुवचन	भक्षयिष्यन्ति	भक्षयिष्यथ	भक्षयिष्यामः

अभ्यास (Exercise 40)

(१) संस्कृत में अनुवाद करो (Translate into Sanskrit):- मैंने आम खाया था—(I ate mangoes). तुम आज क्या खाओगे ?—(What will you eat to-day). दिन में हम भात (ओदन) खाते हैं—(I eat rice in day). मैं क्या खाऊँ ?–(What should I eat). तुम लोग यहाँ आज खाओ–(You all eat here to-day).

अधिक नहीं खाना चाहिये—(One should not eat much)—विधि लिङ् ।

(२) शुद्ध करो (Correct):—यूयं किं भक्षयथः । ते मिष्टान्नं भक्षयामासतुः । वयं सर्वं भक्षयिष्यावः। अहं किं भक्षयेः । तौ ओदनं भक्षयति । अहं दधि अभक्षयाम ।

"पा" धातु—पीना (To drink)

लट्—वर्त्तमानकाल ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	पिबति	पिबसि	पिबामि
द्विवचन	पिबतः	पिबथः	पिबावः
बहुवचन	पिबन्ति	पिबथ	पिबामः

लोट्—अनुज्ञा ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	पिबतु	पिब	पिबानि
द्विवचन	पिबताम्	पिबतम्	पिबाव
बहुवचन	पिबन्तु	पिबत	पिबाम

विधिलिङ्—विधि ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	पिबेत्	पिबेः	पिबेयम्
द्विवचन	पिबेताम्	पिबेतम्	पिबेव
बहुवचन	पिबेयुः	पिबेत	पिबेम

लङ्—भूतकाल।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	अपिबत्	अपिबः	अपिबम्
द्विवचन	अपिबताम्	अपिबतम्	अपिबाव
बहुवचन	अपिबन्	अपिबत	अपिबाम

लिट—अतीतभूत।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	पपौ	पपिथ, पपाथ	पपौ
द्विवचन	पपतुः	पपथुः	पपिव
बहुवचन	पपुः	पप	पपिम

लृट्—भविष्यत्काल।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	पास्यति	पास्यसि	पास्यामि
द्विवचन	पास्यतः	पास्यथः	पास्यावः
बहुवचन	पास्यन्ति	पास्यथ	पास्यामः

अभ्यास (Exercise 41)

(१) संस्कृत में अनुवाद करो (Translate into Sanskrit):—शुद्ध जल को पीओ—(Drink pure water). मैं दूध पीता हूँ—(I drink milk). उसने कल्ह मद्य पीआ था—(He drank wine yesterday). तुम लोग आज क्या पीओगे?—(What will you all

drink to-day). लड़के मिठाई के बिना दूध नहीं पीते हैं—(Boys do not drink milk without sweet meat). क्या मैं गङ्गाजल पीऊँ ?—(May I drink Ganges water).

(२) शुद्ध करो (Correct):—यूयं दुग्धं पिब । अहम् अद्य किं पिबिष्यामि । ते शीतलं जलम् अपिबन्त । नराः कदापि मद्यं न पिबेत् । त्वं गङ्गाजलं पिबतु । ते दुग्धं पपौ ।

'इष्' धातु—इच्छा करना, चाहना (To wish)

लट्—वर्त्तमानकाल ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	इच्छति	इच्छसि	इच्छामि
द्विवचन	इच्छतः	इच्छथः	इच्छावः
बहुवचन	इच्छन्ति	इच्छथ	इच्छामः

लोट्—अनुज्ञा ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	इच्छतु	इच्छ	इच्छानि
द्विवचन	इच्छताम्	इच्छतम्	इच्छाव
बहुवचन	इच्छन्तु	इच्छत	इच्छाम

विधिलिङ्—विधि

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	इच्छेत्	इच्छेः	इच्छेयम्
द्विवचन	इच्छेताम्	इच्छेतम्	इच्छेव
बहुवचन	इच्छेयुः	इच्छेत	इच्छेम

लङ्—भूतकाल

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	ऐच्छत्	ऐच्छः	ऐच्छम्
द्विवचन	ऐच्छताम्	ऐच्छतम्	ऐच्छाव
बहुवचन	ऐच्छन्	ऐच्छत	ऐच्छाम

लिट—अतीतभूत।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	इयेष	इयेषिथ	इयेष
द्विवचन	ईषतुः	ईषथुः	ईषिव
बहुवचन	ईषुः	ईष	ईषिम

लृट्—भविष्यत्काल।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	एषिष्यति	एषिष्यसि	एषिष्यामि
द्विवचन	एषिष्यतः	एषिष्यथः	एषिष्यावः
बहुवचन	एषिष्यन्ति	एषिष्यथ	एषिष्यामः

अभ्यास (Exercise 42)

(१) संस्कृत में अनुवाद करो (Translate into Sanskrit):—मैं ज्ञान चाहता हूँ—(I wish knowledge). सभी पुत्र चाहते हैं—(All wish a son). मैंने वहाँ जाना (गन्तुं) चाहा था—(I wished to go there). तुम इससे अधिक क्या चाहोगे?—(What will you wish more than this).

(२) शुद्ध करो (Correct):—ते भोजनम् ऐच्छत्। त्वं किं इयेष। नराः सुखम् इच्छति। वयं तत् ऐच्छम्।

'ज्ञा' धातु—जानना (To know)

लट्—वर्त्तमानकाल ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	जानाति	जानासि	जानामि
द्विवचन	जानीतः	जानीथः	जानीवः
बहुवचन	जानन्ति	जानीथ	जानीमः

लोट्—अनुज्ञा ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	जानातु	जानीहि	जानानि
द्विवचन	जानीताम्	जानीतम्	जानाव
बहुवचन	जानन्तु	जानीत	जानाम

विधिलिङ्—विधि ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	जानीयात्	जानीयाः	जानीयाम्
द्विवचन	जानीयाताम्	जानीयातम्	जानीयाव
बहुवचन	जानीयुः	जानीयात	जानीयाम

लङ्—भूतकाल ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	अजानात्	अजानाः	अजानाम्
द्विवचन	अजानीताम्	अजानीतम्	अजानीव
बहुवचन	अजानन्	अजानीत	अजानीम

लिट्—अतीतभूत ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	जज्ञौ	जज्ञिथ, जज्ञाथ	जज्ञौ
द्विवचन	जज्ञतुः	जज्ञथुः	जज्ञिव
बहुवचन	जज्ञुः	जज्ञ	जज्ञिम

लृट्—भविष्यत्काल ।

एकवचन	ज्ञास्यति	ज्ञास्यसि	ज्ञास्यामि
द्विवचन	ज्ञास्यतः	ज्ञास्यथः	ज्ञास्यावः
बहुवचन	ज्ञास्यन्ति	ज्ञास्यथ	ज्ञास्यामः

अभ्यास (Exercise 43)

(१) संस्कृत में अनुवाद करो (Translate into Sanskrit)– मैं संस्कृत नहीं जानता हूँ—(I do not know Sanskrit). क्या तुम मुझे जानोगे ?—(Will you know me). परिश्रम से इसे लोग जानते हैं—(Men know this with labour). उन्होंने मुझे नहीं जाना—(They did not know me). हम उसे साधु जानते थे—(I knew him honestly). इसे तुम अवश्य जानो—(Know this by all means).

(२) शुद्ध करो (Correct).—अहं तत् जानिष्यामि । ते इदम् अजानन्त । वयं आङ्गलभाषां न जानामः । ते मां जज्ञौ । यूयं तं सुशीलं जानातु ।

प्रपूर्व्वक 'आप्' धातु—पाना, प्राप्त करना (To get)

लट्—वर्त्तमानकाल ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	प्राप्नोति	प्राप्नोषि	प्राप्नोमि
द्विवचन	प्राप्नुतः	प्राप्नुथः	प्राप्नुवः
बहुवचन	प्राप्नुवन्ति	प्राप्नुथ	प्राप्नुमः

लोट्—अनुज्ञा ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	प्राप्नोतु	प्राप्नुहि	प्राप्नवानि
द्विवचन	प्राप्नुताम्	प्राप्नुतम्	प्राप्नवाव
बहुवचन	प्राप्नुवन्तु	प्राप्नुत	प्राप्नवाम

विधिलिङ्—विधि ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	प्राप्नुयात्	प्राप्नुयाः	प्राप्नुयाम्
द्विवचन	प्राप्नुयाताम्	प्राप्नुयातम्	प्रानुप्याव
बहुवचन	प्राप्नुयुः	प्राप्नुयात	प्राप्नुयाम

लङ्—भूतकाल ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	प्राप्नोत्	प्राप्नोः	प्राप्नवम्
द्विवचन	प्राप्नुताम्	प्राप्नुतम्	प्राप्नुव
बहुवचन	प्राप्नुवन्	प्राप्नुत	प्राप्नुम

लिट्—अतीतभूत ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	प्राप	प्रापिथ	प्राप
द्विवचन	प्रापतुः	प्रापथुः	प्रापिव
बहुवचन	प्रापुः	प्राप	प्रापिम

लृट्—भविष्यत्काल ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	प्राप्स्यति	प्राप्स्यसि	प्राप्स्यामि
द्विवचन	प्राप्स्यतः	प्राप्स्यथः	प्राप्स्यावः
बहुवचन	प्राप्स्यन्ति	प्राप्स्यथ	प्राप्स्यामः

अभ्यास (Exercise 44)

(१) संस्कृत में अनुवाद करो (Translate into Sanskrit):—क्या तुमने पारितोषिक पाया था ?—(Did you get a scholarship). मैंने पुस्तकें पाईं—(I got books). परिश्रमी लड़के सफलता पाते हैं—(Industrious boys get success). इससे तुम क्या पाओगे ?—(What will you get by this). सत्यवादी स्वर्ग पाते हैं—(The truthful get heaven). मैं इसे कहाँ पाऊँ ?—(Where may I get this).

(२) शुद्ध करो (Correct):—त्वं सुखं प्राप्नुयात् । ते धनं प्राप । अहं पारितोषिकं प्राप्नोम् । किं त्वं प्राप्तविष्यसि । यूयं पुत्रान् प्राप्नुतम् ।

'त्यज्' धातु—त्याग करना, छोड़ना (To leave)

लट्—वर्तमानकाल ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	त्यजति	त्यजसि	त्यजामि
द्विवचन	त्यजतः	त्यजथः	त्यजावः
बहुवचन	त्यजन्ति	त्यजथ	त्यजामः

लोट्—अनुज्ञा ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	त्यजतु	त्यज	त्यजानि
द्विवचन	त्यजताम्	त्यजतम्	त्यजाव
बहुवचन	त्यजन्तु	त्यजत	त्यजाम

विधिलिङ्—विधि ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	त्यजेत्	त्यजेः	त्यजेयम्
द्विवचन	त्यजेताम्	त्यजेतम्	त्यजेव
बहुवचन	त्यजेयुः	त्यजेत	त्यजेम

लङ्—भूतकाल ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	अत्यजत्	अत्यजः	अत्यजम्
द्विवचन	अत्यजताम्	अत्यजतम्	अत्यजाव
बहुवचन	अत्यजन्	अत्यजत	अत्यजाम

लिट्--अतीतभूत ।

एकवचन	तत्याज	तत्यजिथ,तत्यक्थ	तत्याज, तत्यज
द्विवचन	तत्यजतुः	तत्यजथुः	तत्यजिव
बहुवचन	तत्यजुः	तत्यज	तत्यजिम

लृट्--भविष्यतकाल ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	त्यक्ष्यति	त्यक्ष्यसि	त्यक्ष्यामि
द्विवचन	त्यक्ष्यतः	त्यक्ष्यथः	त्यक्ष्यावः
बहुवचन	त्यक्ष्यन्ति	त्यक्ष्यथ	त्यक्ष्यामः

अभ्यास (Exercise 45)

(१) संस्कृत में अनुवाद करो (Translate into Sanskrit):—मैंने उसका संग छोड़ दिया—(I left his company). दुर्जनों की संगति छोड़ दो—(Leave the company of the wicked). तुम स्कूल कब छोड़ोगे?—(When will you leave the school). क्या मैं पढ़ना छोड़ दूँ ?—(May I leave reading). सज्जन व्यसनों को छोड़ देते हैं—(The good leave bad habits).

(२) शुद्ध करो (Correct):—त्वं दुर्जनसंसर्गं त्यजेत् । अहं विद्यालयं त्यजिष्यामि । ते तं तत्याज । अहं पाठम् अत्यजत् । रामः राज्यं तत्यज । विभीषणः रावणम् अत्यजन् । त्वं दुर्व्यसनं त्यजतु ।

अतिरिक्त ।

मुख्य मुख्य धातु
और
संक्षेप में उनके रूप

अद्—खाना (To eat); लट्—अत्ति, लोट्—अत्तु, विधिलिङ्—अद्यात्, लङ्-आदत्, लिट्—आद, जघास, लृट्—अत्स्यति इत्यादि ।

अर्च्—पूजा करना (To worship); लट्-अर्चति, लोट्—अर्चतु, विधिलिङ्—अर्चेत्, लङ्—आर्चत्, लिट्—आनर्च, लृट्—अर्चिष्यति इत्यादि ।

अर्ज्—पैदा करना (To earn); लट्-अर्जति, लोट्-अर्जतु, विधिलिङ्—अर्जेत्, लङ्—आर्जत्, लिट्—आनर्ज, लृट्-अर्जिष्यति इत्यादि ।

अर्ह्—पूजा करना, योग्य होना (To worship, to deserve); लट्—अर्हति, लोट्—अर्हतु, विधिलिङ्—अर्हेत्, लङ्—आर्हत्, लिट्—आनर्ह, लृट्—अर्हिष्यति इत्यादि ।

अस्—होना (To be); लट्-अस्ति (है), लोट्—अस्तु, विधिलिङ्—स्यात्, लङ्—आसीत् (था), लिट्—बभूव, लृट्—भविष्यति इत्यादि ।

इ—जाना (To go); लट्—अयति, लोट्-अयतु, विधिलिङ्—अयेत्, लङ्—आयत्, लिट्—इयाय, लृट्—एष्यति इत्यादि। 'उत्' के योग होने से उदय होना (To rise), उदयति।

ईक्ष्—देखना (To see), लट्—ईक्षते, लोट्—ईक्षताम्, विधिलिङ्—ईक्षेत, लङ्—ऐक्षत, लिट्—ईक्षाञ्चक्रे, लृट्—ईक्षिष्यते इत्यादि। 'अप' के साथ–अपेक्षा करना (To expect) अपेक्षते; 'अव' के साथ—(To inspect) अवेक्षते; 'निर्' के साथ—देखना (To see) निरीक्षते; 'प्रति' के साथ–इन्तजारी करना, आशा करना (To expect) प्रतीक्षते; 'उप' के साथ–अवहेलना करना (To neglect) उपेक्षते। 'परि' के साथ—परीक्षा करना (To examine) परीक्षते।

कथ्—कहना (To tell); लट्–कथयति, लोट्–कथयतु, विधिलिङ्–कथयेत्, लङ्–अकथयत्, लिट्–कथयामास, लृट्–कथयिष्यति इत्यादि।

काङ्क्ष्—काङ्क्षा करना, चाहना (To desire); लट्–काङ्क्षति, लोट्–काङ्क्षंतु, विधिलिङ्–काङ्क्षेत्, लङ्–अकाङ्क्षत्, लिट्–चकाङ्क्ष, लृट्–काङ्क्षिष्यति इत्यादि।

कूज्—अव्यक्त शब्द करना (To coo, to hum); कूजति, कूजतु, कूजेत्, अकूजत्, चुकूज, कूजिष्यति इत्यादि।

कृष्—जोतना (To plough); कर्षति, कर्षतु, कर्षेत्, अकर्षत्, चकर्ष, क्रक्ष्यति इत्यादि। 'आ' उपसर्ग के साथ—आकर्षण करना, खींचना (To attract) आकर्षति।

क्रम्—पादविक्षेप करना, डेग उठाना (To step); क्रमते (क्रामति, काम्यति), क्रमताम् (क्रामतु), क्रमेत (क्रामेत्), अक्रमत (अक्रमत्), चक्रमे (चक्राम), क्रमिष्यते इत्यादि।

'अति' के साथ—अतिक्रमण करना, पार कर जाना (To go over) अतिक्रामति । 'परा' के साथ-पराक्रम दिखाना (To display Valour) पराक्रामति ।

क्री—खरीदना (To buy); क्रीणाति, क्रीणातु, क्रीणीयात्, अक्रीणात्, चिक्राय, क्रेष्यति इत्यादि ।

क्रीड्—क्रीडा करना, खेलना (To play); क्रीडति, क्रीडतु, क्रीडेत्, अक्रीडत्, चिक्रीड, क्रीडिष्यति इत्यादि ।

क्रुध्—क्रोध करना (To be angry); क्रुध्यति, क्रुध्यतु, क्रुध्येत्, अक्रुध्यत्, चुक्रोध, क्रोत्स्यति इत्यादि ।

क्षम्—सहना (To forgive); क्षमते, क्षमताम्, क्षमेत, अक्षमत, चक्षमे, क्षमिष्यते इत्यादि ।

क्षिप्—फेंकना (To throw); क्षिपति, क्षिपतु, क्षिपेत्, अक्षिपत्, चिक्षेप, क्षेप्स्यति इत्यादि ।

खन्—खोदना (To dig); खनति, खनतु, खनेत्, अखनत्, चखान, खनिष्यति इत्यादि ।

खाद्—खाना (To eat); खादति, खादतु, खादेत्, अखादत्, चखाद, खादिष्यति ।

गर्ज्—गरजना (To roar); गर्जति, गर्जतु, गर्जेत्, अगर्जत्, जगर्ज, गर्जिष्यति ।

गाह्—स्नान करना (To bathe); गाहते, गाहताम्, गाहेत, अगाहत, जगाहे, गाहिष्यते ।

गै—गाना (To sing); गायति, गायतु, गायेत्, अगायत्, जगौ, गास्यति।

ग्रस्—ग्रास करना, निगलना (To swallow); ग्रसते, ग्रसताम्, ग्रसेत, अग्रसत, जग्रसे, ग्रसिष्यते।

घ्रा—सूँघना (To smell); जिघ्रति, जिघ्रतु, जिघ्रेत्, अजिघ्रत्, जघ्रौ, घ्रास्यति।

चर्—चलना (To walk); चरति, चरतु, चरेत्, अचरत्, चचार, चरिष्यति। 'आ' के साथ-आचरण करना (To practise) आचरति। 'परि' के साथ-सेवा करना (To serve) परिचरति।

चल्—हिलना, काँपना (To shake); चलति, चलतु, चलेत्, अचलत्, चचाल, चलिष्यति।

चि—चुनना (To gather); चिनोति, चिनोतु, चिनुयात्, अचिनोत्, चिकाय, चेष्यति।

चुम्ब्—चूमना (To kiss); चुम्बति, चुम्बतु, चुम्बेत्, अचुम्बत्, चुचुम्ब, चुम्बिष्यति।

चेष्ट्—चेष्टा करना (To make effort); चेष्टते, चेष्टताम्, चेष्टेत, अचेष्टत, चिचेष्टे, चेष्टिष्यते इत्यादि।

छिद्—काटना (To cut); छिनत्ति, छिनत्तु, छिन्द्यात्, अच्छिनत्, चिच्छेद, छेत्स्यति।

जप्—जप करना (To mutter); जपति, जपतु, जपेत्, अजपत्, जजाप, जपिष्यति।

जि—जीतना (To conquer); जयति, जयतु, जयेत्, अजयत् जिगाय, जेष्यति ।

जीव्—जीना (To live); जीवति, जीवतु, जीवेत्, अजीवत्, जीविष्यति ।

ज्वल्—जलना (To burn); ज्वलति, ज्वलतु, ज्वलेत्, अज्वलत्, जज्वाल, ज्वलिष्यति ।

डी—उड़ना (To fly); डयते, डयताम्, डयेत, अडयत, डिड्ये, डयिष्यते उत्+डी=उड्डयते ।

तप्—तपना (To shine); तपति, तपतु, तपेत्, अतपत्, तताप, तप्स्यति ।

तॄ—तैरना (To cross over, to swim); तरति, तरतु, तरेत्, अतरत्, ततार, तरिष्यति or तरीष्यति। 'अव' के साथ-उतरना (To descend) अवतरति। 'उत्' के साथ—पार करना (To pass over) उत्तरति । 'निर्' के साथ-छुटकारा पाना (To obtain salvation) निस्तरति । 'वि' के साथ-वितरण करना, देना (To give away) वितरति ।

त्रै—पालन करना, रक्षा करना (To protect ; त्रायते, त्रायताम्, त्रायेत, अत्रायत, तत्रे, त्रास्यते ।

त्वर्—जल्दी करना (To hasten); त्वरते, त्वरताम्, त्वरेत, अत्वरत, तत्वरे, त्वरिष्यते ।

दण्ड्—दण्ड करना, सजा करना (To punish);

दण्डयति, दण्डयतु, दण्डयेत्, अदण्डयत्, दण्डयाञ्चकार, दण्डयिष्यति।

दंश्—काटना (To bite); दशति, दशतु, दशेत्, अदशत्, ददंश, दंक्ष्यति।

दह्—जलाना (To burn); दहति, दहतु, दहेत्, अदहत्, ददाह, धक्ष्यति।

दुह्—दूहना (To milk); दोग्धि, दोग्धु, दुह्यात्, अधोक्, दुदोह, धोक्ष्यति।

धाव्—दौड़ना (To run); धावति, धावतु, धावेत्, अधावत्, दधाव, धाविष्यति।

धृ—धारण करना (To hold, to bear, to support); धारयति, धारयतु, धारयेत्, अधारयत्, धारयामास, धारयिष्यति।

ध्यै—ध्यान करना, चिन्ता करना (To meditate); ध्यायति, ध्यायतु, ध्यायेत्, अध्यायत्, दध्यौ, ध्यास्यति।

नन्द्—आनन्दित होना, प्रसन्न होना (To be pleased); नन्दति, नन्दतु, नन्देत्, अनन्दत्, ननन्द, नन्दिष्यति। 'अभि' के साथ—अभिनन्दन करना, भला चाहना (To welcome, to wish for) अभिनन्दति।

नम्—प्रणाम करना, नम्र होना (To Salute, to bend); नमति, नमतु, नमेत्, अनमत्, नंस्यति।

नश्—नष्ट होना (To be lost, to perish); नश्यति, नश्यतु, नश्येत्, अनश्यत्, ननाश, नंक्ष्यति।

निन्द्—निन्दा करना (To blame); निन्दति, निन्दतु, निन्देत्, अनिन्दत्, निनिन्द, निन्दिष्यति।

नी—ले जाना, ढोना (To lead, to carry); नयति (ते), नयतु, नयेत्, अनयत्, निनाय, नेष्यति। 'अनु' के साथ–प्रार्थना करना (to entreat) अनुनयति। 'अप' के साथ–दूर करना (To take away) अपनयति। 'अभि' के साथ–स्वांग बनाना, अभिनय करना (To act, to indicate signs) अभिनयति। 'आ' के साथ–लाना (To bring) आनयति।

नृत्—नाचना (To dance); नृत्यति, नृत्यतु, नृत्येत्, अनृत्यत्, ननर्त, नर्तिष्यति।

पच्—रसोई करना, पकाना (To cook, to digest) पचति, पचेत्, अपचत्, पपाच, पक्ष्यति।

पठ्—पढ़ना (To read); पठति, पठतु, पठेत्, अपठत्, पपाठ, पठिष्यति।

पाल्—पालन करना (To Protect); पालयति, पालयतु, पालयेत्, अपालयत्, पालयामास, पालयिष्यति।

पीड्—पीडा देना, दबाना (To hurt, to press); पीडयति, पीडयतु, पोडयेत्, अपीडयत्, पीडयामास, पीडयिष्यति।

पू—पवित्र करना (To purify); पुनाति (ते); पुनातु, पुनीयात्, अपुनात्, पुपाव, पविष्यति ।

पूर्—भरना (To fill); पूरयति, पूरयतु, पूरयेत्, अपूरयत्, पूरयामास, पूरयिष्यति ।

फल्—फल देना, सफल होना (To bear fruit, to be successful); फलति, फलतु, फलेत्, अफलत्, पफाल, फलिष्यति ।

बन्ध्—बाँधना (To bind); बध्नाति, बध्नातु, बध्नीयात्, अबध्नात्, बबन्ध, भन्त्स्यति ।

बाध्—बाधा देना, सताना (To oppress); बाधते, बाधताम्, बाधेत, अबाधत, बबाधे, बाधिष्यते ।

बुध्—जानना (To know); बोधति (ते), बोधतु, बोधेत्, अबोधत्, बुबोध, बोधिष्यति । 'प्र' वा 'वि' के साथ—जागना (To wake) प्रबोधति or विबोधति ।

भज्—भाग लेना, सेवा करना (To share, to worship); भजति (ते), भजतु, भजेत्, अभजत्, बभाज, भक्ष्यति ।

भाष्—बोलना (To speak); भाषते, भाषताम्, भाषेत, अभाषत, बभाषे, भाषिष्यते । 'सम्' के साथ—सम्भाषण करना, वार्त्तालाप करना (To converse) सम्भाषते । 'अप' के के साथ—निन्दा करना (To censure) अपभाषते ।

भिक्ष्—भीख माँगना (To beg); भिक्षते, भिक्षताम्, भिक्षेत, अभिक्षत, बिभिक्षे, भिक्षिष्यते ।

भृ—भरना (To fill); भरति (ते), भरतु, भरेत्, अभरत्, बभार, भरिष्यति ।

भ्रंश्—गिरना, नीचे आना (To fall, to decline); भ्रंशते, भ्रंशताम्, भ्रंशेत, अभ्रंशत, बभ्रंशे, भ्रंशिष्यते ।

भ्रम्—चलना (To roam); भ्रमति, भ्रमतु, भ्रमेत्, अभ्रमत्, बभ्राम, भ्रमिष्यति ।

मथ्—मथना (To churn); मथति, मथतु, मथेत्, अमथत्, ममाथ, मथिष्यति ।

मन्—मानना, समझना (To think, to know); मन्यते, मन्यताम्, मन्येत, अमन्यत, मेने, मंस्यते ।

मिल्—मिलना, साथ होना (To join, to be united, to come together); मिलति (ते), मिलतु, मिलेत्, अमिलत्, मिमेल, मेलिष्यति ।

मुद्—हर्षित होना (To rejoice); मोदते, मोदताम्, मोदेत, अमोदत, मुमुदे, मोदिष्यते ।

यज्—यज्ञ करना, पूजा करना (To Sacrifice, to make an oblationto) यजति (ते), यजतु, यजेत्, अयजत्, इयाज, यक्ष्यति ।

यत्—प्रयत्न करना (To try); यतते, यतताम्, यतेत, अयतत, येते, यतिष्यते ।

याच्—भीख माँगना, याचना (To beg); याचते, याचताम्, याचेत, अयाचत, ययाचे, याचिष्यते (also याचति) ।

रक्ष्—रक्षा करना, पालना (To protect); रक्षति, रक्षतु, रक्षेत्, अरक्षत्, ररक्ष, रक्षिष्यति ।

रभ्—प्रारम्भ करना, शुरू करना (To begin); रभते, रभताम्, रभेत, अरभत, रेभे, रप्स्यते । 'आ' के साथ-आरभते (प्रारम्भ करता है) ।

रुह—जनमना, पैदा लेना, बढ़ना (To grow, to rise); रोहति, रोहतु, रोहेत्, अरोहत्, रुरोह, रोक्ष्यति ।

'अव' के साथ—नीचे उतरना (to descend) अवरोहति ।

'आ' के साथ—चढ़ना (To mount) आरोहति ।

'प्र' के साथ—जनमना (To grow) प्ररोहति ।

लप्—बातचीत करना (To talk); लपति, लपतु, लपेत्, अलपत्, ललाप, लपिष्यति ।

'अप्' के साथ-अस्वीकार करना (To deny) अपलपति ।

'प्र' के साथ—उलटी पुलटी बातें करना (To talk incoherently) प्रलपति ।

'वि' के साथ—विलाप करना, शोक करना (To lament) विलाप करना ।

लभ्—लाभ करना (To get); लभते, लभताम्, लभेत, अलभत, लेभे, लप्स्यते ।

लस्ज्—लजाना, लज्जा करना (To be ashamed); लज्जते, लज्जताम्, लज्जेत, अलज्जत, ललज्जे, लज्जिष्यते ।

लिख्—लिखना (To write); लिखति, लिखतु, लिखेत्, अलिखत्, लिलेख, लेखिष्यति।

वस्—वसना, निवास करना (To dwell); वसति, वसतु, वसेत्, अवसत्, उवास, वत्स्यति।

'उप' के साथ—भूखा रहना, उपवास करना (To fast) उपवसति।

'प्र' के साथ—विदेश में रहना (to dwell abroad) प्रवसति।

वह्—ढोना (To carry); वहति (ते), वहतु, वहेत्, अवहत्, उवाह, वक्ष्यति।

वृध्—बढ़ना (To grow); वर्द्धते, वर्द्धताम्, वर्द्धेत, अवर्द्धत, ववृधे, वर्द्धिष्यते।

व्रज्—जाना (To go); व्रजति, व्रजतु, व्रजेत्, अव्रजत्, वव्राज, व्रजिष्यति।

वा—बहना (To blow); वाति, वातु, वायात्, अवात्, ववौ, वास्यति।

शक्—योग्य होना (To be able) शक्यति (ते), शक्यतु, शक्येत्, अशक्यत्, शशाक, शक्ष्यति। शक्नोति, शक्नोतु also.

शङ्क्—सन्देह करना (To doubt, to be afraid) शङ्कते, शङ्कताम्, शङ्केत, अशङ्कत, शशङ्के, शङ्किष्यते।

शंस्—स्तुति करना (To praise); शंसति, शंसतु,

शंसेत्, अशंसत्, शंसिष्यति। 'आ' के साथ आशा करना (To hope) आशंसति। 'प्र' के साथ प्रशंसा करना (To praise) प्रशंसति।

शप्—शाप देना (To curse); शपति (ते), शप्तु, शपेत्, अशपत्, शशाप, शप्स्यति।

शिक्ष्—(To learn); शिक्षते, शिक्षताम्, शिक्षेत, अशिक्षत, शिशिक्षे, शिक्षिष्यते।

शी—सोना (To sleep); शेते, शेताम्, शयीत, अशेत, शिश्ये, शयिष्यते।

शुच्—शोक करना (To lament); शोचति, शोचतु, शोचेत्, अशोचत्, शुशोच, शोचिष्यति।

शुभ्—शोभा देना (To shine), शोभते, शोभताम्, शोभेत, अशोभत, शुशुभे, शोभिष्यते।

श्रि—सेवा करना, आश्रय लेना (To serve); श्रयति (ते), श्रयतु, श्रयेत्, अश्रयत्, शिश्राय, श्रयिष्यति। 'आ' के साथ आश्रय लेना (To take shelter) आश्रयति।

सह्—सहना (To bear, to suffer); सहते, सहताम्, सहेत, असहत, सेहे, सहिष्यते। 'उत्' के साथ—उत्साह करना यत्न करना (To make effort) उत्सहते।

सृ—जाना, ससरना (To go); सरति, सरतु, सरेत्, असरत्, ससार, सरिष्यति। 'अनु' के साथ—पीछे पीछे चलना (To follow) अनुसरति। 'अप' के साथ—हट

जाना (To go aside) अपसरति। 'अभि' के साथ—समीप जाना (To approach) अभिसरति। 'निर' के साथ—निकल जाना (To go away) निस्सरति। 'प्र' के साथ—फैलना (To scatter) प्रसरति।

हन्—मारना (To kill); हन्ति, हन्तु, हन्यात्, अहन्, जघान, हनिष्यति।

हस्—हँसना (To laugh); हसति, हसतु, हसेत्, अहसत्, जहास, हसिष्यति।

हृ—हरण करना (To take, to steal); हरति (ते), हरतु, हरेत्, अहरत्, जहार, हरिष्यति। 'अनु' के साथ—अनुकरण (To imitate) अनुहरति। 'अप' के साथ—हटाना (To remove) अपहरति। 'उत्' और 'आ' के साथ—उदाहरण देना (To illustrate) उदाहरति। 'उप' के साथ—समीप लाना (To bring to) उपहरति। 'परि' के साथ—छोड़ना (To leave) परिहरति। 'प्र' के साथ—मारना (To strike) प्रहरति। 'वि' के साथ—क्रीडा करना, विहार करना (To sport) विहरति। 'वि' और 'आ' के साथ - कहना (To say) व्याहरति। 'वि' और 'अव' के साथ—व्यवहार करना, व्यापार करना (To transact business) व्यवहरति। 'सम्' के साथ—संहार करना, मारना (To kill) संहरति। 'सम्' और 'आ' के साथ—इकट्ठा करना (To collect) समाहरति।

ह्वे—पुकारना, बुलाना (To call by name, to call upon); ह्वयति, ह्वयतु, ह्वयेत्, अह्वयत्, जुहाव, ह्वास्यति।

अभ्यासार्थ अनुवाद (Translation)

लड़के पिता का अनुसरण करते हैं (Sons follow the father)—पुत्राः पितरम् अनुसरन्ति। राजा कोठों पर विहार करता है (The king sports on palaces)—राजा प्रासादेषु विहरति। उसने बहुत कष्ट सहे (He suffered from many difficulties)—स बहूनि दुःखानि सेहे। तुमने उसे क्यों शाप दिया? (Why did you curse him)—त्वं तं कथम् अशपः। सूर्य पूर्वदिशा में उदय होते हैं (The sun rises in the East)-सूर्यः पूर्वस्यां दिशि उदयति। पिता की आज्ञा की उपेक्षा मत करो (Do not neglect the order of the father)—पितुः आज्ञां मा उपेक्षस्व। सिंह गर्जा (The lion roard)—सिंहः जगर्ज। उसने बहुत धन ब्राह्मणों को दिये (He gave away much wealth to Brahmanas)—स बहु धनं ब्राह्मणेभ्यः व्यतरत्। मैं तुम्हारी संगति नहीं छोडूँगा (I shall not leave your company)—अहं तव संसर्गं न त्यक्ष्यामि। वे मुझे गाँव को ले गये (They led me to a village)—ते मां ग्रामं निन्युः। ईश्वर को भजो (Worship God)—ईश्वरं भज। दरिद्र धनवान् को याचते हैं (The poor beg of the rich) दरिद्राः धनवन्तं याचन्ते। वर्षा में बहुत से घास जनमते हैं (Many grasses grow in the rainy season)—वर्षासु बहूनि तृणानि रोहन्ति। तुम क्यों नहीं लजाते हो, (Why do you not feel ashamed)—त्वं कथं न लज्जसे। तुम्हारा ज्ञान बढ़े (May your knowledge increase)—तव ज्ञानं वर्द्धेत। मूर्ख बीती हुई बात को सोचते हैं (The fools lament over the past)—मूर्खाः गतं शोचन्ति। काशी में एक राजा थे (There was a king in Kashi)—

आसीत् काश्याम् एको नृपतिः। सभा में उसका मुँह शोभने लगा (His face shone in the meeting)—सभायां तस्य मुखम् अशोभत। सीता राम के पीछे पीछे बन में गईं (Sita followed Ram in the forest)—सीता रामं वने अन्वगच्छत्। इसे साँपने काटा है (Snake has bitten him)—सर्पः तम् अदशत्। हे युधिष्ठिर! दरिद्रों को भरण करो (O Yudhisthir! support the poor)—दरिद्रान् भर कौन्तेय। जाड़ा मुझे सता रहा है (The winter is oppressing me)—शीतं माँ बाधते। भात पकाओ (Cook rice)—ओदनं पच। पानी लाओ (Bring water)—जलम् आनय। मै राम को बुलाता हूँ (I call Rama)—अहं रामम् आह्वयामि। ग्वाला दूध दुहता है (Cowherd milks the milk)—गोपः दुग्धं दोग्धि।

धूप में मत दौड़ो (Donot run in the sun)-आतपे मा धाव। राम ने रावण को मारा (Rama killed Ravana)—रामः रावणं जघान। रावण ने सीता को हर लिया (Ravana abducted Sita)-रावणः सीताम् अहरत्। हे गोविन्द! क्या तुम मुझे याद करते हो? (O Govind! do you remember me)—हे गोविन्द! किं त्वं मां स्मरसि। नित्य ईश्वर को स्मरण करो (Always remember God)—ईश्वरं सततं स्मर। आज वह आनन्दित होता है (Today he rejoices)—अद्य स मोदते। पुत्र को देखकर पिता आनन्दित हुआ (the father rejoiced to see the son)—पिता पुत्रं दृष्ट्वा मुमुदे। ब्राह्मणों को यज्ञ करना चाहिये (the Brahmanas should sacrifice)-ब्राह्मणाः यजेरन्। मैं यज्ञ करूँगा (I shall sacrifice)—अहं यक्ष्यामि। तुम क्यों डरते हो? (Why are you afraid)—त्वं कथं शङ्कसे। आज मैं भूखा रहूँगा (I shall fast today)—अद्य अहम् उपवत्स्यामि। उसने मद्य पीआ था (He drank wine)—स मद्यं पपौ। गोदावरी के तीर पर विशाल सेमल का पेड़ है (There

is a big semal tree on the bank of the Godavari)—अस्ति गोदावरी तीरे विशालः शाल्मलीतरुः ।

अभ्यास (Exercise 46)

(१) संस्कृत में अनुवाद करो (Translate into Sanskrit)—नश्वर संसार के लिये शोच मत करो (Do rot lament for the perishable world). पिता की सेवा करो (Serve the father). वह अनाज का व्यवहार करता है (He deals in grain). राजा की जय हो (Victory be to the King). वह गुरु की प्रशंसा करता है (He praises the teacher). उसने कल्ह पूजा की थी (He had worshipped yesterday). तुम इस पुरस्कार के योग्य होते हो (You desreve this prize). मैं यह समझता हूँ (I think this). उसने दूध पीया (He drank milk). मैं नहीं सकता (I do not become able). क्या तुम मुझे स्मरण करते हो ? (Do you remember me). यथाशक्ति प्रयत्न करो (Try according to your might). मैं धन पाऊँगा (I shall get wealth). वह बन में निवास करता है (He dwells in the forest). ज्ञान के विना लोग वृथा विद्या को ढोते हैं (Men carry learning uselessly without wisdom). भूसे से अलग चावल नहीं जमता (Rice separated from husk does not grow). वे हाथी पर चढ़े (They mounted on elephant) साँप मेढ़क को निगल जाता है (A snake swallows a frog). वह नदी को तैर गया (He crossed the river). राजा रथ से उतरा (The king discended from the chariot). आग ने इस गाँव को जला डाला (Fire burnt this village). हे भगवन् । मेरी रक्षा करो (O God ! protect me). आग जलने लगी (fire began to burn). किसान खेत को जोतते हैं (Farmers plough the

field). वह पाठशाला को देखता है (He inspects the school). चन्द्रमा रात में उदय होते हैं (The moon rises in the night). उसके पिता ने धन उपार्जन किया था (His father had earned the wealth). मूसे चावल खा गये (Mice ate up the rice). मत रोओ (Do not weep). मिट्टी मत खोदो (Do not dig the) ground).

कर्तृवाच्य

जिस वाक्य में कर्त्ता में प्रथमा और कर्म्म में द्वितीया विभक्ति रहती है उस वाक्य में कर्तृवाच्य (Active Voice) का प्रयोग कहा जाता है। यथा—कुम्भकारः घटं करोति (कुम्हार घड़ा बनाता है)। देवदत्तः ग्रामं गच्छति (देवदत्त गाँव जाता है)। शिशुः पुस्तकं पठति (बालक पुस्तक पढ़ता है)। अश्वः जलं पिबति (घोड़ा पानी पीता है) इत्यादि।

कर्तृवाच्य में कर्त्ता में जो वचन और पुरुष होते हैं क्रिया में भी वही वचन और पुरुष होते हैं, अर्थात् कर्त्ता एकवचन का होगा तो क्रिया भी एकवचन की होगी; कर्त्ता द्विवचन का होगा तो क्रिया भी द्विवचन की होगी और कर्त्ता यदि बहुवचनान्त होगा तो क्रिया भी बहुवचनान्त होगी। उसी तरह यदि कर्त्ता प्रथमपुरुष का होगा तो क्रिया भी प्रथमपुरुष की होगी, कर्त्ता यदि मध्यमपुरुष का होगा तो क्रिया भी मध्यमपुरुष की होगी और कर्त्ता यदि उत्तमपुरुष का होगा तो क्रिया भी उत्तमपुरुष की होगी। यथा—कुम्भकारः घटं

करोति, कुम्भकारौ घटं कुर्व्वतः, कुम्भकाराः घटं कुर्वन्ति। स पठति, त्वं पठसि, अहं पठामि इत्यादि।

कर्म्मवाच्य

जिस वाक्य में कर्त्ता में तृतीया विभक्ति और कर्म्म में प्रथमा विभक्ति हो तो उसमें कर्म्मवाच्य (Passive Voice) का प्रयोग कहा जाता है। यथा—कुम्भकारेण घटः क्रियते (कुम्हार से घड़ा बनाया जाता है)। शिष्येण गुरुः पृच्छ्यते (शिष्य से गुरु पूछा जाता है)। मया चन्द्रः दृश्यते (मुझ से चन्द्रमा देखा जाता है)।

कर्म्मवाच्य में कर्म्म में जो वचन और पुरुष होते हैं क्रिया में भी वही वचन और पुरुष होते हैं, अर्थात् कर्म्म एकवचनान्त होने पर क्रिया एकवचनान्त, कर्म्म द्विवचनान्त होने पर क्रिया द्विवचनान्त और कर्म्म बहुवचनान्त होने पर क्रिया बहुवचनान्त होती है। उसी तरह कर्म्म प्रथमपुरुष का होने पर क्रिया प्रथमपुरुष की, कर्म्म मध्यमपुरुष का होने पर क्रिया मध्यमपुरुष की और कर्म्म उत्तमपुरुष का होने पर क्रिया उत्तमपुरुष की होती है। यथा—कुम्भकारेण घटः क्रियते, कुम्भकारेण घटौ क्रियेते। कुम्भकारेण घटाः क्रियन्ते। स पृच्छ्यते, त्वं पृच्छ्यसे, अहं पृच्छ्ये।❀

❀कर्त्तृवाच्य से कर्म्मवाच्य की क्रिया बनाने के लिये लट्, लोट्, लङ् और विधिलिङ् इन चारों लकारों में धातु के आगे 'य' लगाकर आत्मनेपद

* भाववाच्य ।

जिस वाक्य में कर्त्ता में तृतीया विभक्ति हो और कर्म्म न हो उस वाक्य में भाववाच्य का प्रयोग कहा जाता है । भाववाच्य की क्रिया सदा एकवचन और प्रथमपुरुष की होती है । यथा— मया स्थीयते (मुझसे रहा जाता है)। आवाभ्यां स्थीयते (हम दोनो से रहा जाता है)। अस्माभिः स्थीयते (हम लोगों से रहा जाता है)। त्वया स्थीयते (तुमसे रहा जाता है)। तेन स्थीयते (उससे रहा जाता है) इत्यादि ।

अभ्यास (Exercise 47)

(१) वाच्य-परिवर्त्तन करो (Change the voice of):—बालकाः पुस्तकानि पठन्ति। तेन चन्द्रः दृश्यते। स मां कथयति। गोपः दुग्धं दोग्धि। यूयं किं कुरुथ। अहं सुखम् अनुभवामि। स तौ प्रणमति। विद्या विनयं ददाति। अहं तत् करिष्यामि। ते गृहं जग्मुः। ते नदीम् अपश्यन्। अहं त्वां पृच्छामि।

कृदन्त ।

धातु के परे तुम्, त्वा इत्यादि कई प्रत्यय लगाये जाते हैं। इन प्रत्ययों को 'कृत्' कहते हैं। 'कृत्' प्रत्यय द्वारा जो शब्द

का प्रत्यय लगा देते हैं। अन्य लकारों में 'य' न लगाकर धातु में केवल आत्मनेपद की विभक्ति लगाई जाती है। जैसे, पुस्तकं पठति (कर्तृ), पुस्तकं पठ्यते (कर्म्म); पुस्तकं पपाठ (कर्तृ), पुस्तकं पेठे (कर्म्म)।

* अकर्म्मक क्रिया में भाववाच्य का प्रयोग होता है। सकर्म्मक में कर्म्मवाच्य का प्रयोग होता है। अकर्म्मक क्रिया से कर्म्म के नहीं रहने के कारण कर्त्ता में तो तृतीया विभक्ति हो जाती है पर भाववाच्य में परिवर्त्तित क्रिया सदा एकवचन और प्रथमपुरुष की होती है।

(संज्ञा, विशेषण, अव्यय) बनते हैं उन्हें कृदन्त शब्द कहते हैं। ये क्रिया के समान ही अर्थ प्रकाशित करते हैं। 'कृत्' प्रत्यय अनेक प्रकार के हैं; उनमें से कुछ मुख्य प्रत्यय नीचे दिये जाते हैं।

तुम् तुमुन् (Infinitive mood.)

निमित्त अर्थ में धातु के परे तुम् प्रत्यय होता—है। तुम् प्रत्ययान्त शब्द अव्यय हैं। यथा—दा + तुम् = दातुम् (देने के निमित्त, देने के लिये, To give)। स्था + तुम् = स्थातुम् (ठहरने के लिये, To stand)। पा + तुम् = पातुम् (पीने के लिये, To drink)। हन् + तुम् = हन्तुम् (मारने के लिये, To kill)। गम् + तुम् = गन्तुम् (जाने के लिये, To go)। ग्रह + तुम् = ग्रहीतुम् (ग्रहण करने के लिये, To take)। कृ + तुम् = कर्त्तुम् (करने के लिये, To do)। वच् + तुम् = वक्तुम् (बोलने के लिये, To speak)। जि + तुम् = जेतुम् (जीतने के लिये, To conquer)। दृश् + तुम् = द्रष्टुम् (देखने लिये, To see)। चिन्ति + तुम् = चिन्तयितुम् (चिन्ता करने के लिये, To think)। भुज् + तुम् = भोक्तुम् (खाने के लिये, To eat)।

त्वा (पूर्व्वकालिक क्रिया)।

अनन्तर अर्थ में धातु के परे 'त्वा' प्रत्यय लगाया जाता है। इस प्रत्यय से बने शब्द अव्यय होते हैं। यथा—कृ + त्वा = कृत्वा

(करने के अनन्तर, करके, having done)। जि + त्वा = जित्वा (जीत कर)। गम् + त्वा = गत्वा (जाकर)। भुज् + त्वा = भुक्त्वा (खाकर)। दृश् + त्वा = दृष्ट्वा (देखकर)। दा + त्वा = दत्वा (देकर)। पा + त्वा = पीत्वा (पीकर)। चिन्ति + त्वा = चिन्तयित्वा (सोच कर, विचार कर)। वच् + त्वा = उक्त्वा (बोल कर)। ग्रह + त्वा = गृहीत्वा (लेकर) इत्यादि।

यप्।

यदि धातु के पूर्व्व उपसर्ग रहे तो उसके परे अनन्तर अर्थ में 'यप्' प्रत्यय लगता है। इससे बने भी शब्द अव्यय होते हैं। यथा—आ + दा + यप् = आदाय (लेकर के, ग्रहण करके)। आ + गम् + यप् = आगम्य, आगत्य (आकर)। आ + हन् + यप् = आहत्य (मार कर)। वि + जि + यप् = विजित्य (जीत कर)। सं + स्मृ + यप् = संस्मृत्य (स्मरण करके)। प्र + नम् + यप् = प्रणम्य (प्रणाम करके। *

तव्य, अनीय, य।

भविष्यत् काल में धातु के उत्तर कर्म्मवाच्य तथा भाव-वाच्य में तव्य, अनीय और य ये तीन प्रत्यय होते हैं। इनसे

* तुम्, त्वा तथा यप् से बने शब्द अव्यय हैं इसलिये इन के परे कोई विभक्ति नहीं होती और ये असमापिका क्रिया के समान प्रयोग में आते हैं।

बने शब्दों का रूप पुंल्लिङ्ग में 'गज', स्त्रीलिङ्ग में 'लता' और नपुंसक में 'फल' शब्द के समान होता है।

कर्म्मवाच्य में तव्य, अनीय और य द्वारा बना हुआ शब्द कर्म्म का विशेषण के ऐसा हो जाता है, इसलिये कर्म्म में जो लिङ्ग, जो विभक्ति और जो वचन होता है उन शब्दों का भी वही लिङ्ग, विभक्ति और वचन हो जाता है। यथा—पठ्+अनीय—मया ग्रन्थः पठनीयः (मुझसे ग्रन्थ पढ़ा जायगा)। मया पत्रिका पठनीया (मुझसे पत्रिका पढ़ी जायगी)। मया पुस्तकं पठनीयम् (मुझसे पुस्तक पढ़ी जायगी)। पठनीयं ग्रन्थम्, पठनीयेन ग्रन्थेन, पठनीयाय ग्रन्थाय, पठनीयात् ग्रन्थात्, पठनीयस्य ग्रन्थस्य, पठनीये ग्रन्थे, पठनीययोः ग्रन्थयोः, पठनीयेषु ग्रन्थेषु।

भाववाच्य में तव्य, अनीय और य से बने शब्दों का रूप सदा अकारान्त नपुंसक शब्द के एकवचन के समान होता है। यथा—स्था + तव्य—मयास्थातव्यम्। क्रीड् + तव्य—त्वयाक्रीडितव्यम्। लस्ज् + तव्य—तेनलज्जितव्यम्।

तव्य, अनीय और य से बने कुछ पद।

दा–दातव्यम्, दानीयम्, देयम्। जि–जितेव्यम्, जयनीयम्, जेयम्। शी–शयितव्यम्, शयनीयम्, शेयम्। श्रु–श्रोतव्यम्, श्रवणीयम्, श्रव्यम्। भू–भवितव्यम्, भवनीयम्, भव्यम्। कृ—कर्त्तव्यम्, करणीयम्, कार्य्यम्। ग्रह्–ग्रहीतव्यम्, ग्रहणीयम्, ग्राह्यम्। गम्–गन्तव्यम्, गमनीयम्, गम्यम्। दृश्–

द्रष्टव्यम्, दर्शनीयम्, दृश्यम् । वच्-वक्तव्यम्, वचनीयम्, वाच्यम् । भुज्-भोक्तव्यम्, भोजनीयम्, भोज्यम् । चिन्ति-चिन्तयितव्यम्, चिन्तनीयम्, चिन्त्यम् ।❀

शतृ, शानच् (Present Participle)

कर्तृवाच्य के वर्त्तमान काल में (करता हुआ, खाता हुआ इत्यादि अर्थ में) परस्मैपदी धातुओं के परे 'शत् ' प्रत्यय लगता है । 'शत्' प्रत्यय का केवल 'अत्' रह जाता है । यथा—हस् + शतृ = हसत् (हसन्-पु०, हसन्ती—स्त्री० हसत्-नपुं०)-हँसता हुआ । गम् + शतृ = गच्छत् (जाता हुआ)। दृश् + शतृ = पश्यत् (देखता हुआ)। श्रु + शतृ = शृण्वत् (सुनता हुआ) इत्यादि ।

कर्तृवाच्य के वर्त्तमान काल में आत्मनेपदी धातुओं के परे 'शानच्' प्रत्यय लगता है । 'शानच्' का केवल 'आन' रह जाता है । यथा—कृ + शानच् = कुर्व्वाण (कुर्व्वाणः—पुं०, कुर्व्वाणा-स्त्री०, कुर्व्वाणम्—नपुं०)—करता हुआ । ब्रू + शानच् = ब्रुवाण (बोलता हुआ) इत्यादि ।

इनसे बने शब्द विशेषण हैं, इसीलिये विशेष्य के लिङ्ग, विभक्ति और वचन इनमें होते हैं। यथा—स धावन् आगच्छति। धावन्तम् अश्वं पश्य । धावता अश्वेन स हतः। पश्यन्

❀ तुमको यह करना चाहिये (you should do this), तुम यह करो (you do this) ऐसे वाक्यों के अनुवाद में इन प्रत्ययों से काम लेते हैं । यथा—तुमको यह करना चाहिये—त्वया इदं कर्त्तव्यम् , करणीयम्, कार्य्यम् ।

पुरुषः, पश्यन्तौ पुरुषौ, पश्यन्तः पुरुषाः, गच्छन्ती स्त्री। पतत् फलम्। ब्रुवाणः पुरुषः, ब्रुवाणा स्त्री इत्यादि।*

अभ्यास (Exercise 47)

(१) संस्कृत में अनुवाद करो (Translate into Sanskrit):— विद्यार्थी पढ़ता हुआ घर चला गया (The student went home reading). घर से आता हुआ वह थक गया (Coming from home he got tired). दौड़ते हुए घोड़े को पकड़ो (Catch hold of the running horse). स्कूल जाते हुए लड़कों से मैंने पूछा (I asked the boys going to school). रोते हुए लड़के को मिठाई दो (Give sweets to the weeping child).

(२) शुद्ध करो (Correct):—आगच्छन् ते मया उक्ताः। पश्यता स्त्रिया सपृष्टः। पतिं पश्यन् सा मुदिता अभवत्। विवदमानाः स तत्र गतः। आगच्छन् तौ बलात् धृतौ।

तवत् (क्तवत्)।

भूतकाल में धातु के परे कर्तृवाच्य में 'तवत्' प्रत्यय होता है। 'तवत्' प्रत्ययान्त शब्द कर्ता के विशेषण होते हैं, इसलिये कर्ता का जो लिङ्ग, विभक्ति, तथा वचन होता है, उन शब्दों का भी वही (लिङ्ग), वही विभक्ति और वही वचन होता है। उन सब शब्दों के रूप पुल्लिङ्ग और नपुंसक में श्रीमत् शब्द के समान और स्त्रीलिङ्ग में 'ई' प्रत्यय लगने के बाद नदी शब्द के समान होते हैं।

---

* विद् + शतृ = विदत्, विद्वस्। आस् + शानच् = आसीन।

जि + तवत् = जितवत्, पुं०—जितवान्, जितवन्तौ, जितवन्तः, नपुं०–जितवत्, जितवती, जितवन्ति। स्त्री०–जितवती, जितवत्यौ, जितवत्यः। रामो रावणं जितवान् (रामने रावण को जीता)। श्रु + तवत्–अहं शास्त्रं श्रुतवान् (मैंने शास्त्र सुना)। कृ + तवत्- स किं कृतवान् (उसने क्या किया)। स्था + तवत् = स्थितवत्, दा + तवत् = दत्तवत्, ज्ञा + तवत् = ज्ञातवत्, नी + तवत् = नीतवत्, दृश् + तवत् = दृष्टवत्, वच् + तवत् = उक्तवत, हन् + तवत् = हतवत्, गम् + तवत् = गतवत् इत्यादि।

त (क्त)

भूतकाल में धातु के परे कर्म्मवाच्य में 'त' प्रत्यय लगता है। यथा—जि + त = जितः (पुं०), जिता (स्त्री०) जितम् (नपुं०) ग्रह + त = गृहीत। दा + त = दत्त। दृश् + त = दृष्ट। ज्ञा + त= ज्ञात। श्रु + त = श्रुत। वच् + त = उक्त।

'कर्म्म वाच्य में 'त' प्रत्ययान्त शब्द कर्म्म का विशेषण हो जाता है। इसलिये कर्म्म का जो लिङ्ग, विभक्ति और वचन होता है इन शब्दों का भी वही लिङ्ग, वही विभक्ति और वही वचन होता है। 'त' प्रत्यय द्वारा बने शब्दों का रूप पुल्लिङ्ग में 'गज' के समान, स्त्रीलिङ्ग में 'लता' शब्द के समान और नपुंसक में 'फल' शब्द के समान होता है। यथा—पठ् + त= पठित, तेन ग्रन्थः पठितः (उससे ग्रन्थ पढ़ा गया), तेन पत्रिका पठिता (उससे पत्रिका पढ़ी गई), तेन पुस्तकं पठितम् (उससे पुस्तक पढ़ी गई)।

अकर्म्मक धातुओं के परे तथा गम्, रुह्, इत्यादि गत्यर्थक धातुओं के परे कर्तृवाच्य में भी 'त' प्रत्यय होता है। कर्तृवाच्य में 'त' प्रत्यय होने से जो शब्द बनते हैं वे कर्त्ता के विशेषण होते हैं। यथा—मृ + त = मृत, पुरुषो मृतः (पुरुष मर गया)। स्त्री मृता (स्त्री मर गई)। अपत्यं मृतम् (सन्तान मर गई)। भू + त=भूत, स्था + त=स्थित, लस्ज् + त=लज्जित, भी + त = भीत, जागृ + त = जागरित, गम् + त = गत-स गृहं गतः (वह घर गया)। रुह् + त=रूढ़-वानरो वृक्षम् आरूढः (बन्दर पेड़ पर चढ़ गया)।

अकर्म्मक और सकर्म्मक दोनों प्रकार की धातुओं के परे भाववाच्य में 'क्त' प्रत्यय होता है। भाववाच्य में 'त' प्रत्यय से जो शब्द बनते हैं उनका रूप सर्व्वदा नपुंसक की प्रथमा विभक्ति के एक वचन के समान होता है। यथा-मया जितम् (मैंने जीता)। तेन कुत्र स्थितम् ? (वह कहाँ ठहरा)। त्वया दृष्टम् (तुमने देखा)। शिशुना रोदितम् (बच्चा रोया)। मया भुक्तम् (मैंने खाया)। स्त्रिया लज्जितम् (स्त्री लज्जित हुई)। तेन जागरितम् (वह जागा)। चौरेण पलायितम् (चोर भाग गया)।*

---

*'क्त' (त) प्रत्यय से बने कुछ मुख्य शब्दः— आस + त = आसित, कॄ (छितरना to scatter) + त = कीर्ण, क्रुध् + त = क्रुद्ध, क्षम् + त = क्षान्त, क्षै + त = क्षाम, खन् + त = खात, गै + त = गीत, च्यु + त = च्युत, छिद् + त = छिन्न, जॄ (बूढा होना) + त = जीर्ण, तन् + त = तत, तॄ (तैरना) + त = तीर्ण, दंश् + त = दष्ट, दह् + त = दग्ध, दुह् + त =

क्ति ।

धातु के परे भाववाच्य में 'क्ति' प्रत्यय होता है। 'क्ति' प्रत्यय का केवल 'ति' रह जाता है। 'क्ति' प्रत्ययान्त शब्द भाववाचक संज्ञा होते हैं और ये सदा स्त्रीलिङ्ग होते हैं। यथा—मन् + क्ति = मतिः, गम् + क्ति = गतिः (गमन), श्रु + क्ति = श्रुतिः, दृश् + क्ति = दृष्टिः, कृ + क्ति = कृतिः (कर्म्म, काम), प्र + आप् + क्ति = प्राप्तिः (पाना), भज् + क्ति = भक्तिः, मुच् + क्ति = मुक्तिः इत्यादि।

धातु के परे भाववाच्य में घञ्, अल, तथा अनट् प्रत्यय लगाते हैं। 'घञ्' और 'अल्' का 'अ' मात्र रह जाता है और 'अनट्' का 'अन' बच जाता है। इन प्रत्ययों से बने शब्द भाववाचक संज्ञा होते हैं। घञ् तथा अल् प्रत्ययान्त शब्द पुंल्लिङ्ग और अनट् प्रत्ययान्त शब्द नपुंसक होते हैं। यथा—त्यज् + घञ् = त्यागः (छोड़ना), पच् + घञ् = पाकः, पठ् + घञ् = पाठः, वस् + घञ् = वासः; जि + अल = जयः ग्रह + अल् = ग्रहः,

---

दुग्ध, धा + त = हित, पच् + त = पक्व, पद् + त = पन्न, पॄ + त = पूर्ण, पा + त = पीत, ब्रू + त = उक्त, भञ्ज् + त = भग्न, भिद् + त = भिन्न, मन् + त = मत, मस्ज् + त = मग्न, मा + त = मित, मुच् + त = मुक्त, मुह् + त = मुग्ध, म्लै + त = म्लान, यज् + त = इष्ट, रभ् + त = रब्ध, रुध् + त = रुद्ध, रुह् + त = रूढ, लग् (लगाना, to touch) + त = लग्न, लभ् + त = लब्ध, लिह (चाटना, to lick) + त = लीढ, ली + त = लीन, वच् + त = उक्त, वद् + त = उदित, वप् + त = उप्त, वस् + त = उषित, वह् + त = ऊढ, स्वप् + त = सुप्त, हा + त = हीन, सह् + त = सोढ।

गम् + अनट् = गमनम्, शी + अनट् = शयनम्, भुज् + अनट् = भोजनम् इत्यादि ।

इनके अतिरिक्त धातुओं के परे कर्तृवाच्य में तृच्, णक, णिन् इत्यादि प्रत्यय लगते हैं। प्रयोग में 'तृच्' का 'तृ' 'णक' का 'अक' तथा 'णिन्' का 'इन्' रह जाता है। उपर्युक्त प्रत्ययान्त शब्द विशेषण होते हैं। यथा—दा + तृच् = दाता (देने वाला)–पुं०, दात्री–स्त्री०, दातृ–नपुं० । कृ + तृच् = कर्त्ता, श्रु + तृच् = श्रोता, हन् + तृच् = हन्ता इत्यादि। इनके रूप दातृ के समान होते हैं। दा + णक = दायकः (देने वाला)–पुं० । नी + णक = नायकः, पठ् + णक = पाठकः इत्यादि। गम् + णिन् = गामी (जाने वाला)—पुं०, गामिनी—स्त्री०, गामि नपु० । कृ + णिन् = कारी इत्यादि। णिन् प्रत्ययान्त शब्दों के रूप पुल्लिङ्ग में 'गुणिन्' के समान होते हैं।

समास ।

विभक्तिहीन शब्द को नाम कहते हैं। विभक्तियुक्त होने पर यही नाम पद कहा जाता है। वृक्ष, गिरि, पशु, भ्रातृ इन शब्दों में विभक्ति नहीं है इसीलिये इस अवस्था में इन्हें नाम कहते हैं। वृक्षः, वृक्षौ, वृक्षाः; गिरिः गिरी, गिरयः; पशुः, पशू, पशवः; भ्राता, भ्रातरौ, भ्रातरः इन शब्दों में विभक्तियाँ लगी हुई हैं इसलिये इनको नाम न कह कर 'पद' कहते हैं।

प्रत्येक पद के अन्त में एक न एक विभक्ति अवश्य रहती है। कभी कभी दो तीन पद एकत्र किये जाते हैं; उस समय

केवल अन्तिम पद में विभक्ति रहती है, पूर्व्व पदों में विभक्ति नहीं रहती। यथा—सुशीलबालकः पहले इसका रूप 'सुशीलः बालकः' ऐसा था किन्तु दोनों पदों को एकत्र करने से 'सुशील बालकः' रूप हुआ। संयोग होने के कारण 'सुशील' में विभक्ति नहीं रही, 'बालकः' अन्तिम पद है इसलिये इसमें विभक्ति लगी रह गई। इस प्रकार दो तथा अनेक पदों के एकत्र संयोग को समास कहते हैं।

समास छः प्रकार के होते हैं—कर्म्मधारय, तत्पुरुष, द्वन्द्व, बहुव्रीहि, द्विगु और अव्ययीभाव।

कर्म्मधारय।

विशेषण तथा विशेष्यपदों का जो समास होता है, उसे कर्म्मधारय समास कहते हैं। यथा—उन्नतः तरुः उन्नततरुः; नीलम् उत्पलम् नीलोत्पलम्; गम्भीरः कूपः गम्भीरकूपः; सुन्दरः पुरुषः सुन्दरपुरुषः।

यदि विशेषण तथा विशेष्य स्त्रीलिङ्ग हों तो विशेषण पुल्लिङ्ग के समान हो जाता है, अर्थात् आकार, ईकार आदि स्त्रीलिङ्ग के जो चिन्ह हैं वे नहीं रहते। यथा—दीर्घा यष्टिः दीर्घयष्टिः; जीर्णा तरिः जीर्णतरिः; सती प्रवृत्तिः सत्प्रवृत्तिः।❀

❀ कर्म्मधारय समास में पूर्व्ववर्त्ती विशेषण 'महत्' का 'महा' हो जाता है, यथा—महान् वृक्षः = महावृक्षः; महान् ब्राह्मणः = महाब्राह्मणः।

तत्पुरुष ।

पूर्व्वपद द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी और सप्तमी इनमें से किसी विभक्ति से युक्त हो और उत्तर पद प्रथमा विभक्ति से युक्त हो तो ऐसे पदों के संयोग को तत्पुरुष समास कहते हैं। यथा—गृहं गतः = गृहगतः; लोभेन जितः = लोभजितः; धनाय लोभः = धनलोभः; सर्पात् भयम् = सर्प-भयम्; वृक्षस्य शाखा = वृक्षशाखा; पुरुषेषु उत्तमः=पुरुषोत्तमः।

पूर्व्वपद में जिस विभक्ति का लोप होता है उसी के अनुसार उस समास का नाम द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी तथा सप्तमी तत्पुरुष रक्खा जाता है।*

द्वन्द्व ।

जो परस्पर विशेष्य विशेषण न हैं ऐसे प्रथमा विभक्तियुक्त दो अथवा अनेक पदों के समास को द्वन्द्व समास कहते हैं। यह दो प्रकार का होता है; इतरेतर द्वन्द्व और समाहारद्वन्द्व। यदि दो एक वचनान्त पदों में द्वन्द्व समास हो तो अन्तिम पद द्विवचनान्त होता है और शेष सब स्थानों में बहुवचनान्त होता है। अन्तिम शब्द जिस लिङ्ग का होता है, द्वन्द्व समास होने पर समस्त शब्द का वही लिङ्ग हो जाता है। ऐसे समास

* सुबन्त पद के साथ 'नञ्' का जो समास होता है उसे 'नञ्' तत्पुरुष कहते हैं। नञ् का स्वरादि पद के पूर्व 'अन्' और व्यञ्जनादि पद के पूर्व 'अ' रह जाता है। यथा—न ब्राह्मणः अब्राह्मणः; नप्रियः अप्रियः न उद्विग्नः अनुद्विग्नः।

को इतरेतर द्वन्द्व कहते हैं। यथा—रामश्च लक्ष्मणश्च—राम लक्ष्मणौ। भीमश्च अर्ज्जुनश्च—भीमार्ज्जुनौ। नदी च पर्व्वतश्च-नदी पर्व्वतौ। फलं च पुष्पं च-फलपुष्पे। कन्दं च मूलं च फलं च—कन्दमूलफलानि। रूपं च रसश्च गन्धश्च स्पर्शश्च शब्दश्च-रूपरसगन्धस्पर्शशब्दाः।

कभी कभी द्वन्द्व समास में अन्तिम शब्द चाहे किसी भी लिङ्ग का क्यों न हो, समस्त पद नपुंसक तथा एकवचनान्त हो जाता है। ऐसे समास को समाहार द्वन्द्व कहते हैं। यथा-हंसश्च कोकिलश्च-हंसकोकिलम्; पाणीच पादौच-पाणिपादम्।

बहुव्रीहि।

जिन पदों का समास होता है उन पदों का अर्थबोध न होकर यदि अन्य वस्तु या व्यक्ति का अर्थबोध हो तो ऐसे समास का बहुव्रीहि समास कहते हैं। समास करने के समय बहुव्रीहि में 'यद्' (जो) शब्द का कोई पद रहता है। यथा—दीर्घौ बाहू यस्य स दीर्घबाहुः। यहाँ पर 'दीर्घ दोनों बाहु' ऐसा अर्थबोध न होकर दीर्घ बाहु वाले किसी अन्य व्यक्ति का बोध होता है। निर्मलं जलं यस्याः सा निर्मलजला-निर्म्मलजलयुक्तनदी।

यदि दो स्त्रीलिंग पदों में बहुव्रीहि समास होता है तो पूर्व-पद प्रायः पुंलिंग हो जाता है, अर्थात् स्त्रीलिंग का चिन्ह आकार ईकारादि नहीं रहता। यथा—निर्म्मला मतिर्यस्य स निर्म्मल-मतिः। मृदुर्गतिर्यस्य स मृदुगतिः।

बहुव्रीहि समास से जो पद बनता है वह प्रायः विशेषण होता है, इसलिये विशेष्य के लिङ्ग, विभक्ति और वचन इसमें भी होते हैं।

द्विगु।

जिसमें पूर्व्व पद संख्यावाचक शब्द हो तथा जिसमें समाहार रहे अर्थात् एक समय में अनेक वस्तुओं का बोध हो तो उसे समाहार द्विगु कहते हैं। समाहार के अतिरिक्त दूसरे अर्थ में भी द्विगु होता है। समाहार द्विगु करने से कहीं कहीं स्त्रीलिङ्ग और 'ई' प्रत्यय और कहीं कहीं नपुंसक लिङ्ग हो जाता है। यथा—त्रयाणां लोकानां समाहारः—त्रिलोकी। त्रिलोकी कहने से एक ही समय तीनों लोकों का बोध होता है। यहाँ पर स्त्रीलिंग तथा ईकार हो गया है। त्रयाणां भुवनानां समाहारः—त्रिभुवनम्। यहाँ नपुसक लिङ्ग ही हुआ।

अव्ययीभाव।

सामीप्य, वीप्सा (repetition), अनतिक्रम, अभाव पर्य्यन्त इत्यादि अर्थों में अव्ययों के साथ सुबन्त पदों का जो समास होता है उसका नाम अव्ययीभाव है। जिन पदों का समास होता है उनमें से प्रथम पद अव्यय रहता है। समास करने पर समस्त पद यदि अकारान्त रहता है तो पञ्चमी भिन्न सब विभक्तियों में उसका रूप अकारान्त नपुंसक शब्द की प्रथमा विभक्ति के एकवचन के समान होता है; इसके अति-

रिक्त अन्य स्थानों में अव्यय के समान किसी विभक्ति का चिन्ह नहीं रहता। यथा—कूलस्य समीपे उपकूलम्; गृहे गृहे प्रतिगृहम्; शक्तिमनतिक्रम्य यथाशक्ति; विघ्नस्य अभावः निर्विघ्नम्; समुद्रम् अभिव्याप्य आसमुद्रम् (समुद्रपर्य्यन्तम्)।

अभ्यास (Exercise 48)

(१) निम्नलिखित पदों को एकत्र कर एक समस्त पद लिखो (Give one word for):—दीर्घौ बाहू यस्य सः। तीक्ष्णा बुद्धिः यस्य सः। दुःखं प्राप्तः। राज्ञः पुरुषः। स्वर्गात् भ्रष्टः। अग्नेः ज्वाला। नदी च पर्व्वतश्च। पाणी च पादौ च। मृदुः गतिः। सुन्दरी स्त्री। विघ्नस्य अभावः। दिने दिने इति। त्रयाणां लोकानां समाहारः। गृहस्य समीपे इति। नद्याः जलम्। महान् तरुः। महती इच्छा।

तद्धित प्रत्यय।

शब्द (संज्ञा, सर्व्वनाम, विशेषण और अव्यय) के परे जिन ष्ण, ष्ण्य, ष्णि, ष्णेय, त्व, ता, मतुप्, वतिच्, तर, तम, मयट् आदि प्रत्ययों को लगा कर दूसरे शब्द (संज्ञा, विशेषण और अव्यय) बनाये जाते हैं उन प्रत्ययों को तद्धित प्रत्यय कहते हैं। तद्धित प्रत्यय अनेक हैं, उनमें से मुख्य मुख्य नीचे दिये जाते हैं।

ष्ण, ष्ण्य, ष्णि, ष्णेय।

अपत्य (सन्तान) अर्थ में शब्द के परे ष्ण, ष्ण्य, ष्णि, ष्णेय प्रत्यय लगाये जाते हैं। प्रयोग के समय ष्ण का अ, ष्ण्य का य, ष्णि का इ और ष्णेय का एय रह जाता है। यथा—वसु-

देवस्य अपत्यम् (वसुदेव का अपत्य)—वासुदेवः (वसुदेव + ष्ण); कश्यपस्य अपत्यम्–काश्यपः; पाण्डोः अपत्यम्–पाण्डवः; रघोः अपत्यम्–राघवः, यदोः अपत्यम्–यादवः; धृतराष्ट्रस्य अपत्यम्–धार्त्तराष्ट्रः; भृगोः अपत्यम्–भार्गवः। ये सब ष्ण प्रत्ययान्त शब्द हैं। गर्गस्यापत्यम्–गार्ग्यः; वत्सस्य अपत्यम्–वात्स्यः; जमदग्नेः अपत्यम्–जामदग्न्यः। ये सब ष्ण्य प्रत्ययान्त शब्द हैं। दशरथस्य अपत्यम्–दाशरथिः; द्रोणस्य अपत्यम्–द्रौणिः; शूरस्य अपत्यम्–शौरिः; सुमित्रायाः अपत्यम्–सौमित्रिः। ये सब ष्णि प्रत्ययान्त हैं। गङ्गायाः अपत्यम्–गाङ्गेयः; राधायाः अपत्यम्–राधेयः; कुन्त्याः अपत्यम्–कौन्तेयः; विनतायाः अपत्यम्–वैनतेयः; सरमायाः अपत्यम्–सारमेयः; भगिन्याः अपत्यम्–भागिनेयः। ये सब ष्णेय प्रत्ययान्त शब्द हैं। ष्णेय प्रत्यय प्रायः स्त्रीलिङ्ग शब्दों के अन्त में लगता है।

इन प्रत्ययों से बने शब्द सभी संज्ञा हैं।

ता, त्व।

भाव अर्थ में शब्द के परे ता (तल्) और त्व प्रत्यय होते हैं। 'ता' प्रत्ययान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग और 'त्व' प्रत्ययान्त शब्द नपुंसक होते हैं। यथा—प्रभोर्भावः–प्रभुता, प्रभुत्वम्। साधोर्भावः–साधुता, साधुत्वम्। पशोर्भावः–पशुता, पशुत्वम्। व्याघ्रस्यभावः—व्याघ्रता, व्याघ्रत्वम्। निर्दयस्य भावः–निर्दयता, निर्दयत्वम्।

ये शब्द भाववाचक संज्ञा हैं।

मतुप् ।

"जिसका अथवा जिसमें है" इस अर्थ में शब्द के परे मतुप् प्रत्यय होता है। 'मतुप्' का केवल 'मत्' रह जाता है। यथा—मतिः अस्य अस्ति—मतिमान् (मतिमत्)। श्रीः अस्य अस्ति—श्रीमान्। बुद्धिः अस्य अस्ति (जिसमें बुद्धि है)—बुद्धिमान्।

अवर्णान्त (अ और आकारान्त) शब्द के परे 'मतुप्' के 'म' के स्थान में 'व' हो जाता है। यथा—ज्ञानम् अस्य अस्ति-ज्ञानवान् (ज्ञानवत्)। धनम् अस्य अस्ति—धनवान्। पुण्यम् अस्य अस्ति-पुण्यवान्। गुणाः सन्ति अस्य-गुणवान्। विद्या अस्ति अस्य-विद्यावान्। दया अस्ति अस्य-दयावान्।*

ये सब शब्द विशेषण हैं।

वतिच् (वत्)।

सादृश्य अर्थ में शब्द के परे वतिच् (वत्) प्रत्यय होता है। यथा-हिमम् इव शीतलम् (हिम-पाला के समान शीतल)-हिमवत् (शीतलम्)। समुद्रः इव गम्भीरः-समुद्रवत्। चन्द्रः इव-चन्द्रवत्। पुत्रम् इव—पुत्रवत् (स्निह्यति-स्नेह करता है।

'वत्' प्रत्ययान्त शब्द अव्यय होते हैं।

---

* 'लक्ष्मी' यद्यपि अवर्णान्त नहीं है तथापि इसमें 'मतुप' न लगकर 'वतुप्' लगता है। यथा-लक्ष्मीः अस्य अस्ति-लक्ष्मीवान्।

इन् ।

"जिसका वा जिसमें हैं" इस अर्थ में शब्द के परे 'इन्' प्रत्यय होता है। यथा—धनम् अस्य अस्ति-धनी (धनिन्)। ज्ञानम् अस्य अस्ति-ज्ञानी। बलम् अस्य अस्ति—बली। गुणाः सन्ति अस्य-गुणी।

ये सब शब्द 'मतुप्' प्रत्ययान्त शब्द के समान विशेषण है।

विन् ।

"जिसका वा जिसमें है" इस अर्थ में 'अस्' भागान्त शब्द तथा स्रज् (माला), माया और मेधा शब्दों के परे 'विन्' प्रत्यय लगता है। यथा-तेजः अस्य अस्ति तेजस्वी (तेजस्विन्) यशः अस्य अस्ति-यशस्वी। माया अस्य अस्ति-मायावी। मेधा अस्य अस्ति-मेधावी।

ये भी 'मतुप्' प्रत्ययान्त के समान विशेषण हैं।

तर (ईयस्)।

दो में से एक का उत्कर्ष (अधिकता) यदि ज्ञात हो तो शब्द (विशेषण) के परे तर और ईयस् प्रत्यय होते हैं। यथा-दोनों में से दृढ़-दृढतरः, द्रढीयान् (द्रढ़ीयस्)। दोनों में से गुरु-गुरुतरः, गरीयान्। दोनों में से लघु-लघुतरः, लघीयान्।*

---

* अँग्रेजी में तर, और ईयस् प्रत्ययान्त शब्द (comparative degree) के विशेषण (adjectives) होते हैं।

तम (इष्ठन्)।

अनेक में से एक का उत्कर्ष बतानेपर शब्द (विशेषण) के परे तम और इष्ठन् प्रत्यय लगते हैं। इष्ठन् का केवल इष्ठ रह जाता है। यथा—अनेक में से दृढ़-दृढ़तमः, द्रढिष्ठः। अनेक में से लघु—लघुतमः, लघिष्ठः।*

मयट्।

विकार, व्याप्ति और अवयव अर्थ में शब्दों के परे मयट् प्रत्यय होता है। मयट् का केवल 'मय' रह जाता है। यथा—स्वर्णस्य विकारः स्वर्णमयः (सोने का बना हुआ)। मृत्तिकायाः विकारः—मृन्मयः। स्त्रीलिंग में स्वर्णमयी और मृन्मयी हो जाता है, यथा—स्वर्णमयी प्रतिमा, मृन्मयी प्रतिमा। रजतविकारः—रजतमयः। लोहविकारः लोहमयः। दारु जिसका अवयव (अङ्ग) है—दारुमयः। दर्भ (कुश) जिसका अवयव है—दर्भमयः। अन्न जिसका अवयव है—अन्नमयः (यज्ञः)। जल द्वारा व्याप्त—जलमयम् (जगत्)। रोग द्वारा व्याप्त—रोगमयम् (शरीरम्)। धूम द्वारा व्याप्त—धूममयम् (गृहम्)।

ये शब्द विशेषण हैं।

था।

प्रकार अर्थ में सर्वनाम शब्दों को तृतीया विभक्ति के स्थान में (था) प्रत्यय होता है। यथा—सर्वेण प्रकारेण—सर्वथा

---

*तम और इष्ठन् प्रत्ययान्त शब्द अँग्रेजी में (Superlative degree) के विशेषण (Adjectives) हैं।

(सब तरहों से)। अन्येन प्रकारेण–अन्यथा (दूसरी तरह से)। उभयेन प्रकारेण–उभयथा। येन प्रकारेण–यथा। तेन प्रकारेण–तथा (उस तरह से)।

'था' प्रत्ययान्त शब्द अव्यय हैं।

दा।

कालवाचक सर्व्वनाम शब्दों की सप्तमी विभक्ति के स्थान में 'दा' प्रत्यय होता है। यथा—एकस्मिन्काले—एकदा। सर्व्वस्मिन्काले—सर्व्वदा। यस्मिन्काले—यदा। तस्मिन्काले—तदा। अन्यस्मिन्काले—अन्यदा।

ये शब्द भी अव्यय हैं।

धा।

प्रकार अर्थ का बोध होने पर संख्यावाचक शब्दों के परे 'धा' प्रत्यय होता है। यथा—एकेनप्रकारेण—एकधा। द्वि (दो) प्रकार से—द्विधा। त्रि (तीन) प्रकार से—त्रिधा इत्यादि।

ये भी अव्यय हैं।

तस्।

पञ्चमी तथा सप्तमी विभक्ति के स्थान में विकल्प से 'तस्' प्रत्यय होता है। यथा— गृहात्–गृहतः (गृहसे)। ग्रामात्—ग्रामतः। पूर्वस्मात्–पूर्व्वतः। प्रथमे—प्रथमतः, अग्रे—अग्रतः (आगे आगे) मध्ये—मध्यतः। पृष्ठे–पृष्ठतः। कस्मात्—कुतः; अस्मात्–इतः; एतस्मात्–अतः।

ये शब्द भी अव्यय हैं।

त्र ।

सर्व्वनाम शब्दों की सप्तमी विभक्ति के स्थान में विकल्प से 'त्र' प्रत्यय होता है। यथा—सर्व्वस्मिन्-सर्व्वत्र (सब जगहों में); एकस्मिन्—एकत्र; अन्यस्मिन्—अन्यत्र; परस्मिन्-परत्र; उभयस्मिन्—उभयत्र; तस्मिन्—तत्र; यस्मिन्—यत्र; कस्मिन्—कुत्र; अस्मिन्—अत्र ।

ये शब्द भी अव्यय हैं।

तन ।

उत्पत्ति या घटना अर्थ में कालवाचक अव्यय शब्दों के परे 'तन' प्रत्यय होता है । यथा अद्य उत्पन्नम्—अद्यतनम् । सायम् उत्पन्नम्—सायन्तनम् । पुरा घटितम्—पुरातनम् । चिरं-घटितम्—चिरन्तनम् । अधुना—अधुनातनम्, इदानीम्—इदानीन्तनम् । तदानीम्—तदानीन्तनम् ।

ये शब्द विशेषण हैं।

चित्, चन ।

विभक्त्यन्त 'किम्' शब्द के परे अनिश्चय अर्थ में चित् और चन प्रत्यय होते हैं। यथा—कः चित् = कश्चित् (कोई), कः + चन = कश्चन (कोई) । किम्—किञ्चित्, किञ्चन । का—काचित्, काचन (कोई स्त्री) । के—केचित्, केचन । केन—केनचित्, केन-चन । कस्मै—कस्मैचित्, कस्मैचन । केषाम्—केषाञ्चित्, केषाञ्चन । कुतः—कुतश्चित्, कुतश्चन ।

सुगमाः पाठाः ।

प्रथमः पाठः ।

अश्वोधावति । गौः शब्दायते । सूर्य्यस्तपति । चन्द्रउदेति । वायुर्वाति। नदी वहति। जलं पतति। पत्रं चलति । पीड़ा वर्द्धते। बालको रोदिति । वृष्टिर्भवति। मेघो गर्जति । पुष्पं शोभते । नटो नृत्यति । गायको गायति । शिशुः क्रीडति । युवा हसति । वृद्धो निद्राति । चौरः पलायते ।

द्वितीयः पाठः ।

स ग्रामं गच्छति । अहं चन्द्रं पश्यामि । पिता पुत्रमाह्वयति । पुत्रः पितरं प्रणमति । गुरुः शिष्यमध्यापयति । शिष्यो गुरुं पृच्छति । शिशुः शय्यायां शेते । राजा प्रजाः पालयति । स इहागमिष्यति । यूयं कुत्र गमिष्यथ । अहं तत्र गमिष्यामि । त्वं कथं रोदिषि । वीजादङ्कुरो जायते । अश्वमारुह्य गच्छति । तन्तु-वायो वस्त्रं वयति । गोपो दुग्धं दोग्धि । गौः शष्पाण्यत्ति । विद्याविनयं ददाति ।

तृतीयः पाठः ।

भृत्यः प्रभोराज्ञां पालयति । प्रभुः भृत्याय वेतनं ददाति । बालको यत्नेन विद्यामर्जयति । स क्लेशंसोढुंशक्नोति । दशरथः पुत्रशोकेन प्राणांस्तत्याज । रामः समुद्रे सेतुंबबन्ध । ग्रीष्मकाले रविरतितीक्ष्णो भवति । शरदि नभोमण्डलं निर्मलं भवति । बोप-देवो मुग्धबोधं व्याकरणं रचितवान् । पक्षिणो रात्रौ वृक्षशाखायां

निवसन्ति। कालिदासो बहूनि काव्यानि रचितवान्। अर्ज्जुनो बाहुबलेन पृथिवीमजयत्। युधिष्ठिरः सदा सत्यमुवाच। उद्योगी पुरुषो लक्ष्मीमुपैति। कापुरुषा एव दैवम् अवलम्बन्ते।

चतुर्थः पाठः।

पाटलिपुत्रे चन्द्रगुप्तो नाम राजा बभूव। चाणक्यश्चन्द्रगुप्तस्य अमात्य आसीत्। परशुरामः पृथिवीं निःक्षत्रियामकरोत्। धृतराष्ट्रो जन्मान्ध आसीत्, तेन राज्यं न प्राप। रामः पितुरादेशात् सीतया लक्ष्मणेन च सह वनं जगाम। भीमो गदाघातेन दुर्य्योधनस्य ऊरू बभञ्ज। चन्द्रं दृष्ट्वा मनसि महान् हर्षो जायते। आकाशे रजन्यामसङ्ख्यानिनक्षत्राणि दृश्यन्ते। रात्रौ प्रभातायां पूर्व्वस्यां दिशि सूर्य्यः प्रकाशते। वसन्तकाले तरुषु लतासु च नव पल्लवानि कुसुमानि जायन्ते।

पञ्चमः पाठः।

यो बाल्ये विद्यां नोपार्जयति स चिराय मूर्खो भवति। यो दयालुर्भवति स दीनेभ्यो धनं ददाति। यः कृपणो भवति स आत्मानमपि वञ्चयते। यो बन्धुवाक्यं न शृणोति स विपदमाप्नोति। पण्डिताः शास्त्रालोचनया कालं यापयन्ति। मूर्खा निद्रया कलहेन च समयमतिवाहयन्ति। यः शठेषु विश्वसिति स आत्मनो मृत्युमाह्वयति। यो विपदि सहायो भवति स एव यथार्थो बन्धुः। यो दुर्ज्जनेन सह मैत्रीं करोति स पदे पदे विपदमाप्नोति। यस्य कुलं शीलं च न ज्ञायते न तस्मिन् सहसा

विश्वसनीयम् । यत्नेन विना किमपि न सिध्यति तस्मात् सर्व्वेषु कार्य्येषु यत्नः करणीयः ।

षष्ठः पाठः ।

सदा सत्यं ब्रूयात् । सर्वे सत्यवादिनमाद्रियन्ते, तस्य वचसि विश्वासं कुर्व्वन्ति च । यो हि मिथ्यावादी भवति न कोऽपि तस्मिन् विश्वसिति ।

सदा प्रियं ब्रूयात् । प्रियवादी सर्व्वस्य प्रियो भवति । विद्याहि परमं धनम् । यस्य विद्याधनमस्ति स सदा सुखेन कालं नयति । श्रमेण यत्नेनच विना विद्या न भवति । तस्मात् विद्यालाभाय श्रमो यत्नश्च विधेयः । विद्यां विना वृथाजीवनम् ।

आलस्यं सर्वेषां दोषाणामाकरः । अलसा विद्यामुपार्ज्जयितुं न शक्नुवन्ति धनं न लभन्ते । अलसानां चिरमेव दुःखम् । तस्मादालस्यं परित्यजेत् ।

मातापितरौ पुत्रार्थं बहून् क्लेशान् सहेते । तयोर्नित्यं प्रियं कुर्य्यात् । कायेन मनसा वाचा तयोर्हितं चिन्तयेत् । तयोः सततं भक्तिमान् भवेत् । प्राणात्ययेऽपि तयोरवमानना न कार्य्या तयोरनुमतिं विना न किञ्चित् कर्म कर्त्तव्यम् ।

सप्तमः पाठः ।

अति भोजनं रोगमूलम् आयुःक्षयकरम् । तस्मादतिभोजनं परिहरेत् ।

योऽस्मानध्यापयति सोऽस्माकं परमोगुरुः। स हि पितृवत् पूजनीयः । विद्यादाता जन्मदाता द्वावेवसमानौ, समं माननीयौ च ।

क्रोधं यत्नेन वर्ज्जयेत्। क्रोधवशो न पुरुषं भाषेत न प्रहरेत् क्रोधोहि महान् शत्रुः ।

सर्व्वं परवशं दुःखम्। सर्व्वमात्मवसं सुखम्। एतदेव सुखदुःखयोर्लक्षणम् ।

परहिंसायां परोपकारे च बुद्धिर्न कार्या । तयोः समं पापं नास्ति।

यथाशक्ति परेषामुपकारं कुर्य्यात्। परोपकारोहि परमो धर्मः।

अहङ्कारं परिहरेत्। नाहङ्कारात् परो रिपुः।

सन्तुष्टस्य सदासुखम्। य आत्मनः सुखमन्विच्छेत् स सन्तोषमवलम्बेत। सन्तोषमूलंहि सुखम्।

परिशिष्ट ।

लृङ्—हेतुहेतुमद्भूत (Subjunctive Mood)

भू (होना, to be)

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	अभविष्यत्	अभविष्यः	अभविष्यम्
द्विवचन	अभविष्यताम्	अभविष्यतम्	अभविष्याव
बहुवचन	अभविष्यन्	अभविष्यत	अभविष्याम

लभ् (पाना, to get)

एकवचन	अलप्स्यत	अलप्स्यथाः	अलप्स्ये
द्विवचन	अलप्स्येताम्	अलप्स्येथाम्	अलप्स्यावहि
बहुवचन	अलप्स्यन्त	अलप्स्यध्वम्	अलप्स्यामहि

अस् (होना, to be)

एकवचन	अभविष्यत्	अभविष्यः	अभविष्यम्
द्विवचन	अभविष्यताम्	अभविष्यतम्	अभविष्याव
बहुवचन	अभविष्यन्	अभविष्यत	अभविष्याम

कृ (करना, to do)

(परस्मैपद)

एकवचन	अकरिष्यत्	अकरिष्यः	अकरिष्यम्
द्विवचन	अकरिष्यताम्	अकरिष्यतम्	अकरिष्याव
बहुवचन	अकरिष्यन्	अकरिष्यत	अकरिष्याम

(आत्मनेपद)

एकवचन	अकरिष्यत	अकरिष्यथाः	अकरिष्ये
द्विवचन	अकरिष्येताम्	अकरिष्येथाम्	अकरिष्यावहि
बहुवचन	अकरिष्यन्त	अकरिष्यध्वम्	अकरिष्यामहि

ज्ञा (जानना, to know)

एकवचन	अज्ञास्यत्	अज्ञास्यः	अज्ञास्यम्
द्विवचन	अज्ञास्यताम्	अज्ञास्यतम्	अज्ञास्याव
बहुवचन	अज्ञास्यन्	अज्ञास्यत	अज्ञास्याम

दा (देना, to give)

(परस्मैपद)

एकवचन	अदास्यत्	अदास्यः	अदास्यम्
द्विवचन	अदास्यताम्	अदास्यतम्	अदास्याव
बहुवचन	अदास्यन्	अदास्यत	अदास्याम

(आत्मनेपद)

एकवचन	अदास्यत	अदास्यथाः	अदास्ये
द्विवचन	अदास्येताम्	अदास्येथाम्	अदास्यावहि
बहुवचन	अदास्यन्त	अदास्यध्वम्	अदास्यामहि
